

हालैण्डमें पचीस दिन

इंग्लैण्ड में पचीस दिन

लेखक

रा० र० खाडिलकर

बनारस

ज्ञानमण्डल लिमिटेड

मूल्य ३)

प्रथम संस्करण, चैत्र कृष्ण १२, २०११

प्रकाशक—ज्ञानमण्डल लिमिटेड, बनारस १

मुद्रक—ओम् प्रकाश कपूर, ज्ञानमण्डल यन्त्रालय, बनारस. ५७०३—११

विषय-सूची

परिशिष्ट

चित्र-सूची

१—डच सरकारका निमन्त्रण

समाचारोंके पीछे मैंने अपने देशमें बहुत-सी और बहुत दूर-दूरकी यात्राएँ की हैं, पर विदेश जानेका अवसर अभीतक नहीं मिला था। (कहनेको सन् १९४५में भारतीय जलसेनाके, जो उस समय दरियामें खसखसके बराबर छोटी-सी थी, एक कार्वेट जहाज 'गोंडवाना'पर बंबईसे ४० मील दक्षिण-पश्चिमतक अरब सागरमें जलसेनाकी फौजी तैयारी और नकली लड़ाई देखने गया था। पर उसे विदेश-यात्राकी संज्ञा देना हास्यास्पद ही समझा जायगा।) हिन्दी पत्रकारिता राष्ट्रभाषाकी पत्रकारिता होनेपर भी अभी इतनी उपेक्षित और औद्योगिक दृष्टिसे हीनावस्थामें है कि किसी हिन्दी पत्रकारके लिए विदेश जानेकी बात सोचना दुस्साहसमात्र होता। इसीलिए १० मार्च (१९५४)को यदि मुझसे कोई कहता कि तुम्हारे लिए इस वर्ष विदेश-यात्राका योग है तो मैं उसकी गणना मूर्खोंमें ही करता, या उसकी बात हँसकर टाल देता। पर मेरे जीवनमें इस वर्ष विदेशयात्रा अवश्य लिखी थी। ११ मार्चको दोपहरके समय दिल्लीसे जब मेरे नाम कार्यालयमें ट्रंक टेलिफोन कॉल आया तो मैंने पहले समझा कि हर बारकी तरह हमारे दिल्लीके संवाददाता चतुर्वेदीजी फोनपर कोई समाचार दे रहे होंगे, पर उधरवाले सज्जनने अंग्रेजीमें जब कहा कि मैं नयी दिल्लीके डच दूतावाससे बोल रहा हूँ और छः भारतीय पत्रकारोंके दलमें एक महीने हालैण्ड-यात्राके लिए चलनेको आपको निमन्त्रण देता हूँ, तो मैं एक क्षण विस्तब्ध रह गया। डच अटैची श्री क्रामर्सने फिर पूछा कि आपकी स्वीकृति है न, तो मुझे कहना पड़ा कि हालैण्ड-यात्राके लिए स्वीकृति इस तरह

टेलिफोनपर निमन्त्रणके साथ ही देना संभव नहीं है, कुछ सोचना पड़ेगा।

दूसरे दिन १२ मार्चको श्री क्रामर्स का बाकायदा निमन्त्रणपत्र भी आ गया। साथमें २५ दिनकी यात्राका पूरा कार्यक्रम था। शनिवार १३ मार्चको 'आज'के संचालकोंसे सलाह-मशविरा करनेके बाद मैंने अपनी स्वीकृतिका तार दिल्ली भेज दिया। इस स्वीकृतिके पहले दो दिनतक मेरे दिमागमें विचारोंकी रस्साकशी बड़ी तेजीसे चल रही थी। विदेशकी यात्रा और खासकर यूरोप-यात्राका आकर्षण सबसे प्रबल था, पर घरपर पत्नीकी स्वाभाविक हिचकिचाहट, विमान-दुर्घटनाओंके रोज-रोज आनेवाले समाचार आदि पैरको पीछे खींच रहे थे। 'साहसे श्री वसति' सोचकर अन्तमें पत्नीने भी स्वीकृति दे दी और मेरी पहली विदेश-यात्राका निश्चय हो गया। (मेरे जीवनके कुछ बड़े-बड़े निश्चय और बड़ी-बड़ी अच्छी-बुरी घटनाएँ शनिवारको और महीनेकी १३-१४ तारीखोंको हुई हैं, इस बातका स्मरण भी मुझे अनायास हो आया।)

दो अप्रैलको भारतसे रवाना होना था, अतः तैयारीके लिए केवल १५ दिन बचे थे। साधारणतः पहली बारके यात्रीके लिए विदेश-यात्राकी तैयारीमें २-३ महीने लग जाते हैं, पर मुझे सारा काम १५ दिनमें निबटाना था। मेरे पत्रकार होने और निमन्त्रण डच सरकारकी ओरसे आनेके कारण काफी सहूलियत हुई और सारी तैयारी मैंने १५ दिनके अन्दर पूरी कर ली।

२—विदेश-यात्राकी तैयारी

विदेश-यात्राकी तैयारीके लिए सबसे पहले अपनी सरकारकी ओरसे पासपोर्ट (पारपत्र) लेनेका काम करना पड़ता है। पासपोर्टके लिए अपनी फोटो चाहिये जो छोटे साइजकी, जिसे पासपोर्ट साइज ही कहते हैं, होती है। फोटोकी ५-६ प्रतियाँ बनवा लेनी चाहिये। पासपोर्टके लिए सबसे पहले अपने जिलेके जिला मजिस्ट्रेटके दफ्तरसे फार्म लेकर भरने पड़ते हैं। किसी मजिस्ट्रेटसे अपनी शिनाख्त करवानी पड़ती है। फार्मके साथ १० रुपया फीस देनी पड़ती है। एक और फार्म १२ रुपयेके सरकारी स्टाम्प पेपरपर भरना पड़ता है। यह रस्मी काररवाई इसलिए सरकार कराती है कि विदेशमें ही यदि किसीकी मृत्यु हो जाय तो उसके अन्तिम संस्कारके लिए धन आदिकी व्यवस्थाकी जिम्मेदारी कोई अपने ऊपर ले ले। जिला मजिस्ट्रेटका दफ्तर ये सब फार्म पुलिसके पास भेजता है। खुफिया पुलिस फिर जाँच करती है और अपनी रिपोर्ट लगाकर वापस जिला मजिस्ट्रेटके दफ्तरमें भेजती है। यहाँसे ये फार्म अपने राज्यकी राजधानीमें सचिवालयके गृहविभागमें जाते हैं। (भारत सरकार यह विचार कर रही है कि पासपोर्ट देनेका काम राज्य सरकारोंसे लेकर केन्द्रके अधीन ही रखा जाय।) वहाँ पासपोर्ट बनता है और जिला मजिस्ट्रेटके पास वापस भेजा जाता है ताकि यात्रीके पास वह भेज दिया जाय। इतनी सब काररवाई यदि दफ्तरके ढंगसे चले तो २-३ महीनेसे कममें पासपोर्ट नहीं बन सकता, इसलिए इस कामको तेजीसे करानेके लिए कई उपाय करने पड़ते हैं। जितना प्रभाव अधिक होगा और प्रत्यक्ष दौड़-धूप अधिक होगी उतनी तेजीसे काम होता है।

इधर पासपोर्टकी व्यवस्था करनी पड़ती है और उधर हैजा, चेचक, टाइफस आदिकी सूइयाँ लेनी पड़ती हैं तथा सूई लगवाने-का सर्टिफिकेट (प्रमाणपत्र) प्राप्त करना पड़ता है। सूई सिविल-सर्जन या बोर्डके स्वास्थ्य अधिकारीके दफ्तरमें लगायी जाती है। ८ दिनके अन्तरसे दो बार ३-४ सूइयाँ लगवानी पड़ती हैं और १०-१२ दिनमें सर्टिफिकेट मिल जाता है।

इसके अलावा इनकम टैक्स अफसरके दफ्तरसे इस बातका सर्टिफिकेट लेना पड़ता है कि आयकरकी रकम बकाया नहीं है।

जिस देशमें जाना हो उस देशके दूतावाससे पासपोर्टपर उस देशकी अनुमति जिसे 'विसा' (अनुवेशपत्र) कहते हैं लिखवानी पड़ती है। 'विसा' के लिए निश्चित फीस भी देनी पड़ती है। एकसे अधिक देशोंमें जाना हो तो उन सब देशोंका नामोल्लेख पासपोर्टपर भी होना चाहिये और उन-उन देशोंके दूतावासोंसे 'विसा' भी ले लेने चाहिये।

पासपोर्ट, हेल्थ सर्टिफिकेट, इनकमटैक्स क्लियरेन्स सर्टि-फिकेट और विसाके बिना विदेशके लिए टिकट नहीं मिलते। जिन देशोंमें जाना हो उन देशोंकी मुद्राएँ अपने पास रखना भी आवश्यक है, नहीं तो पासमें रुपये होनेपर भी उनका मूल्य दूसरे देशमें कागजके टुकड़ेके बराबर रहता है। टामस कुक जैसी यात्रा एजेन्सियाँ रहती हैं जो रुपये लेकर पौंडके चेक देती हैं। ये यात्री-चेक जिन्हें ट्रेवलर्स चेक कहते हैं, आसानीसे चाहे जहाँ भुनाये जा सकते हैं। इस देशसे कोई अधिक सम्पत्ति बाहर ले जाकर न उड़ाये, इसलिए सरकारने ६०० पौंडकी एक मर्यादा रख दी है। इससे अधिक रकम कोई विदेश नहीं ले जा सकता।

इन सब कागजी सर्टिफिकेटोंके बाद टिकटका भी इन्तजाम करना पड़ता है। इसके अलावा सामान और कपड़ोंकी चिन्ता सबसे बड़ी रहती है। यदि हवाई जहाजकी यात्रा हो तो छोटो

यात्रामें ४४ पौंड (२२ सेर) और बड़ी यात्रामें ६६ पौंड (३३ सेर) से अधिक सामान आप नहीं ले जा सकते। अधिक सामानपर महसूल देना पड़ता है जो बहुत अधिक रहता है। यदि विदेशमें आप होटलमें रहनेवाले हों तो बिस्तर और तौलियाकी कहीं भी आवश्यकता नहीं होती। विमान-यात्राके सामानमें बिस्तर न रहनेसे वजनकी आसानी हो जाती है। जिस देशमें जाना हो वहाँके रीतिरिवाज, रस्म और मौसमके अनुकूल कपड़े बनवाने पड़ते हैं। पश्चिमके देशोंमें कपड़ेकी धुलाई बहुत देनी पड़ती है, इसलिए कपड़े बनवानेके समय किसी अनुभवीसे सलाह अवश्य ले लेनी चाहिये। जहाँतक हो सके सूती कपड़े बहुत कम रखने चाहिये क्योंकि पश्चिमके देशोंकी गरमीमें भी अपने यहाँकी दिसम्बर-जनवरीकी ठंढसे अधिक ठंढ रहती है। पश्चिमी देशोंकी यात्राके लिए ओवरकोट जरूरी है। एक अच्छा-सा मफलर भी रखना चाहिये। शर्ट्स यानी कमीजें ऊनी अथवा नाइलनकी ली जा सकती हैं। ऊनी मोजे तथा काले बूट लेने चाहिये। काले जूते दो तरहसे काममें आते हैं। यदि सरकारी समारोहोंमें शेर-वानी, चूड़ीदार पैजामा पहना तो काले बूट जरूरी होते हैं, इस-लिए काले बूट ही लेने चाहिये। पत्रकार अक्सर पोशाकके नियमों-की अवहेलना करते हैं और उनकी अवहेलना चल भी जाती है, फिर भी जैसा देश वैसा वेश अवश्य रहना चाहिये। इससे सद्भाव-वृद्धिमें सहायता मिलती है।

यदि यात्रा विमानसे हो रही है तो सामानका बड़ा बक्स यात्राके बीचमें यात्रीको नहीं मिलता, इसलिए गन्तव्य स्थानपर पहुँचनेके बाद सामान मिलने तककी अपने कपड़े आदिकी सारी व्यवस्था पहलेसे सोच लेनी चाहिये। भारतकी गरमीकी पोशाक पहनकर यूरोपके हवाई अड्डेपर आप उतर नहीं सकते, इसलिए सारी वस्त्र-योजना पहलेसे करनी चाहिये। हवाई यात्रामें एक

छोटा हैण्डबेग मिलता है जिसमें आप सारी आवश्यक चीजें रख सकते हैं। यह बेग आपके साथ रह सकता है।

चूँकि यह मेरी पहली विदेश-यात्रा थी और काशीमें मैंने अनुभवी व्यक्तियोंसे पहलेसे सलाह नहीं ली थी इसलिए मुझे यात्रामें कुछ दिक्कत अवश्य हुई, पर शीघ्र ही साथी पत्रकारोंसे मैंने सब आवश्यक बातें समझ लीं और अपनेको यात्राके लिए सन्नद्ध बना लिया।

३—प्रस्थान

डच सरकारके निमन्त्रणपर हम लोग हालैण्ड जा रहे थे और डच विमान कम्पनी के० एल० एम०ने हमें कलकत्तेसे आम्सटर्डम तक पहुँचा देनेका जिम्मा अपने ऊपर लिया था, इसलिए हम सब लोगोंको कलकत्तेमें एकत्र होना था। महायुद्धके बाद हिंदेशियाके स्वातन्त्र्य-संग्राममें भारतने बहुत सहायता की थी और उस समय भारतसे उड़कर हिन्देशिया फौज ले जानेवाले डच विमानोंपर रोक लगा दी थी। बादमें यह रोक उठा ली गयी, पर के० एल० एम०के विमानोंको भारतमें केवल एक नगर कलकत्तेमें उतरने दिया जाता है और सप्ताहमें उनके विमान केवल तीन बार आते तथा तीन बार जाते समय यहाँ उतरते हैं। के०एल० एम०का विमान पकड़नेके लिए इसी कारण हम सब लोगोंको कलकत्तेमें एकत्र होना पड़ा।

२१ मार्चको तीसरे पहर मैं देहरादून-हावड़ा एक्सप्रेससे बनारससे रवाना हुआ। स्टेशनपर पहुँचानेके लिए कार्यालयके सहयोगी आये थे और उन्होंने बहुत प्रेम एवं शुभकामनाके साथ मुझे विदा किया। दूसरे दिन सबेरे हावड़ा पहुँचा तो स्टेशनपर

देखा कि के० एल० एम०के जनसंपर्क अधिकारी श्री राव वहाँ उपस्थित हैं। मैंने अपने आनेकी ट्रेनकी उनको कोई सूचना नहीं दी थी, पर उन्हें कम्पनीके टेलिप्रिंटरपर या तार टेलिफोनसे दिल्लीसे सन्देश मिल गया था कि मैं उस ट्रेनसे जा रहा हूँ। मैंने 'आज'के अपने कलकत्तेके प्रतिनिधि श्री ज्योतिदास गुप्तको तीन दिन पहले ही पत्रसे सूचना दे दी थी, पर डाक-विभागकी कृपासे मेरा पत्र सम्भवतः उसी समय पहुँचा जब मैं खुद कलकत्ते पहुँच गया और इसलिए स्टेशनपर श्री ज्योति नहीं आ सके थे।

के० एल० एम०ने हम लोगोंके लिए एक दिन ग्रैण्ड होटलमें ठहरनेका इन्तजाम किया था। हमारे और पाँचों साथी भी उसी दिन दिल्लीसे कलकत्ते पहुँच गये। उस दिन मैंने अपना पासपोर्ट, हेल्थ सर्टिफिकेट आदि कागज के० एल० एम०के सिपुर्द कर दिये। उन्होंने टिकट तैयार करनेके साथ-साथ 'विसा' बनवा देनेका भी भार अपने ऊपर ले लिया। कलकत्तेमें के० एल० एम०का दफ्तर ग्रैण्ड होटलके पास ही है। दूसरे दिन २ अप्रैलको सवेरे हम लोग तैयार हो गये और १० बजे के० एल० एम०के दफ्तरमें आ गये। वहाँ सामान आदि तौला गया। हमें हैण्डबेग मिले जिनमें हमने अपना ऊपरी आवश्यक सामान रख लिया। दमदम हवाई अड्डेके लिए रवाना होनेके पहले सामनेकी पानकी दूकानपर जाकर हमने पान खा लिया। दफ्तरकी सारी कारवाई होनेके बाद सबसे विदा लेकर हम लोग बसपर दमदमके लिए रवाना हुए। मुझे पहुँचानेके लिए श्री ज्योतिदास गुप्त दमदम आये थे। हवाई अड्डेपर भी सारी रस्मी कारवाई सुविधापूर्वक हो गयी। एक तो के० एल० एम० कम्पनी अपने यात्रियोंको कोई तकलीफ नहीं होने देती। उसपर भी हम लोग उनके और उनकी सरकारके मेहमान थे। विमानपर जानेकी सूचना मिलते ही हम लोगोंने वहाँ सब लोगोंसे विदा ली। १२-२५ पर हमारे विमानने

जमीन छोड़ी और हमारी विदेश-यात्रा शुरू हो गयी। लम्बी विमान-यात्रामें देश छोड़नेके समय जो-जो अच्छे-बुरे विचार मनमें आ सकते थे, वे सब आये। मातृभूमिको मैंने एक महीनेके लिए नमस्कार किया और नये-नये अनुभवोंके लिए अपना मस्तिष्क तैयार कर लिया।

४—भारतीय पत्रकार-दल

भारतीय पत्रकार-दलमें हमलोग छः सदस्य थे। जब ऐसे पत्रकार-मण्डल बाहर जाते हैं तो एक रिवाज-सा है कि उनमें एक महिला अवश्य रहे, पर हमारा दल इसका अपवाद था। हमारे दलके ये सदस्य थे—

(१) अखिल भारतीय सम्पादक-सम्मेलनके अध्यक्ष और नागपुरके 'हितवाद' के प्रबन्ध-सम्पादक श्री ए० डी० मणि ;

(२) नयी दिल्लीके 'टाइम्स आफ इण्डिया' के तत्स्थानीय सम्पादक श्री डी० आर० मानकेकर ,

(३) लखनऊके 'नेशनल हेरल्ड' के नयी दिल्लीके प्रतिनिधि श्री एस० ए० शास्त्री ;

(४) बनारसके हिन्दी दैनिक 'आज' के सहायक-सम्पादक श्री र० र० खाडिलकर ;

(५) कलकत्ते और इलाहाबादकी 'अमृत बाजार पत्रिका' के नयी दिल्ली स्थित प्रतिनिधि डाक्टर के० एल० श्रीधरानी ; और

(६) भारतीय आकाशवाणीके विदेशी कार्यक्रमोंके सुपरवाइजर डाक्टर नारायण मेनन।

हम लोग सभी ४० और ५० के बीचके करीब-करीब समवयस्क थे। सबसे छोटा मैं था। यद्यपि आधिकारिक रूपसे पत्र-

कार-मण्डलका कोई नेता नहीं था, पर श्री मणिका नाम सदस्य-सूचीमें सर्वप्रथम होने, उनके सम्पादक-सम्मेलनका अध्यक्ष होने और वक्तृत्वकलामें सबसे अच्छे होनेके कारण वे स्वभावतः दलके नेता हो जाते थे और माने भी जाते थे। श्री मणिको हम आधा नागपुरका और आधा दिल्लीका मान सकते हैं इसलिए कह सकते हैं कि पत्रकार-मण्डलमें साढ़े चार या पाँच सदस्य दिल्लीके थे, मैं ही अकेला बाहरका था। श्री मणि सम्पादक-सम्मेलनके अध्यक्ष हैं और श्री मानकेकर सेक्रेटरी जनरल। पकवानमें अचार का सुस्वाद लानेके लिए श्री मणि और श्री श्रीधरानी कभी-कभी दो-दो चोंचें लड़ा लेते थे, पर साधारणतः पत्रकार-दल एक रायसे सारा काम करता था और अपनी सारी यात्रामें उसने हालैण्डके लोगोंपर अच्छा प्रभाव डाला और मैत्री तथा सद्भावका अच्छा वातावरण स्थापित किया। अप्रैलमें हममेंसे दो आदमियोंके जन्म-दिवस पड़ते थे। हालैण्ड जाते समय २ अप्रैलको विमानमें ही मैंने अपनी ४०वीं बरसगाँठ मनायी और ८ अप्रैलको श्री मणिने भी अपनी बरसगाँठ मनायी। उस दिन व्यापार-संघकी ओरसे दावत थी और श्री मणिने अपने पाण्डित्यपूर्ण तथा मनोरंजक भाषणसे उपस्थित लोगोंपर अच्छी छाप डाली।

श्री शास्त्रीको और मुझे छोड़कर पत्रकार-दलके अन्य चारों सदस्य विदेश-यात्राओंके पुराने अखाड़िये थे। श्री श्रीधरानी १२ बरस कोलंबिया, संयुक्तराष्ट्र अमेरिकामें रहे और अमेरिकाके हर छोटे-बड़े होटलका उनसे परिचय था, क्योंकि उस देशभरमें वे भारतके पक्षमें प्रचार करते हुए घूम चुके थे। रेडियोके श्री मेनन युद्धकालके पहले ब्रिटेनकी एडिनबरा यूनिवर्सिटीमें पढ़ रहे थे और महायुद्धकालके ६-७ साल वे बी० बी० सी०में काम करते रहे। श्री मानकेकर युद्ध-संवाददाता और भारतीय सेनाके जनसम्पर्क अधिकारीके रूपमें काफी दुनिया देख चुके हैं

(जापानके भारतीय भूमिपर आक्रमणका प्रथम समाचार आपने ही असोशिएटेड प्रेसके संवाददाताकी हैसियतसे सर्वप्रथम भेजा था। हालमें आप दो बार पीकिंग भी हो आये हैं।) श्री मणि तो सात बार यूरोप और दो बार अमेरिका, संयुक्त राष्ट्रसंघकी यात्रा कर चुके थे। विदेश-यात्राके सब 'गुर' वे जानते हैं। हस्त-सामुद्रिक होनेका उनका 'दावा' विदेश-यात्रामें उनकी बड़ी सहायता करता है।

श्री शास्त्री और मुझे छोड़कर सभी पश्चिमी ढंगकी टाईवाली पोशाक पहनते थे। हम दोनोंकी, बंद गलेका कोट और पतलून-वाली पोशाक थी। हम दोनों पहली बार यूरोप गये थे और दोनों शाकाहारी थे। बाकी सब सर्वभक्षी थे, पर श्री श्रीधरानीको मछलियोंसे बड़ी चिढ़ थी और ड्राई मार्टिनी तथा चिरूटसे बड़ा प्रेम था। भाषावार विभाजनमें मैं और श्री मानकेकर एक तरफ थे तो मणि-शास्त्री-मेनन अपनी तामिलमें 'कुडुगमाटो' कहकर श्रीधरानीको चिढ़ाते थे। वैचित्र्य और वैभिन्यसे पूर्ण होनेपर भी मौजमस्तीमें हमारा दल साथ रहता था और हम छहोंकी यह एक महीनेकी मैत्री बहुत कालतक स्मृतिमें बनी रहेगी।

६—कलकत्तेसे आम्सटर्डमतक

विमान-यात्राका कुतूहल तो सबको होता ही है, पर चूँकि मेरी यह पहली विमान-यात्रा नहीं थी, अतः मेरे लिए उसमें कोई अधिक नयापन नहीं था। श्री श्रीप्रकाशजी जब आसामके राज्य-पाल थे तो मैं डाक्टर केसकरके साथ ९ दिनकी आसामके जंगलों-पहाड़ोंकी यात्राके लिए गया था और उस समय बनारस-पटना, गौहाटी, तेजपुर-डिब्रूगढ़ और वापस कलकत्तेतककी यात्रा विमान

से ही हुई थी। हाँ, इस बारकी यात्राकी तुलनामें वह यात्रा बहुत छोटी अवश्य थी। इस बारकी यात्रामें तो हम एशियासे अफ्रीका और अफ्रीकासे यूरोप जा रहे थे।

अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डोंमें कलकत्तेका दमदम हवाई अड्डा काफी महत्त्वका है। हर ७-८ मिनटपर यहाँ कोई न कोई विमान उतरता या उड़ता दिखाई देगा। पर शिफोल (आम्सटर्डम), लन्दन और न्यूयार्कके हवाई अड्डे और भी बड़े हैं। मैं पहले लिख चुका हूँ कि के० एल० एम०के विमान भारतमें केवल एक दमदमके हवाई अड्डेपर ही उतरते हैं इसलिए हमारी विमान-यात्रा कलकत्ते से ही शुरू हुई। के० एल० एम०के विमान पूर्वमें टोकियो और सिडनीतक जाते हैं। इस कम्पनीने यात्रियोंके लिए जेट विमानोंकी व्यवस्था अभी नहीं की है और ब्रिटिश 'कामेट' विमानोंके दुःखद अनुभवके बाद इसकी आशा निकट भविष्यमें करनी भी नहीं चाहिये। इसके सबसे बड़े यात्री-विमान इस समय लाकहीड कम्पनीके कान्स्टेलेशन और सुपर कान्स्टेलेशन विमान हैं। हम लोग जब गये तब इस कम्पनीमें सुपर कान्स्टेलेशनोंका प्रयोग शुरू नहीं हुआ था, पर अप्रैलके दूसरे सप्ताहमें ये उड़ने लगे। हम जिस विमानमें गये वह कान्स्टेलेशन था। लम्बी यात्राओंके लिए कान्स्टेलेशन बड़ा सुन्दर और आरामदेह माना जाता है। अपनी छ टंकियोंमें ५८०० गैलन पेट्रोल लेकर यह बिना कहीं रुके लगातार २० घंटे तक उड़ता रह सकता है। यह चार इंजिनवाला है। इंजिन राइट साइक्लोन प्रत्येक २५४० अश्व-शक्तिके २० हजार फुटकी ऊँचाईपर ३०० मील प्रति घंटेकी गतिसे विमानको उड़ा ले जाते हैं। ३२से लेकर ६१तक यात्रियोंके बैठने-की व्यवस्था उसमें की जा सकती है। उसकी लम्बाई ९५ फुट होती है।

सुपर कान्स्टेलेशन भी चार इंजिनका ही होता है पर लम्बाई

कांस्टेलेशनसे १८ फुट अधिक, ११३ फुट और चारों इंजिनोंकी अश्वशक्ति १३००० हो सकती है। इसमें १०० आदमी बैठ सकते हैं, ३४० मील फी घण्टेकी गति होती है। यात्रियोंकी सुविधाके खयालसे कभी भी १०० आदमी नहीं बैठाये जाते। (भारतीय एयर लाइन्स एयर इंडिया इंटरनेशनलने भी अब सुपर कान्स्टेलेशन विमान खरीदे हैं।)

हम कान्स्टेलेशनमें ही हालैण्ड गये और लौटे भी कान्स्टेलेशनमें ही। हमारे विमानमें ४० यात्रियोंके बैठनेकी जगह थी। जाते समय विमान भरा हुआ था, पर लौटते समय आधा खाली था। विमानमें बैठनेकी जगहपर बीचमें रास्ता होता है और दोनों तरफ एक-एक कतारमें दो-दो यात्रियोंको बैठनेकी जगहें होती हैं। जाते समय मेरा और श्री मानकेकरका सान्निध्य था। आते समय मैं और श्री मणि एक तरफ और श्री शास्त्री उसी कतारमें दूसरी तरफ थे। पर चूँकि विमान आधा खाली था, हम लोगोंने २-२ सीटों पर एक-एकने कब्जा कर पैर फैला दिये थे। यात्रियोंमें महिलाएँ, बच्चे, गोदके बच्चे भी काफी थे। देखभालके लिए एक स्टीवर्ड था और एक होस्टेस (स्वागतिका) भी। कलकत्तेसे आम्सटर्डम करीब ५००० मील दूर होगा। हवाई किराया पहले दर्जेका एक तरफका २४८०) और वापसी ४४६४) रुपया है। यात्री दर्जेका एक तरफका १८६७) और वापसी ३३६१) है। किराया हमेशा घटता-बढ़ता है। यात्रामें खाने-पीनेका खर्च इसीमें शामिल रहता है। पहले दर्जेके यात्रीको जो खाना-पीना, सिगरेट आदि मिलते हैं वे अच्छे होते हैं। यात्री दर्जेवालोंको मदिरा, पेय और सिगरेट आदि मुफ्त नहीं मिलते, पर वे विमानमें खरीद सकते हैं। बैठनेकी जगह भी कम सुविधावाली रहती है।

हम लोगोंके विमानमें यात्री दर्जेकी व्यवस्था नहीं थी, केवल पहला दर्जा था। विमानमें बैठते ही हम लोगोंको कमरमें पट्टे बाँध

लेनेकी सूचना मिली। विमानका पंखा घूमना शुरू हुआ और हवाई अड्डेकी पट्टीपर विमान दौड़ने लगा। १२-२५ पर हमारे विमानने जमीन छोड़ी और पश्चिमकी ओर वह ऊपर उठने तथा भारतको पूरबसे पश्चिमकी ओर पार करनेके लिए आगे बढ़ने लगा। होस्टेसने पेपरमिंटकी टिकिया खानेको दी और विमान काफी ऊपर जानेके बाद सिगरेट पीनेको दी गयी। इसके बाद धीरे-धीरे खाने-पीनेका दौर शुरू हुआ। यात्रामें सहायक एक सचित्र पुस्तिका दी गयी जिसमें चिट्ठियाँ लिखनेके कागज और रंगीन चित्र छपे पोस्टकार्ड भी थे। हमने अपने रिश्तेदारोंको चिट्ठियाँ लिखीं और कार्ड बच्चोंके लिए भेजे। फाउण्टेनपेन रखनेके लिए कागजका एक कवर भी मिला ताकि ऊँचाईपर जानेपर पेनकी स्याही बाहर छिटककर कपड़े खराब न करे। विमानमें पढ़नेके लिए अखबार और पत्रिकाएँ भी थीं। कुर्सीके हाथमें सिगरेटकी राख फेंकनेके लिए ऐश ट्रे था जिसे आप बाहर खींच सकते हैं। उसीके पास एक बटन भी था। इसको नीचे दबा रखनेसे कुर्सीकी पीठ ढीली हो जाती है और यात्री यदि चाहे तो पीठ पीछे सरकाकर कुर्सीको सोनेके लिए आराम कुर्सी जैसा बना सकता है। बैठनेकी जगहके सामने, सामनेवाली कुर्सीके पीछे, बड़े बड़े जेब रहते हैं। एक जेबमें ट्रे रहती है जिसमें मुड़नेवाले लोहेके छड़ लगे रहते हैं। उन्हें खोलकर कुर्सीके सामने बैठा देनेसे खाने पीनेके लिए ट्रे-टेबुल हो जाती है। एक जेबमें मोटे कागजका लिफाफा रहता है। यदि आपको कै हुई तो आप इस लिफाफेमें कै कर उसे गुसलखानेमें रद्दी फेंकनेकी जगह रख दें। किसी भी हालतमें विमानमें गंदगी नहीं होने देनी चाहिये। बैठनेकी जगहके ऊपर खाने (रैक) रहते हैं जिनमें आप छोटा सामान बेग आदि रख सकते हैं। उसी खानेमें कम्बल और मुलायम छोटे तकिये रखे रहते हैं ताकि रातको सोनेके समय काम आवें। बैठनेकी सीटके

ऊपर एक स्विच रहती है। इसे दबानेसे बत्ती जलती है और स्टीवर्ड, होस्टेसको पता लगता है कि आप उसे बुला रहे हैं। स्विचके पास ही हवाके लिए दो वाल्व वेण्टिलेटर रहते हैं। यदि आपको गरमी मालूम हो तो वाल्व थोड़ा-सा खोल लें, हवा आपको लगने लगेगी। कॉल स्विचके पास एक और स्विच तथा बत्ती रहती है। इस बत्तीका प्रकाश केवल यात्रीकी सीटपर ही पड़ता है और रातको यदि वह कुछ पढ़ना चाहे तो इसे जलाकर पढ़ सकता है। सामने दो घड़ियाँ थीं। एकमें ग्रीनविच टाइम रहता है और एक घड़ीका टाइम वही रखते हैं जहाँ विमान अगली बार रुकनेवाला हो। ग्रीनविच समय और भारतीय समय-में ५॥ घण्टेका अन्तर रहता है। हम दमदममें जब अपने विमान-पर चढ़े तो दाहिनी ओरकी घड़ीमें ग्रीनविच समय ६॥ (प्रातः-कालका) बजा था और बायीं ओरकी घड़ीमें भारतीय समय १२ बजा था। विमान जब शुरू हुआ तो बायीं ओरकी घड़ीमें १ घण्टा समय और घटाकर ११ बजाया गया क्योंकि कलकत्तेसे उड़कर विमान कराचीमें उतरनेवाला था और कराचीका समय भारतीय समयसे एक घण्टा पीछे है। समय और घड़ीका मजा देखनेके लिए मैंने अपनी कलाई घड़ीके समयमें आम्सटर्डममें उतरनेतक कोई परिवर्तन नहीं किया था।

थोड़े ही समयमें हमारा विमान १९-२० हजार फुट ऊपर उठ गया और पश्चिमकी ओर सीधे कराचीके रास्ते चला। गति कोई ३०० मील फी घंटा होगी। आसमान साफ था। घण्टे भरमें विमान राँचीपरसे उड़ने लगा। फिर विन्ध्य प्रदेशमें घुसा। मैंने कल्पना की कि अब विमान मेरे घरके पाससे जा रहा है यद्यपि बनारस कोई १॥-२ सौ मील दाहिनी ओर, उत्तरकी ओर होगा। और घण्टे डेढ़ घण्टेके बाद विमान खजुराहोके मन्दिरोंको पीछे छोड़ने लगा। बायीं तरफ जबलपुर होगा। विमान बढ़ता ही

गया। लंच, खाना-पीना इस बीच जारी था। होस्टेसको जब मालूम हुआ कि आज मेरी जन्मगाँठ है तो उसने एक गिलास मेरी ओर और बढ़ा दिया। चित्तौड़, उदयपुरको पीछे छोड़ता हुआ विमान अब भारतीय सीमा भी छोड़ रहा था। हमने फिर मन-ही-मन मातृभूमिको एक महीनेके लिए नमस्कार किया।

पाँच बजते-बजते (मेरी घड़ीमें ६) कराची आ गया। दोपहरको १२ बजे हम कलकत्तेमें, भारतमें थे और ५ बजे पाकिस्तानकी राजधानी कराची पहुँच गये। हवाई अड्डे पर भारतीय दूतावास (हाई कमीशन) के लोग और ३–४ पत्रकार आये थे। 'न्यूयार्क टाइम्स'के श्री कल्लहन, 'डान'के अशीर और 'इमरोज'के सम्पादक आये थे। दूतावासके डिप्टी हाईकमिश्नर श्री अटल और सूचना सेक्रेटरी श्री शुक्ल थे। विमान कराचीमें १॥ घंटे रुकनेवाला था। के० एल० एम० के रेस्तराँमें जाकर हम लोगोंने जलपान किया। मोटर भेजकर शहरसे एक बार और पान मँगाया, पर वह जमा नहीं। अशीर पहले कई साल तक 'पायोनियर' में थे और उनकी मेरी पुरानी दोस्ती थी। 'इमरोज' पत्र 'आज'की तरह ही स्वतन्त्र नीतिका है। 'इमरोज'का मतलब भी 'आज' होता है। सम्पादक लखनऊके आसपासके ही रहनेवाले थे।

बात-बातमें ही १॥ घंटा बीत गया और हमें विमानमें वापस जानेकी सूचना मिली। अन्धकार हो गया था। ६॥ बजे हमारा विमान कराचीसे उड़कर बगदादके लिए रवाना हो गया। विमानकी बायीं ओरकी घड़ी डेढ़ घंटा और पीछे ढकेल दी गयी यानी उसमें ५ बजा दिये गये क्योंकि उस समय बगदादमें वही टाइम था। खाने-पीनेके बाद हम लोग सो गये। करीब ३॥ घंटेकी उड़ानके बाद बगदाद आया। बगदाद नगरपर जब विमान नीचे उतरनेके लिए चक्कर लगा रहा था तब बिजलीकी शहरभरकी

बत्तियोंका ऐसा दृश्य था मानो हम अलकापुरीपर मँडरा रहे हों। सामन्तवादी राज्योंने भी अपनी राजधानियोंको बिलकुल 'माडर्न' (आधुनिक) बना देनेमें कोई कोरकसर नहीं रखी थी। कराचीसे काहिरातक उर्दूका साम्राज्य था। श्री मणिने बगदादके हवाई अड्डेपर टेलिफोनकी डाइरेक्टरी माँगी तो वह फारसी अरबी लिपि में छपी हुई थी।

इराककी इस राजधानीके हवाई अड्डेपर घण्टे सवा घण्टे ठहरनेके बाद डेढ़ बजे हमारा विमान मिस्रकी राजधानी काहिराकी ओर उड़ा। हमने फिर एक नींद ली। घड़ी भी एक घण्टा और पीछे कर दी गयी। तड़के ४॥ बजेके करीब विमान काहिराके हवाई अड्डेपर उतरा। वहाँ 'टाइम्स आफ इण्डिया के संवाददाता श्री खन्ना (आजकल ये लखनऊमें हैं।) श्री मानकेकरसे मिलने आये थे। मैंने अपनी घड़ी देखी तो उसमें ८ बजे थे। सोचा कि इस समय घरपर बच्चे रेडियो लगाकर सुन रहे होंगे 'हियर इज दी न्यूज रेड बाई...' और शायद हमारे रवाना होनेका या कराचीसे आगे बढ़नेका समाचार दिल्ली रेडियो घरवालोंको देता होगा। खन्नासे मैंने नगीब-नासिरके झगड़ेकी पृष्ठभूमि जाननेकी कोशिश की। नगीबके नामका उच्चारण नगीब ही ठीक है, नजीब नहीं, यह जानकर सन्तोष हुआ।

डेढ़ घण्टे काहिरामें रुककर हमारा विमान अब यूरोपकी ओर चला। पहले बहुत देरतक रेगिस्तान और नील नदी दिखाई देती रही। फिर भूमध्य सागरके नीले जल परसे विमान चला जा रहा था। १० बजेके करीब हमें यूरोपकी भूमिके प्रथम दर्शन हुए। 'बूट'के सदृश आकारवाले सिसली और इटलीको देखते हुए ११॥ के करीब हम रोम पहुँचे। रोम पहुँचते ही हमने यूरोपकी भूमिपर पैर रखा। घण्टे भर इस हवाई अड्डेका हवा, पानी पीकर हम दो घण्टेमें म्युनिख पहुँच गये। इस हवाई अड्डेपर सबसे पहले मुझे



शिफोल हवाई अड्डेपर उतरने पर लिया गया पत्रकारोंका चित्र
(पृ० १७)



यात्रा भरमें ऐसे ही लंच-डिनरोंकी भरमार थी (पृ० २०)

यूरोपकी ठण्ढका अनुभव हुआ। अब हवाई जहाज बादलोंमेंसे जा रहा था। म्युनिखके पहले हम आल्प्सकी हिमाच्छादित चोटियाँ देख चुके थे। हमारी यात्रा शीघ्र समाप्त होनेको थी इस-लिए हम लोगोंने विमानके गुसलखानेमें जाकर बिजलीके रेजरसे दाढी बनायी। बिजलीके शेवरसे दाढी बनानेका पहला पाठ इस प्रकार मैंने विमानमें सीखा। दाढी बनाकर कपड़े वगैरह ठीक कर हम अपने होनेवाले स्वागतके लिए तैयार हो गये। पौने छः बजे आम्सटर्डमका शिफोल हवाई अड्डा आ गया।

विमानसे उतरते ही मैंने पहला काम अपनी घड़ी ठीक करनेका किया। मेरी घड़ीमें उस समय १०। बजे थे। मैं जब शामको विमानसे हालैण्डमें उतर रहा था, उस समय ५००२ मील दूर पूरबमें बनारसके लोग रातके १०। बजे निद्रा देवीकी आरा-धना कर रहे होंगे, यह सोचकर इस गोल दुनियाके अजीब अच-रजका अनुभव मैंने किया।

हवाई अड्डेपर डच परराष्ट्र विभागके लोग, भारतीय राजदूत आदि आये थे। डच पत्रकार भी करीब आधा दर्जन थे। सर-कारी लोगोंमें विदेश विभागके सूचना डिवीजनके श्री फान डर फासेन, सरकारी सूचना विभागके विदेशी यात्री कक्षके श्री टेक्सीरा, के० एल० एम०के जनसम्पर्क अधिकारी श्री फोगेल्स, भारतीय राजदूत श्री बी० एन० चक्रवर्ती और भारतीय दूतवासके सूचना सेक्रेटरी श्री जगमोहन महाजन अड्डेपर आये थे। पत्र-कारोंसे १०-१५ मिनट बातचीत करनेके बाद हम मोटरोंपर ४० मील दूर राजधानी हेगके लिए रवाना हुए।

इस प्रकार लगभग ३४ घण्टोंमें हमारी यह विमान-यात्रा समाप्त हुई और हम सकुशल हालैण्ड पहुँच गये।

६—यूरोपीय जीवनका प्रथमानुभव

परानुभव और प्रत्यक्षानुभवमें बहुत अन्तर रहता है। यूरोपीय जीवनके बारेमें पढ़ा तो मैंने बहुत था, किन्तु प्रत्यक्षानुभवकी बात ही अलग है। हालैण्डके सबसे बड़े शहर और उसकी व्यावसायिक राजधानी आम्सटर्डमके पास शिफोलके हवाई अड्डेपर उतरकर हम लोग सरकारी मोटरोंमें वहाँसे ४० मील दूर शासकीय राजधानी हेगको ओर रवाना हुए। सड़क बिलकुल साफ और चार मोटरें जाने लायक चौड़ी थी। यूरोपमें सड़ककी दाहिनी ओरसे सवारियाँ चलती हैं, इसलिए मोटरकी स्टियरिंग ह्वील बायीं ओर रहती है और ड्राइवर बायीं ओर ही बैठता है। मोटरोंकी गतिपर कोई सरकारी नियन्त्रण नहीं है। मोटरोंमें हार्न और साइकिलोंमें घण्टी अवश्य रहती है, पर वह बजायी कभी नहीं जाती। हमारी मोटर कोई १०५ कीलोमीटर फी घण्टेकी गतिसे दौड़ रही थी* पर न भोंपू बजाना पड़ा, न हार्न और न कोई दुर्घटना हुई। चौमुहानियों या मोड़ोंपर अपनी दाहिनी ओरसे आनेवाली गाड़ियोंको प्राथमिकता देनेका रिवाज है। तेज गाड़ियाँ धीमी गाड़ियोंको दाहिने छोड़कर निकल जाती हैं, पर कहीं कोई न दौड़ होती है और न रगड़ या धक्का। सड़कोंपर धूल बिलकुल न होनेके कारण मोटरें भी बहुत दिनोंतक टिकती हैं, और बहुत साफ रहती हैं। जिस समय हम रवाना हुए, बादल आसमानमें घिरे थे। खेत साफ थे, जिधर देखिये उधर छोटी-छोटी नहरें तथा नालियाँ पानीसे लबालब भरी थीं।

---

* ८ कीलोमीटर = ५ मीलके होता है, इस हिसाबसे मोटरकी गति करीब ६५ मील प्रति घण्टा हुई।

हमारी मोटरें एक घण्टेके अन्दर ही ४० मीलका फासला ते कर राजधानी हेग शहरके घने भागमें स्थित होटल डे सां पहुँच गयीं। इसका वास्तविक नाम होटल डेस-ईंडेस यानी होटल दि इण्डिया है, पर फ्रेंच उच्चारण डे सां होता है इसलिए यह होटल डे सां ही कहलाता है। हेगके दो सर्वोत्तम होटलोंमें यह एक है। विदेशी रईस यहीं अधिक ठहरते हैं। दूसरा बड़ा होटल 'विटेब्रुग' है जो शहरके बाहर एकान्तमें है। आइसनहावर जब हालैण्ड गये थे तो विटेब्रुगमें ही ठहरे थे। हम लोग भी अपनी यात्राके अन्तमें ५-६ दिन होटल 'विटेब्रुग'में ही ठहरे थे। इसके एक तरफ सामने के. एल. एम०का सबसे बड़ा केन्द्रीय कार्यालय है और दाहिनी ओर सड़कपर छोटा नगर मदुरोडैम है जिसका वर्णन बादमें मैं करूँगा।

हालैण्ड पहुँचते ही हमें अपने २५ दिनोंके कार्यक्रम सम्बन्धी छपी एक १६ पृष्ठकी छोटीसी पुस्तिका दी गयी। इसमें हमारे लिए आवश्यक जानकारीकी सारी बातें दी गयी थीं। हमें निमन्त्रण चार संस्थाओंकी ओरसे संयुक्त रूपसे दिया गया था। डच सरकारके परराष्ट्र विभाग, नेदरलैण्ड्स फेडरेशन आफ जर्नलिस्ट्स (पत्रकार संघ), फेडरेशन आफ नेदरलैण्ड्स इंडस्ट्रीज (उद्योग-संघ) और के० एल० एम० रायल डच एयरलाइन्सकी ओरसे हमारे सारे कार्यक्रमका संयुक्त प्रबन्ध किया गया था। पुस्तिकाके दूसरे पृष्ठपर हालैण्डका छोटा-सा नकशा दिया गया था। २५ दिनोंमें हमें सारे देशका दौरा करना था। कार्यक्रमका एक नजरसे अध्ययन करनेपर तुरन्त यह स्पष्ट हो गया कि हमें हालैण्ड बुलानेका मुख्य उद्देश्य वहाँकी औद्योगिक प्रगति दिखाना था। हमारे कार्यक्रममें देश भरके एक दर्जनसे अधिक बड़े बड़े कारखानोंमें जानेकी बात थी। २५ दिनकी अवधिमें करीब एक दर्जन शहरोंमें ठहरनेकी वहाँके होटलोंमें पहलेसे ही व्यवस्था कर ली गयी थी।

शिफोल हवाई अड्डेसे चलकर ४० मील दूर हेगकी बीच बस्तीमें होटल डे बाँ हम लोग करीब ७ बजे (संध्यामें) पहुँचे। ७ बज जानेपर भी उस समय दिन ही था क्योंकि इन दिनों वहाँ सूर्यास्त ८ बजे होता था और हालैण्डमें सूर्यास्तके बाद भी घण्टा पौन घण्टा तक संध्या-प्रकाश बना रहता है। होटलमें मुझे ५७ नम्बरका कमरा मिला और श्री शास्त्रीको ५८ नम्बरका। हम दोनोंके कमरोंका बाथरूम एक ही था। हालैण्ड ठण्ढा मुल्क होनेके कारण वहाँ रोज नहाना कोई आवश्यक बात नहीं मानी जाती। इसलिए सभी होटलोंमें हर कमरेमें बाथरूम होना जरूरी नहीं रहता। छोटी जगहोंके ३-४ होटलोंमें हम लोगोंके कमरोंके साथ बाथरूम और टायलेट रूम नहीं थे। श्री श्रीधरानीको इससे सबसे अधिक परेशानी होती थी और आते समय उन्होंने रेडियोके अपने भाषणमें यह सुझाव दे डाला कि होटलोंमें हर कमरेके साथ बाथरूम रखा जाय !! बड़े होटलोंमें बाथरूम अवश्य रहते हैं। कहीं-कहीं टब न रहनेपर केवल शावर ही रहता है। टबके नये ढंगके पाइपमें ही नल और शावर दोनोंकी व्यवस्था रहती है। वाशबेसिन हर कमरेमें अवश्य रहता है।

बड़े होटलोंके अधिकांश कमरोंमें दो-दो पलंग रहते हैं क्योंकि सामाजिक जीवन अब इस स्तरपर आ गया है कि स्त्रीके बिना पुरुष और पुरुषके बिना स्त्रीका अस्तित्व अधूरा ही समझा जाता है। मोटरोंमें जहाँ देखियेगा पति स्टियरिंग लिये होगा और पत्नी बगलमें बैठी होगी।

होटलके अपने कमरोंका अध्ययन कर और कपड़ा वगैरह बदलकर हम लोग भोजन करनेके डाइनिंग हालमें गये। और साथियोंको तो कोई दिक्कत नहीं थी क्योंकि वे लोग सर्वभक्षी थे पर मुझे और शास्त्रीको अपने लायक निरामिष चीजें छाँटनी थीं। थोड़ी देरकी उधेड़बुनके बाद हमने अपना 'मेनू' चुन लिया

और 'ओवर' (हालैण्डमें हेड वेटरको ओबर कहते हैं) को अपनी बात समझा दी। ब्रेड, टोमैटो सूप, बटर (मक्खन), चीज़ (पनीर), चावल, तरकारियाँ, आलू, बोतलबन्द दही (हालैण्डमें इसे योगर्ट कहते हैं), फल, (फ्रूट सैलाड), आइसक्रीम, काफी —हमारे लिए 'काफी' 'चीजें' थीं।

यूरोपमें प्रचलित साधारण रीति-रिवाजके अनुसार अपनेको रखनेके लिए डाक्टर मेननको हम लोगोंने अपना 'प्रोटोकोल' सलाहकार बना लिया था। उन्होंने मुझे पहला पाठ यह पढ़ाया कि जो कोई भी जब कभी अपना छोटा बड़ा चाहे जैसा काम करे उसे 'थैंक यू' या 'थैंक यू वेरी मच' अवश्य कहना चाहिये और मनसे कहना चाहिये, केवल ऊपरी धन्यवाद नहीं देना चाहिये। पोर्टर दरवाजा खोले, ड्राइवर मोटरका दरवाजा खोले, होटलकी मेड कपड़ा ला दे, हर किसीको स्मित हास्यके साथ 'थैंक यू वेरी मच' (बहुत-बहुत धन्यवाद) अवश्य कहना चाहिये। जिसे 'गुड मार्निंग' या अभिवादन करना हो उसकी ओर अभिवादन तक देखते रहना चाहिये, यह नहीं कि देख रहे हैं दूसरी तरफ और हाथ मिला रहे हैं तीसरी तरफ। यूरोपमें स्त्रियाँ भी पुरुषोंकी बराबरीपर ही नौकरियाँ करती हैं। अभिवादनमें किसी प्रकारका भेदभाव नहीं होना चाहिये। स्त्रियोंके साथ हमेशा दाक्षिण्यका व्यवहार करना चाहिये। भारतमें महिलाओंकी ओर देखना, देखकर हँसना आदि पाप ही समझा जाता है, पर यह बात पश्चिमी देशोंमें नहीं है। वहाँका समाज स्त्री-पुरुष-समन्वयका है इसलिए परस्पर देखना, हँसना, हाथ मिलाना, इन सबमें "यौन" प्रेरणा नहीं रहती और "यौन" प्रेरणाके अभावमें पाप भी नहीं रहता।

अस्तु, उस दिन खाना खाकर हम लोग अपने-अपने कमरोंमें सोने चले गये। दो दिनकी नींद बाकी थी। 'मेड'ने बिस्तर ठीक

कर दिया था। दोनों तरफ बिस्तरके नीचे मोड़कर दबाये गये मुलायम कम्बलोंसे झोलेकी तरह बिस्तर बन जाता है। हम उसी के अन्दर घुस गये। शायद इसीलिए अंग्रेजीमें सोनेके लिए 'गोइङ्ग इंटू दि बेड' (बिस्तरके भीतर जाना) कहा जाता है।

आदतके मुताबिक दूसरे दिन ठीक ४ बजे मेरी नींद खुली। पर वहाँ ७ के पहले शायद कोई नहीं जागता, इसलिए सबेरेकी 'बेड टी' मिलना सम्भव नहीं था। ७के बाद चाय पीकर फिर ८ बजे ब्रेक फास्ट खाना हमने ठीक नहीं समझा इसलिए बेड टी को तो हालैण्डकी यात्रा भर मैंने प्रति दिनके लिए छुट्टी दे दी।

शौच, मुख-मार्जन, दाढ़ी और स्नान कर दिन भरके लिए कपड़े पहनना और इसके बाद पोर्टरके पास जाकर अपनी चिट्ठियाँ देखना, सबेरेका अखबार खरीदना और होटलके रेस्टोराँमें जाकर ब्रेकफास्ट करना, यह हमारा रोजका सबेरेका कार्य-क्रम हो गया। ब्रेकफास्टमें भी रोटी, मक्खन, चीज, आरेंज जूस, पारिज, कार्नफ्लेक, दूध, चाय, काफी आदि अपने लायक निरामिष चीजें यथेष्ट मिल जाती थीं।

ब्रेकफास्टके बाद हम लोग दिन भरके व्यस्त कार्यक्रमके लिए तैयार हो जाते।

होटलोंकी व्यवस्था

होटल-जीवनकी एक दो बातें और यहाँ लिख देना अस्थानीय न होगा। होटलोंमें तौलिया और जूतोंकी पालिशकी कोई चिन्ता नहीं करनी पड़ती, पर कपड़ोंकी धुलाईकी समस्या अवश्य परेशान करनेवाली हो जाती है। कई तौलिये स्नानघरमें या वाश-बेसिनके साथ रखे रहते हैं। जूते भी रातमें सोनेके पहले आप कमरेके बाहर निकालकर रख दीजिये। सबेरे पालिश लगकर आपको वहीं रखे मिल जायँगे। चोरोंका कोई डर नहीं रहता।

कपड़ोंकी समस्या इसलिए रहती है कि अर्जेण्ट धुलाई बहुत ज्यादा, कहीं-कहीं रुपया डेढ़ रुपया फी कपड़ा, देनी पड़ती है। सूट इस्त्री करानेका भी ५-६ रुपया लग जाता है। लोग इसलिए अब नाइ-लनके शर्ट पसंद करने लगे हैं। ऊनी शर्टोंसे भी कुछ-कुछ समस्या हल हो जाती है। मैं बनारसी ठहरा, मुझे साफ-पानीके बिना चैन कहाँ ? मैं रूमाल, मोजा, अंडरवेयर और रातको पहननेकी लुङ्गी आदिमें साबुन लगाकर वाश बेसिनमें धो लेता था और कमरा गरम करनेवाले हीटरपर उसे फैला देता था। खौलते पानी की गरमीसे १०-२० मिनटमें ही कपड़े सूख जाते थे। शर्ट अवश्य अर्जेण्ट धुलाईको देने पड़ते थे। सूट भी १०-५ दिनके बाद 'प्रेस' करा लेना पड़ता था।

विदेशोंमें होटलोंमें ठहरनेका रिवाज अधिक है। कोई भी आदमी अपने देशमें भी एक स्थानसे दूसरे स्थान जायगा तो होटलमें ही ठहरेगा। एक कारण इसका यह है कि मित्रों-रिश्ते-दारोंके मकान इतने छोटे रहते हैं कि एक मेहमान आनेपर भी मेहमान और मेजमान दोनोंको कठिनाई होती है। होटलमें ठहर-नेसे बिस्तर आदि ढोनेका झंझट भी नहीं रहता। होटलमें टेलि-फोन तथा अन्य सुविधाएँ रहती हैं। होटलोंमें ठगे जानेकी भी गुञ्जाइश नहीं रहती क्योंकि हरएक होटलके रेट निश्चित रहते हैं और टूरिस्ट गाइडोंमें दिये रहते हैं। हालैंडके होटलों, बोर्डिङ्ग हाउस आदिके चार वर्ग किये गये हैं—ए, बी, सी, डी। डी वर्ग सबसे अधिक खर्चीला रहता है और ए वर्गके होटल सस्ते। एक दिनके किरायेमें बेड एण्ड ब्रेकफास्ट शामिल रहता है। दोप-हरका लंच और रातका डिनर आप चाहे जहां बाहर ले सकते हैं। दोपहर १२ बजेके पहले होटल खाली कर देना होता है। नहीं तो फिर दूसरे दिनका किराया शुरू हो जाता है।

टूरिस्ट गाइडोंमें होटलों, रेस्टोराँ, बोर्डिंग हाउसों आदिका

पूरा विवरण दिया रहता है। टेलिफोन नम्बर, कितने कमरे, स्नानगृह हैं या नहीं, ए, बी, सी, डी श्रेणी विभाजन, पानी ठंढा-गरम दोनों मिलता है या केवल ठंढा, कमरे गरम रखनेकी सेण्ट्रल हीटिंग है या नहीं, मोटर गराज, बाग, टेरेस, लिफ्ट, बस स्टाप या स्टेशनसे पास है या दूर तथा अन्य विशेषताओं आदिकी जानकारी दी रहती है।

शुचिगृह (टायलेट)

यूरोपीय देशोंके लोग सफाईके बहुत प्रेमी हैं। इस सफाईकी बदौलत उन्होंने संक्रामक रोगोंपर और गन्दगीसे उत्पन्न होनेवाले कीटजन्य रोगोंपर विजय-सी प्राप्त कर ली है। भारतसे जो कोई भी यूरोप जाता है उसका ध्यान सबसे पहले इस ओर अवश्य आकृष्ट होता है कि होटल, दफ्तर, कारखाना आदि चाहे जहाँ आप जाइये, सबसे पहले आपको कुछ दरवाजोंपर 'टायलेट' लिखा हुआ जरूर दिखाई देगा। ये शुचिगृह हैं। हालैण्डमें हम जहाँ जाते थे हर जगह टायलेटें, हेरेन, डेम्स लिखे दरवाजे मिलते थे। हेरेनका मतलब मर्दाना और डेम्सका जनाना। इन शुचिगृहों-में जानेपर वाशबेसिन मिलेंगे, शीशे होंगे और अन्दर कमोड होंगे, 'टायलेट' के अन्दर जाकर आप दस मिनटमें निपटकर, हाथमुँह धोकर, वहाँ रखे टावेलोंसे मुँह पोंछकर, जेबकी कंघीसे बाल सँवारकर तरो-ताजा और आकर्षक होकर बाहर निकलियेगा। वाशबेसिनोंके पाइपोंमें चौबीसो घण्टे गरम, ठण्ढा जल बहता रहेगा। कमोडके फ्लश भरपूर पानीसे भरे रहेंगे। संडास और भरपूर पानी ये हालैण्डवासियोंकी सबसे अधिक आवश्यक चीजें हैं। मकान या कारखानेकी इमारत बनाते समय 'टायलेटों' का इन्तजाम सबसे पहले सोचा जाता है। हमारे देशमें अन्तर्बाह्य शुचिताकी यह आवश्यक चीज सबसे बादमें सोची जाती है

और मकानमें सबसे खराब जगह उसके लिए रखी जाती है। मकानका सबसे गन्दा भाग भी वही रहता है। मुझे यह कहनेमें जरा भी संकोच नहीं है कि हालैण्डके शुचिगृहोंको मैंने भारतीय घरोंके रसोई घरोंसे भी अधिक स्वच्छ पाया।

इन शुचिगृहोंकी बहुलतासे एक और लाभ मैंने देखा। लोगोंको अपने काम-काज और खाने-पीनेमें इस बातका डर कभी नहीं सताता कि हम बाहर जा रहे हैं तो वहाँ हमें 'हाजत' न सताये। एक शहरमें हम लोग खाना खा रहे थे। बीचमें ही किसी कामसे उस शहरके बर्गोमास्टर उठकर चले गये और पाँच मिनटमें फिर आकर बैठ गये और खाना खाने लगे। बादमें मैंने देखा कि वे शुचिगृहमें गये थे। जैसे खाँसी आयी तो खाँस लिया, थूक दिया! छींक आयी! छींक दिया!!

अपने दैनिक जीवनका हम विश्लेषण करें तो हमें मालूम होगा कि इस 'विधि' के डरसे हमें अपने कितने काम नियन्त्रित रखने पड़ते हैं और हमारा कितना समय व्यर्थ चला जाता है।

डच लोग हल्लागुल्लाकी कहीं गुंजाइश ही नहीं रखते। शुचिगृहोंकी आप अन्दरसे सिटकिनी बन्द कर लेंगे तो बाहर दरवाजेपर इन, आउटकी तरह लाल पट्टी आ जायगी जिसपर बेझेट लिखा रहेगा। बेझेट यानी आकुपाइड, कोई अन्दर है। आपको खाँसने खकारनेकी कोई जरूरत नहीं। बाहर निकलनेपर लाल पट्टी हरी हो जायगी। सिटकिनियाँ ही ऐसी बनी रहती हैं।

मकान

ठंढे देशोंमें रहनेके लिए अच्छे पक्के मकानोंकी आवश्यकता सर्वोपरि रहती है। धूप, सूर्यप्रकाश कम मिलनेके कारण सफाईकी ओर भी विशेष ध्यान देना पड़ता है। स्थानसंकोच और पारिवारिक सामाजिक व्यवस्थाके कारण यह मान लिया गया है कि

४ प्राणियोंके परिवारके लिए एक मकान या वासस्थान आवश्यक है। मकान बनानेकी जिम्मेदारी अधिकतर सरकारपर यानी तत्स्थानीय म्युनिसिपल विभागपर रहती है। हाउसिंग सोसाइटियाँ और प्राइवेट कम्पनियाँ भी मकान बनाती हैं। मकान न केवल मजदूरोंके लिए ही, पर मध्यम वर्गवालों और सभी लोगोंके लिए बनाना सरकारी कर्तव्य माना जाता है।

हेगमें जो नये मकान युद्धके बाद बने हैं उनमें ३ या ४ मंजिलके ब्लाक हैं और एक-एक फ्लैट एक-एक परिवारको दिया गया है। किराया करीब ४६ गिल्डर प्रति मास होता है। गैस और बिजलीका अलग लगता है। किरायेमें पानी आ जाता है। एक-एक फ्लैटका औसत घनत्व ८ हजार घनफुट है और नीचेकी जमीन ८०० वर्गफुट है। एक फ्लैटमें १ बैठक (१७० वर्गफुट), बड़ोंके सोनेका एक कमरा (१०५-१३० वर्गफुट) रसोईघर, पासमें गुसलखाना जिसमें बर्तन धोने, कपड़ा धोने, शावर, वाश आदि का काम होता है, सामान रखनेके लिए दीवारके अन्दरकी ही कई आलमारियाँ, एक दो बालकनी जिनमेंसे एकमें कोयला, लकड़ी रखी जा सकती है और नीचे साइकिल तथा अन्य ऐसे ही सामान रखनेके लिए तहखाना रहता है।

वहाँके परिवारोंके रहनेके मकानोंका भी कैसा स्टैण्डर्डाइजेशन हुआ है, यह दिखानेके लिए ही मैंने विस्तारसे यह वर्णन किया है। हर एक ब्लाकके चारों ओर सार्वजनिक बाग होता है ताकि बच्चे वहाँ खेल सकें। घरोंमें तो बच्चोंको खेलनेके लिए जगह रहती ही नहीं है। कई ब्लाकोंकी बस्तीके साथ दूकानें और बाजार रखना पड़ता है। कारखानोंके लिए और दफ्तरोंके लिए अलग जगह रखनी पड़ती है।

दूकानें

वहाँकी दूकानोंका ढंग भी अलग है। दूकान अंदर रहती है

और सड़कपर बाहर 'शो विंडो' रहती है जिसमें दूकानमें मिलने-वाले सब सामानका एक-एक नमूना मय उसकी कीमतके पुर्जेके साथ लगा रहता है। आप पहले बाहरसे अपनी चीज पसंद कर लीजिये और फिर घंटी बजाकर दूकानका दरवाजा अंदरसे खोलवाइये और अन्दर जाइये। इस व्यवस्थासे ठगीकी बिलकुल गुंजाइश नहीं रहती।

डच लोग मुझे अतिथि-प्रिय और समयसूचक जान पड़े। हालैण्डकी पूरी यात्रामें हमें कभी किसीसे राजनीतिक विषयोंपर वादविवाद नहीं करना पड़ा। वे जानते थे कि हिंदेशियाके स्वातन्त्र्य-युद्धमें भारतने डचोंके खिलाफ हिन्देशियाकी बहुत सहायता की थी, पर वे बहुत व्यवहारकुशल और समयकी आवश्यकता पहचाननेवाले हैं। इन पुरानी बातोंका चर्वित-चर्वण करनेसे लाभ की बजाय हानि ही होगी और भारतने जो कुछ किया वह डचों-के प्रति वैरभावसे नहीं, पर समयकी आवश्यकताके कारण किया, यह वे जानते हैं। उन्होंने पिछले साल इन्हीं दिनोंमें पाकिस्तानके छः पत्रकारोंको उसी प्रकार बुलाया था जिस प्रकार इस साल हम भारतीय पत्रकारोंको बुलाया था। पर उन्होंने कभी पाकिस्तानी दल और भारतीय दलके कार्योंकी तुलना नहीं की। कभी-कभी हम लोगोंको ही यह जाननेकी उत्सुकता होती थी कि पाकिस्तानी पत्रकारोंने हालैण्डमें क्या किया। पाकिस्तानी पत्रकार दल 'डान'-के श्री अल्ताफ हुसैनके नेतृत्वमें आया था। उन्होंने भी कभी अपने भाषणमें भारत-पाकिस्तानके मतभेदोंकी चर्चा नहीं की थी जिसका परिणाम कुशल डचोंपर अच्छा ही पड़ा था।

अखबार

हालैण्डके अखबारोंने हमारी यात्राके समाचार और चित्र छापे थे, पर हम लोग अपने अखबारोंमें विदेशी यात्रियोंका जैसा धन-

घोर प्रचार करते हैं वैसा वे नहीं करते। ऐसे समाचार देते समय वे समाचारोंके महत्त्वका अनुपात नहीं भूलते। डच अखबार भारतीय परराष्ट्र नीतिके संबंधमें अमेरिकन और ब्रिटिश [illegible]रोंसे ही अधि[illegible] प्रभावित [illegible]। विदेशोंमें कश्मीरका प्रश्न हमारा कमजोर मुद्दआ हमेशा रहा है क्योंकि पाकिस्तानी दूतावासोंने कश्मीर-काण्डके प्रारम्भसे ही बड़ा प्रभावकारी प्रचार विदेशोंमें किया था। पाकिस्तानी दूतावासोंके लोग जनसम्पर्क अधिक रखते हैं। हालैण्डमें भी हमें इसी बातकी शिकायत मिली।

हालैण्डकी यात्रामें हमारी यात्राके व्यवस्थापकोंने ऐसी व्यवस्था कर दी थी कि रोज ए० एन० पी० समाचार समितिकी न्यूज बुलेटिन हमें मिल जाया करे। इस बुलेटिनमें १०-१२ पृष्ठ सामग्री रहती थी और देशी विदेशी अन्तर्राष्ट्रीय समाचारोंका काफी विस्तृत सार हमें मिल जाता था। भारतीय दूतावास भी रोज १-२ पृष्ठका एक 'इण्डिया टुडे' शीर्षक बुलेटिन निकालता है। इसके भी हमें मिलनेकी व्यवस्था भारतीय दूतावासने कर दी थी।

लन्दनके अंग्रेजी अखबार हवाई जहाजसे १॥-२ घण्टेमें हालैण्ड पहुँच जाते और सबेरे ८ बजेतक हेग या आम्सटर्डममें मिल जाते हैं। 'न्यूयार्क टाइम्स' का यूरोपियन संस्करण आम्सटर्डममें ही छपता है। बहुतसे लोगोंको यह जानकर आश्चर्य होगा कि हालैण्डके अखबार सबेरे नहीं, काशीके अखबारोंकी तरह तीसरे पहर निकलते हैं। रविवारको सब दैनिक छुट्टी मनाते हैं। देश छोटा होने तथा कई धार्मिक-राजनीतिक पार्टियाँ होनेपर भी डच अखबार बड़े सम्पन्न हैं, उनकी ग्राहक संख्या लाखों है। देशका विस्तार अधिक नहीं, फिर भी कुछ अखबार 'लोकल' हैं और कुछ 'नेशनल'। चित्रोंके साप्ताहिक 'डे स्पाइयेल' की ग्राहक-संख्या ६ लाख बतायी जाती है। दैनिकोंमें सबसे अधिक ग्राहक-संख्या लेबर पार्टीके अखबार 'हेट व्रिजे फोक' की—करीब ३

लाख—है। यह आम्सटर्डमसे निकलता है। आम्सटर्डमका हो 'हेट पारूल' स्वतन्त्र समाजवादी, उपनिवेशवाद-विरोधी लगभग २ लाख ग्राहक-संख्याका पत्र है पर भारत-विरोधी भाव रखता है। राटरडमके 'न्यू राटरडमशे कोरण्ट' और हेगके 'हागशे कोरण्ट' ये दोनों पत्र बड़े प्रभावशाली हैं। ग्राहक-संख्या ५०-५० हजारके लगभग होगी।

हम लोगोंने २५ दिनतक हालैण्डमें पूर्व-पश्चिम-दक्षिण-उत्तर इतना चक्कर लगाया, पर हमें कोई भिखारी कहीं भी दिखाई नहीं दिया। भिक्षुक-गृह भी नहीं हैं जहाँ सरकार भिखारियोंको रखती हो। अतिवृद्ध स्त्री-पुरुषोंके लिए जगह-जगह सरकारी 'आम्स हाउसेस' बने हैं। पर भिखारियोंकी कोई समस्या नहीं है।

जहाँ-जहाँ हम गये, पुराने कपड़े पहने लोग बहुत कम नजर आये। कारखानोंमें कुछ मजदूर अवश्य पुराने जूते-कपड़े पहने थे, पर इनकी संख्या भी बहुत कम थी। जहाँ-जहाँ बच्चे नजर आते थे सब नये और रंगबिरंगे ऊनी स्वेटर तथा अन्य ऊनी कपड़े पहने देख पड़ते थे। बच्चोंमें दो खेल बहुत प्रचलित नजर आये। एक तो बैलेन्स सिखानेवाली छोटी साइकिल और दूसरे पैर उछाल-उछालकर डोरी गोल घुमानेका खेल। कुछ बच्चे पहियेदार जूते पहनकर स्केटिंग-स्काइंगकी प्रैक्टिस सड़कोंपर करते भी नजर आते थे।

अधिक ठंढके कारण कोई खुले बदन नहीं रह सकता। खुले बदन रहना अशिष्टता-सूचक भी समझा जाता है। होटलमें कमरेके अन्दर दरवाजा बन्द कर आप चाहे जो करिये, पर दरवाजेके बाहर बिना पूरा कपड़ा पहने नहीं जा सकते।

हालैण्डकी गृहिणियाँ अपनी चीजें और अपने घर चमाचम रखना पसन्द करती हैं। दोपहरको फुरसतके समय वे बाल्टी कपड़ा लेकर घरके शीशे साफ करती हुई जहाँ-तहाँ दिखाई देंगी।

लंच और डिनर

हालैण्डकी हमारी यात्रामें लंचों और डिनरोंकी तो भरमार थी। इन भोजोंके सिलसिलेमें दो-तीन बातें खास तौरसे ध्यानमें रखने लायक थीं। इन अवसरोंपर भाषण अवश्य होते थे। मेजमानों और मेहमानोंको अपनी-अपनी बातें कहनेका अवसर यहीं मिलता था। भोजोंके अवसरपर कुर्सियोंपर बैठनेका यह क्रम रखा जाता था कि एक कुर्सीपर एक भारतीय पत्रकार बैठे और दूसरीपर कोई डच व्यक्ति। इस प्रकार दो डच व्यक्तियोंके बीच एक भारतीय और दो भारतीयोंके बीच एक डच व्यक्ति हो जाता था। इससे वार्तालापमें आसानी होती थी। कुर्सियोंपर बैठनेका क्रम पहलेसे ही निश्चित कर लिया जाता है और कहीं-कहीं उसका छपा नकशा भी तैयार कर लेते हैं। बिना बुलाये आनेवाले आगंतुकोंके लिए यहाँ कोई गुंजाइश नहीं रहती। बड़े स्वागत समारोहोंमें हरएकका नाम टाइपकर उसका छोटासा कार्ड पिनसे कोटपर लगा देते हैं ताकि हम जिनसे बात कर रहे हैं उनका नाम हमें बिना पूछे मालूम हो जाय। स्वागत समारोहोंमें शामिल होनेवालोंकी सूची तैयार रहती थी ताकि जो देखना-पढ़ना चाहे उसकी एक प्रति ले सके।

प्रथम दर्शनमें हाथ मिलाते समय सब लोग हाथ मिलानेके साथ अपना नाम भी बताते हैं। इससे भी परिचय करानेआदिका झंझट और हल्लागुल्ला नहीं होता। भोजके समय एकके बाद दूसरी प्लेट आनेमें कुछ विलम्ब लगाया जाता है ताकि आरामके साथ खाना हो सके। भोजनके समयके छुरी-काँटा रखने आदिके नियम होते हैं, ये सब पहले किसी जानकारसे अवश्य समझ लेने चाहिये क्योंकि जहाँ जैसे रीतिरिवाज होते हैं वहाँ उनका पालन अवश्य करना चाहिये। जानकारी न होनेसे फजीहत हो सकती

है। खाना खतम होनेपर छुरी और काँटा तश्तरीमें रखनेका पश्चिममें एक खास ढंग होता है। यदि आपने उस ढंगसे प्लेटका सामान खतम होनेके पहले ही छुरी-काँटा रख दिया तो परोसनेवाला आपकी तश्तरी खाना खतम होनेके पहले ही यह समझकर कि आप खा चुके उठा ले जायगा। प्लेट खतम होनेके बाद भी यदि आपने छुरी-काँटा खतम होनेके तरीकेसे नहीं रखा तो वेटर आपकी तश्तरी उठायेगा ही नहीं। खाते-खाते किसीसे बातचीत कर रहे हों तो हाथका छुरी-काँटा-चम्मच नीचे रखना चाहिये, हाथमें ये चीजें लेकर कभी बातचीत नहीं करनी चाहिये। प्यालेके अन्दर चम्मच रखकर कभी प्यालेसे चाय या अन्य पेय नहीं पीना चाहिये, चम्मच नीचे तश्तरीमें रख देना चाहिये। चाय पीते समय मुँहसे चायको खींचनेकी आवाज नहीं होने देनी चाहिये, धीरेसे घूँट लेनी चाहिये।

७—हालैण्डका अल्प परिचय

हालैण्डका वास्तविक नाम नेदरलैण्ड है, हालैण्ड तो उसके केवल दो प्रदेशोंका नाम है। नेदरका अर्थ निचला होता है। समुद्रकी सतहसे नीचा होनेके कारण इसका नाम नेदरलैण्डस् या लो लैण्ड्स पड़ा। आधा हालैण्ड समुद्रकी सतहसे नीचा है और बांधोंके कारण बचा हुआ है। जो भाग समुद्रकी सतहसे ऊँचा है वह भी सपाट है। हालैण्डकी सबसे ऊँची भूमि १०५२ फुट समुद्रकी सतहसे ऊँची है। यही यहाँका पहाड़ समझिये। यह हालैण्ड, बेल्जियम और जर्मनीकी सीमाके पास हालैण्डके धुर दक्षिणमें है। वाल्सेरबर्गकी इसी छोटी-सी पहाड़ीपर होटल बनाकर हालैण्डवाले शैलवासका आनन्द लेते हैं !! सबसे नीची भूमि

समुद्रकी सतहसे २० फुट नीचे है। शिफोलका सारा हवाई अड्डा समुद्रकी सतहसे १३ फुट नीचे है।



छोटे-से हालैण्डका क्षेत्रफल १३,५१४ वर्गमील, बनारस और गोरखपुर डिवीजनोंके बराबर या मिर्जापुर जैसे ३-४ जिलोंके बराबर है। इसके ग्यारह प्रांत किये गये हैं—ग्रोनिङ्गेन, फ्रीज-

लैण्ड, ड्रेण्ट, ओवरआइसेल, गेल्डरलैण्ड, यूट्रेक्ट, उत्तर हालैण्ड, दक्षिण हालैण्ड, जीलैण्ड, उत्तर ब्राबैण्ट और लिम्बर्ग। साल भरमें वर्षा कहीं भी ३० इंचसे अधिक नहीं होती. यद्यपि साल भरमें ३०-४० ही दिन ऐसे होते हैं जब सूर्यके दर्शन दिन भर होते हों। हमेशा बादल छाये रहते हैं और क्षण-क्षणभरमें मौसम बदलता रहता है। जो भाग समुद्रकी सतहके नीचे हैं वहाँसे बरसातका पानी निकालनेके लिए पुराने जमानेमें पवनचक्कियाँ काममें लायी जाती थीं। अब यान्त्रिक पम्पोंसे वहाँका पानी निकालकर समुद्र-में फेंका जाता है। कहीं-कहीं ऐसे दृश्य दिखाई देते हैं कि सड़क नीचे है और बगलके बाँधके उस पार ऊपर पानी है जिसपर जहाज चलते हैं और जो सड़कपर चलनेवाली मोटरसे अधिक ऊँचाईपर चलते नजर आते हैं। पानी हटाकर जो निचली जमीन खेती लायक बनायी जाती है उसे पोल्डर कहते हैं। पोल्डरोंकी इंजीनियरीमें डच लोग माहिर समझे जाते हैं। यूरोप भरमें पचासों पोल्डर डचों द्वारा उबारे गये हैं। भारतमें भी कलकत्तेके पासका खारे पानीका दलदल साफ करनेके लिए भारतीय राज-दूत श्री चक्रवर्तीके सुझावपर डच इंजीनियर भारत आये हैं। जाइडरजीमेंसे जो नार्थ-ईस्टर्न पोल्डर निकाला गया वह हालैण्ड का सबसे बड़ा १ लाख २० हजार एकड़ क्षेत्रफलका पोल्डर है। यह १९४२में निर्जल किया गया। जाइडरजीमें ही दो और पोल्डर साउथ-ईस्ट और साउथ-वेस्ट साफ किये जा रहे हैं। ये और भी बड़े हैं। साउथ-वेस्ट १ लाख ४० हजार एकड़ और साउथ-ईस्ट २ लाख ३८ हजार एकड़का होगा। आइसेल झील पूरी साफ होने पर ८-९ सौ वर्गमीलका पूरा एक प्रान्त ही नया बन जायगा।

हालैण्डकी जनसंख्या १ करोड़से ऊपर हो गयी है। प्रति वर्ग-मील आबादी ८०३ हुई जो दुनियाके और सब देशोंसे अधिक घनी है। दक्षिण हालैण्ड प्रदेशमें इतनी घनी बस्ती है कि प्रति

वर्गमील आबादी २१९० पड़ जाती है। हालैण्डके अधिक लोग [illegible] धार्मिक विश्वासके होनेके कारण सन्तान-निरोधमें विश्वास नहीं रखते। सरकार [illegible] प्रत्येक सन्[illegible] [illegible] भत्ता देकर [illegible]नसं[illegible] [illegible]ानेमें सहायता ही देती है। जन-संख्या प्रति हजार २२·३ और मृत्यु-संख्या प्रति हजार ७·६ होनेके कारण हर साल डेढ़ लाख आबादी बढ़ती जा रही है। इस बढ़ती हुई आबादीको खपानेके दो उपाय हैं। एक तो देशमें नये-नये उद्योग-धन्धे तेजीसे खोले जा रहे हैं। आबादीमेंसे काम करनेवाले लोगोंका ४०-४५ प्रतिशत इस समय कारखानोंमें लगा हुआ है। दूसरे, प्रति वर्ष ४०-५० हजार डच प्रजा आस्ट्रेलिया, कनाडा और न्यूजीलैण्डमें बसनेके लिए भेजी जा रही है।

हालैण्डमें १ लाखसे अधिक आबादीके ११ शहर हैं जिनमें सब मिलाकर ३३ लाख आदमी रहते हैं। इस प्रकार एक तिहाई प्रजा केवल ११ शहरोंमें बसी है। बड़े शहर अधिकतर देशके पश्चिमी भागमें ही हैं। देशकी ८० प्रतिशत जनता नगरोंमें ही रहती है। (भारतसे ठीक उलटा !)

हालैण्डमें निरक्षर आदमी कोई नहीं मिलेगा। ६ से १५ वर्षकी उम्रतक शिक्षा अनिवार्य है। प्रारम्भिक स्कूलोंमेंसे ४० प्रतिशत छात्र अपनी शिक्षा वहीं समाप्त करते हैं। टेकनिकल और कृषि स्कूल सैकड़ों हैं। युनिवर्सिटियाँ केवल ६ और बड़े कालेज ४ हैं। आम्सटर्डम, लायडन, यूट्रेक्ट, ग्रोनिञ्जेन और निजमेजेन शहरोंमें विश्वविद्यालय हैं। हेग या राटरडममें कोई युनिवर्सिटी नहीं है, पर आम्सटर्डममें २ युनिवर्सिटियाँ हैं! टिलबर्ग और राटरडममें स्कूल आफ इकनामिक्स, वागेनिंजेनमें कृषि कालेज और डेल्फ्टमें टेकनिकल कालेज-युनिवर्सिटियोंके बराबर ही हैं।

ब्रिटेनकी तरह नेदरलैण्डमें भी राजतन्त्र और पार्लमेण्टरी डिमोक्रेसी है। पार्लमेण्टको स्टेट्स जनरल कहते हैं। इसके दो

सदन हैं। मन्त्रिमण्डल पार्लमेण्टके प्रति उत्तरदायी रहता है। उच्च सदनका निर्वाचन अप्रत्यक्ष प्रादेशिक कौंसिलों (स्टेट्स) से प्रपोर्शनल रिप्रेजेण्टेशन (आनुपातिक प्रतिनिधित्व) के आधारपर होता है। उच्च सदनमें ५० तथा साधारण सभामें १०० सदस्य होते हैं और इनका चुनाव हर चार सालपर बालिग मताधिकारके आधारपर होता है। २३ सालके ऊपरके सब स्त्री-पुरुष वोट दे सकते हैं और ३० सालके ऊपरके लोग पार्लमेण्टके लिए खड़े हो सकते हैं। चुनाव निर्वाचन-क्षेत्रोंके आधारपर नहीं होते। राजनीतिक पार्टियोंके नामपर वोट पड़ते हैं और देशभरमें जिस अनुपातसे वोट मिलते हैं उसी अनुपातसे पार्टियोंको सीटें मिल जाती हैं।

हालैण्डकी राजनीतिक पार्टियोंमें एक विशेषता यह है कि इनमेंसे अधिकतर धर्म-सम्प्रदायके आधारपर बनी हैं। फिर भी आपसमें इनमें साम्प्रदायिक दंगे कभी नहीं होते। १९५४ में पार्लमेण्टमें पार्टियोंकी स्थिति इस प्रकार थी—

	लोकसभा	राज्य-परिषद्
कैथलिक पीपुल्स पार्टी	३०	१७
लेबर पार्टी	३०	१४
एण्टी रिवोल्यूशनरी पार्टी	१२	७
क्रिश्चियन हिस्टारिकल यूनियन	९	६
फ्रीडम एण्ड डिमोक्रेसी लीग	९	४
कम्युनिस्ट पार्टी	६	२
पोलिटिकल रिफार्म्ड पार्टी	२	—
कैथलिक नेशनल पार्टी	२	—
	१००	५०

हम जब हालैण्डका दौरा कर रहे थे तभी २१ अप्रैलको प्रान्तीय कौंसिलोंका चुनाव हुआ। यह इतना शान्तिपूर्ण था कि

केवल अखबार पढ़नेसे ही मालूम हुआ कि चुनाव हुआ। वोट गिननेका काम इतनी तेजीसे होता है कि शाम ५॥ से रात ११तक ५॥ घण्टेके अन्दर ही देशभरके चुनावका पूरा फल मालूम हो गया। १९५२ के लोक-सभाके चुनावमें लेबर पार्टी और कैथलिक पीपुल्स पार्टीको बराबर-बराबर वोट और बराबर-बराबर जगहें मिली थीं, पर इस चुनावसे स्पष्ट हो गया कि कैथलिक पार्टीका जोर बढ़ रहा है। ५ लाख वोटोंमेंसे ३१·५ प्रतिशत (१६, ८०, ७८८) कैथलिक पार्टीको और २९·४ प्रतिशत (१५, ६४, ६४४) सोशलिस्टोंको मिले। दो साल पहले लोकसभाके चुनावमें कैथ-लिक पार्टीको २८·७ प्रतिशत ही वोट मिले थे। दो साल बाद लोकसभाका फिर चुनाव होगा। उसमें स्पष्ट हो जायगा कि कैथलिकोंकी यह वृद्धि जारी रहेगी या रुक जायगी।

हालैण्डमें वोट डालना अनिवार्य है।

१९४७ की जनगणनाके अनुसार ४४ प्रतिशत जनता प्रोटे-स्टेण्ट, ३८·५ प्रतिशत रोमन कैथलिक, १७ प्रतिशत नान डिनामि-नेशनल और ·५ प्रतिशत यहूदी है। हालके चुनावोंसे मालूम होता है कि रोमन कैथलिक लोगोंकी संख्या बढ़ती जा रही है।

हम जब हालैण्डका दौरा कर रहे थे तभी ११ अप्रैलको पड़ोसी देश बेलजियममें भी युद्धोत्तर चौथा आम चुनाव हुआ। उस देशमें कैथलिक पार्टीका जोर घटा है और धर्मनिरपेक्ष सोश-लिस्ट पार्टीका बढ़ा है। हालैण्डके समाचारपत्र पड़ोसी देशके चुनावमें काफी दिलचस्पी लेते हैं। बादमें बेलजियममें कैथलिक सरकारकी जगह नयी सोशलिस्ट-लिबरलोंकी संयुक्त सरकार बनी। हालैण्ड सरकार भी संयुक्तदलीय है। झगड़ेसे बचनेके लिए वहाँ दो दो परराष्ट्र मन्त्री हैं—एक कैथलिक और दूसरा निर्दलीय।

किसी भी देशकी जनताके राष्ट्रीय स्वभावका निर्माण उस

देशकी भौतिक परिस्थितियोंके कारण ही होता है। संस्कृति, रहन-सहनका ढंग, रीतिरिवाज भी भौतिक परिस्थितियोंके कारण ही रूप धारण करते जाते हैं। हालैण्डकी जनतामें मैंने झगड़ालूपनका बिलकुल अभाव देखा। जनता बड़ी शांतिप्रिय है। अतिरेकपूर्ण राष्ट्रीय अहंकार बहुतसे संघर्षोंको पैदा करता है। हालैण्डमें इस राष्ट्रीय अतिरेकका भी अभाव है। इसका मुख्य कारण हालैण्डका इतिहास और उसकी भौगोलिक स्थिति ही है।

वहाँ एक कहावत प्रचलित है कि सारी दुनियाको ईश्वरने बनाया, पर हालैण्डको मनुष्योंने बनाया। यह कहावत बिलकुल ठीक है। आज जिस भूमिको हम हालैण्ड कहते हैं वह हजारों वर्ष पूर्व भूमि थी ही नहीं। यूरोपकी तीन बड़ी नदियाँ राइन, म्यूज और शेल्ड उत्तर-पश्चिमकी ओर बहती हुई उत्तर सागरमें मिलती हैं। इनकी मिट्टीसे जो धरती बनती गयी, उसीसे हालैण्ड का निर्माण हुआ। जिसकी मिट्टी ही अंतर्राष्ट्रीय नदियोंके बहावमें आयी मृत्तिकासे बनी हो उस देशके लोग संकुचित राष्ट्रीयताके समर्थक कभी नहीं हो सकते। आज भी डच जनतामें अपने शत्रु जर्मनोंके प्रति भी कोई कटुतापूर्ण भाव नहीं है, यद्यपि ऐतिहासिक कारणोंसे जर्मनीके प्रति हालैण्डको राजनीतिक दुराव दिखलाना ही पड़ता है। वस्तुतः इन नदियोंके कारण जर्मनी और हालैण्डके निकट सम्बन्ध कभी भी टूट नहीं सकते। प्रथम महायुद्धमें हालैण्डकी तटस्थताकी रक्षा जर्मनीने की थी।

यूरोपकी ये तीन नदियाँ नयी नयी मिट्टी डालकर यह प्रदेश बनाने लगीं। यूरोपके अन्दरूनी भागमें राजनीतिक उथल-पुथलके फलस्वरूप वहाँकी मनुष्य बस्तियाँ पूर्वमें जर्मनीसे और दक्षिणमें गाल प्रदेशसे अपनी-अपनी सभ्यताको लेकर एकके बाद एक पश्चिमोत्तर दिशामें हालैण्डमें आती रहीं। भारतीय संस्कृतिकी तरह आजकी डच संस्कृति भी कई सभ्यताओंके एक दूसरेमें

आत्मसात होनेके फलस्वरूप बनी है। हालैण्डमें आज भी राज-नीतिक सहिष्णुता यूरोपके सब देशोंसे अधिक है।

नदियोंकी मिट्टीकी भूमिके अलावा डच लोगोंने समुद्रको पीछे हटाकर भी नयी-नयी भूमि बनाना शुरू किया। आजके हालैण्डकी एक चौथाईसे अधिक भूमि पिछले एक सौ वर्षोंमें समुद्रको हटाकर निकाली गयी भूमि है।

यूरोपकी इन तीन नदियों और सागर तटके कारण डच निवासी सागर-प्रेमी, नौकानयन-प्रेमी, और यातायात-व्यवस्था-विशेषज्ञ हुए। आज भी जहाजरानी और उड्डयनके क्षेत्रोंमें हालैण्ड इसीलिए यूरोपका अगुआ बना हुआ है। यूरोपकी इन तीन नदियोंके तटोंपर वाणिज्य-व्यवसाय फलता-फूलता गया। व्यापारी, हस्तकला-कुशल घरेलू उद्योग-धन्धोंवाला मध्यवर्ग एक तरफ किसानों और दूसरी तरफ सरदारों और पादरियोंके बीच बढ़ने लगा। जर्मनी, फ्रांस और ब्रिटेन इन तीन बड़े देशोंके बीच व्यापारका केन्द्र हालैण्ड हो गया।

गल्फ स्ट्रीम नामकी महासागरीय गरम धारा हालैण्डके तटके पाससे ही जाती है, इसलिए हालैण्डका तट बारहो महीने हिम-रहित रहता है। व्यापारके लिए यह एक भारी आकर्षण होता है कि बन्दरगाह और यातायातके साधन सालमें कभी भी बरफ जम जानेके कारण बन्द न हों। हालैण्डके पश्चिमी भागमें इस व्यापार-वृद्धिके कारण नगर बसने लगे। आज भी हालैण्डके समस्त बड़े नगर पश्चिमी भागमें ही हैं। एक लाखसे ऊपर आबा-दीवाले हालैण्डके ग्यारहो नगर देशके पश्चिम भागमें ही अवस्थित हैं। यूरोपके सबसे बड़े व्यापार-केन्द्रका बन्दरगाह और सबसे बड़ा हवाई अड्डा पश्चिममें हैं। राटरडम और आम्सटर्डम पश्चिमी हालैण्डमें ही हैं।

हालैण्डवासियोंका सागर-प्रेम और व्यापार-प्रेम उन्हें पूर्वमें

लङ्का, भारत, चीन और जापान तक ले गया। पश्चिममें ब्राजील और दक्षिण अमेरिका तथा उत्तर अमेरिकामें बस्तियाँ कायम की गयीं। अंग्रेजोंको न्यू आम्सटर्डम देकर बदलेमें सुरीनाम लिया गया। न्यू आम्सटर्डम ही आजका न्यूयार्क है। मत्स्योद्योग उन्हें नार्वे स्पिट्ज़बर्गेन तक ले गया। उन शताब्दियोंमें आम्सटर्डम यूरोपको या दुनियाभरकी आर्थिक राजधानी बना था।

समुद्र-तटवर्ती देश होनेके कारण हालैण्डपर पवनकी बड़ी कृपा रही है। इस पवनका उपयोग डच लोगोंने पवन चक्कियाँ बनाकर भूमिसे पानी हटानेमें तथा गल्ला पीसनेमें खूब किया है। समुद्र और पवन इन दोनों महती शक्तियोंसे भिड़ने और उनसे लाभ उठानेमें हालैण्डवाले बराबर व्यस्त रहे हैं।

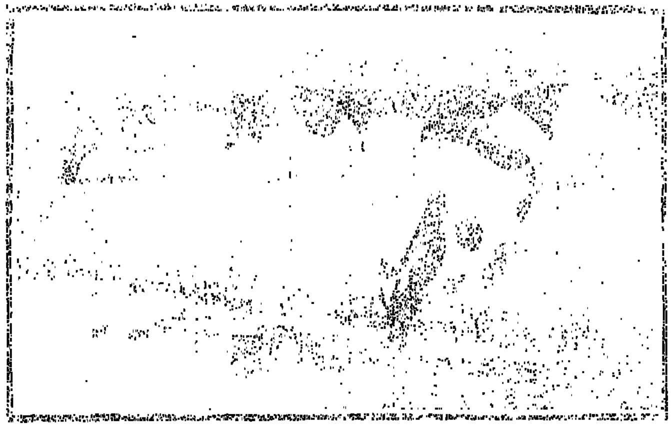
डच लोगोंने अपने प्राकृतिक संघर्षके कठोर इतिहाससे सह-योगका महत्त्व बहुत अच्छी तरह समझ लिया है। कारखानेदार आपसमें सहयोग करते हैं, कारखानेदारमें और सरकारमें भी पूरा सहयोग है तथा कारखानदारों और मजदूरोंके बीच भी पूरा सह-योग है। हड़तालें बहुत कम सुननेमें आती हैं। सब कारखानोंमें मजदूर-समितियाँ हैं और झगड़े वहीं तै हो जाते हैं। बीमारी और वृद्धावस्थाके बीमेका लाभ प्रायः सभीको मिलता है।

बाहरी दुनिया हालैण्डको कृषिप्रधान देश समझती है, पर वास्तवमें ऐसी बात नहीं है। काम करने लायक प्रजाका ४० प्रति शत उद्योग-धंधोंमें लगा है। कृषि-कार्य इससे आधे केवल २० प्रतिशत लोग करते हैं। यातायातकी दृष्टिसे दुनियाकी सबसे व्यस्त नदी राइन और सबसे व्यस्त समुद्र उत्तर सागर यूरोपके केवल एक देश हालैण्डको ही प्राप्य हैं, इसलिए वाणिज्य और यातायातमें उतने ही लोग लगे हैं जितने कृषिकार्यमें लगे हैं, पर हालैण्डकी मूल राष्ट्रीय समस्या भूमिप्रधान होनेके कारण उसके बहुतसे उद्योग और वाणिज्य-व्यवसाय कृषिसे सम्बन्धित हैं,

इसलिए कृषिको यहाँ उतना ही महत्त्व दिया जाता है जितना उद्योगोंको और इसी कारण बाहरी दुनियाको हालैण्डके खेतों, पवन चक्कियों, चितकबरी गायों, नहरों और बाँधोंसे अधिक परिचय है। हालैण्डकी अधिकतर गायें चितकबरी, सफेद और काली हैं। वहाँके मनुष्य गोरे हैं तो गायोंका मुख्य रंग काला होता है जिसपर बहुत बड़े-बड़े सफेद दाग रहते हैं। भारतमें मनुष्य अश्वेत हैं तो गायें अधिकतर श्वेत हैं। इससे यह सोचनेको बाध्य होना पड़ता है कि चमड़ीके रंगका मौसिमसे शायद कोई सम्बन्ध नहीं होता।

जनसंख्या बहुत घनी होनेके कारण जमीन जरा भी व्यर्थ नहीं जाने दी जाती। केवल ५ प्रतिशत ऐसी जमीन होगी जिसे हम परती कह सकते हैं। पर बाकी सबमें भी विभाजन बड़े ढंग से होता है—४० प्रतिशत जमीनपर चरागाह हैं, ३० प्रतिशतपर खेती की जाती है, ३ प्रतिशत भूमिपर छायादार घर बनाकर (वैज्ञानिक मौसिम उत्पन्न कर,) शाक-भाजी, फल-फूल आदिके उत्पादनके लिए उपयोग किया जाता है, और बाकी बचे ७ प्रतिशतपर जंगल है। जंगल भी सब अपने आप नहीं उगे हैं, योजनानुसार लगाये गये हैं क्योंकि सारी भूमि नयी है। इसलिए जंगलोंमें भी सीधे-सीधे ऊँचे और पंक्तिबद्ध पेड़ दिखाई देते हैं।

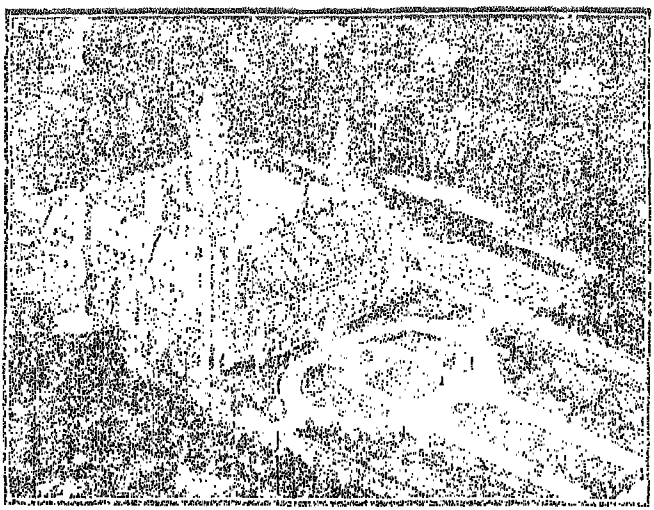
गोभक्षकोंका देश होते हुए भी हालैण्डमें गायोंकी बड़ी सेवा की जाती है· काली-सफेद फ्रीजियन चितकबरी गायोंको दुनियावाले हालैण्डके लाल-सफेद-नीले तिरंगे राष्ट्रीय झंडेसे भी अधिक जानते हैं। दूनी तिगुनी पैदावार करनेके लिए खेतोंकी जैसे सेवा की जाती है वैसे ही दूना तिगुना दूध पानेके लिए इन गायोंकी भी सेवा की जाती है। दुनिया भरमें सबसे अधिक दूध हालैण्ड की गायें देती हैं। कुछ तुलनात्मक आँकड़े यहाँ दिये जा सकते हैं।



आँफ्टकी युद्ध निलकवी गार्थी (पृ० ४०)



डच चित्रकार रेम्ब्राण्टका जगद्प्रसिद्ध चित्र 'नाइट वाच' (पृ० ४२)



हेगका 'पीस पैलेस' (पृ० ५०)

प्रति गाय प्रति वर्ष औसत दूध लीटरमें (४'५४ लीटर=१ गैलन=लगभग ५ सेर)

हालैण्ड ३५००	कनाडा १८५०
स्विट्जरलैण्ड ३४००	फ्रांस १८००
डेनमार्क ३०००	आस्ट्रेलिया १५००
इङ्गलैण्ड २४५०	संयुक्तराष्ट्र अमेरिका १४००
जर्मनी २४००	अर्जेण्टीना ९००

सन् १९५१में देश भरमें कुल ५६ लाख ४० हजार मेट्रिक टन दूध हुआ था जिसमेंसे ११ लाख ८० हजार टनकी पनीर, ४ लाख ४५ हजार टनका जमाया दूध और ३ लाख २५ हजार टन-का दूध पाउडर बनाया गया। मक्खन और पनीर बनानेके देश भरमें ८०० कारखाने हैं।

गल्लेकी जोतमें भूमि कम होनेके कारण हालैण्डको बाहरसे गल्लेका आयात करना पड़ता है, पर वह हर साल ३–४ लाख टन ताजी शाक-भाजी और ३०-३५ हजार टन मछली निर्यात करता है। अपनी अर्थव्यवस्था उसने बिलकुल व्यावसायिक आधारोंपर स्थिर की है। (अव्यवस्थित व्यवस्थाका भारतका एक उदाहरण शक्कर उद्योगका दिया जा सकता है। विदेशोंसे २० रुपये मन शक्कर वह आयात कर सकता है, पर देशके ईख उत्पादकों और शक्कर मिलोंकी नकली रक्षा करनेके लिए उपभोक्ताओंको ३५) मनकी महँगी शक्कर जबरदस्ती खानी पड़ती है।)

उद्योग-धन्धे सब नये होनेके कारण मशीनरी अपटुडेट है।

डच जनताकी राष्ट्रीय सवारी साइकिल है। कहते हैं कि हालैण्डकी आधी प्रजा, ५५ लाख स्त्री-पुरुष, गमनागमनके लिए साइकिलोंपर निर्भर रहते हैं। ट्राम, बस, बिजलीकी रेल, हवाई जहाज सब व्यापक और सुलभ रहनेपर भी साइकिलोंका डचोंका प्रेम अद्भुत ही मानना चाहिये। शहरोंमें-गाँवोंमें जहाँ

देखिये वहीं स्त्री, पुरुष, वृद्ध स्त्रियाँ भी साइकिलोंपर बैठकर इतनी तेजीसे जाती हुई दिखाई देंगी मानो शेर उनका पीछा कर रहा हो। साइकिलोंकी इस भीड़के कारण बड़ी-बड़ी मोटरकी सड़कोंके बगलमें साइकिल-सवारोंके लिए भी हर जगह छोटी सड़क रहती है। बचपनसे ही डच युवकोंको साइकिलका पाठ पढ़ाया जाता है। ५-६ सालकी उम्रसे ही उनको दो पहियेकी छोटी बेलेन्स सिखानेवाली साइकिल दी जाती है। साइकिलपर बैठना हीन नहीं समझा जाता। हेगकी सड़कोंपर आप हजारों रुपये गिल्डर वेतन पानेवाले अफसरोंको भी साइकिलपर बैठकर जाते हुए देख सकते हैं। कहते हैं कि महारानी जूलियाना भी साइकिलपर बैठकर अपने देहातवाले महलसे पासके गाँवमें घूमने या सामान खरीदने जाती हैं।

साइकिलोंकी इतनी भीड़ और हजारों मोटर कारें सड़कोंपर दौड़ती रहती हैं, फिर भी दुर्घटनाएँ अधिक नहीं होतीं। १९५३ में आम्सटरडमकी सड़कोंपर मोटर दुर्घटनाओंसे साल भरमें केवल ७६ आदमी मरे थे।

डचोंकी राष्ट्रीय सवारी साइकिल है, उसी प्रकार उनका राष्ट्रीय पेय जेनेवर है। डच 'जिन' शराबको जेनेवर कहते हैं। बीयर या शेरी डच लोग चाहे जितनी पी लें, पर जब तक वे जेनेवर नहीं पीते उन्हें शराबका मजा नहीं आता।

कारखानोंमें अधिकतर मजदूर साइकिलोंपर आते हैं। कारखाना बनाते समय साइकिलें रखनेके लिए काफी जगह छोड़नी पड़ती है। साइकिलोंकी लंबी कतारें उलटे वी Λ के आकारके स्टैण्डोंपर हर कारखानेमें दिखाई देती हैं। इस तरह साइकिल स्टैण्ड बनानेसे जगहकी बहुत बचत होती है।

कला कौशल—कलासंग्रह

मनुष्यको जब पेट भर खाना निश्चित रूपसे मिलता है तब वह विज्ञान, कला और संस्कृतिकी ओर पूरा ध्यान देता है। हालैण्डवालोंको अपने कलाकारों-चित्रकारोंपर बड़ा गर्व है और कलासंग्रहोंको सजाने आदिमें तथा उनके प्रदर्शनोंमें वे कोई कोरकसर नहीं रखते। हर मानीमें सत्रहवीं सदी हालैण्डका स्वर्णयुग माना जाता है। चित्रकार-कलाकार भी इस युगमें बहुत हुए। वहाँके कई चित्रकार विश्वप्रसिद्ध हैं। डच लोगोंके सागरप्रेमी होनेके कारण बाहरसे भी कलाकी बहुतसी अमूल्य कृतियाँ हालैण्डमें गयीं और देशके म्यूजियमोंमें आज भी वे सुरक्षित रखी गयी हैं। पुरातत्व, इतिहास, कला, भूगोल, मध्य-पूर्व, सुदूरपूर्व, जहाज और विज्ञानसे संबंधित लगभग २०० संग्रहालय हालैण्ड भरमें हैं और हजारों-लाखों विदेशी कलाप्रेमी पर्यटक इन्हें देखने हालैण्ड जाते हैं।

हालैण्डके छ पेण्टर कलाकारोंको सारी दुनिया जानती है। फ्रांस हाल्स (१५८१-१६६६) और रेम्ब्राण्ट (१६०६-१६६९) व्यक्ति-चित्रण, पोर्ट्रेट पेंटिंगके लिए, होब्बेमा (१६३८-१७०९) और ब्यूसडेल (१६२८-१६८२) प्रकृति-चित्रणके लिए और वरमियर (१६३२-१६७५) तथा पीटर डी हूग (१६३०-१६७७) छाया प्रकाश चित्रणके लिए जगत्प्रसिद्ध हैं। ये छहो हालैण्डके स्वर्णयुग, सत्रहवीं सदीके हैं। हालके कलाकारोंमें विन्सेण्ट फान गागका नाम लिया जा सकता है।

ईसाइयोंके देशोंमें चर्चोंका बहुत महत्त्व रहता है। हर नगर, देहातमें सबसे ऊँची, सबसे सुन्दर कलापूर्ण और सबसे प्राचीन इमारत गिरजाघरोंकी रहती है। चित्रकार भी ईसाके जीवन-चरित्रका चित्रण ही अधिकतर करते हैं। पुरानी बस्तियाँ गिरजा घरोंको बीचमें रखकर उनके इर्दगिर्द ही बसती थीं। हालैण्डके

शहर २-३ सौ साल पुराने ही होनेके कारण अधिकांश पूर्व नियोजित नकशोंके आधारपर बने हैं और इसलिए सुन्दर तथा सुघड़ हैं।

हर साल ग्रीष्म ऋतुमें हालैण्डमें हालैण्ड फेस्टिवल नामसे संगीतज्ञोंका भारी जमघट होता है। यूरोप भरसे और अमेरिकासे भी गायक-वादकोंकी प्रसिद्ध-प्रसिद्ध पार्टियाँ हालैण्ड आती हैं और उत्कृष्ट कलाका प्रदर्शन करती हैं। हेगसे और शेवनिंगेनसे यह कलाप्रदर्शन शुरू होकर ३-४ सप्ताह तक देशभरके बड़े शहरोंमें घूमता चलता रहता है।

भाषा

हालैण्डके लोग बहु-भाषाभाषी हैं। अंग्रेजी अधिकतर लोग जानते हैं, इसलिए हमें भ्रमणमें डच भाषाके ज्ञानकी कमीका कहीं अनुभव ही न हो पाया और न कहीं परेशानी हुई। वहाँ अंग्रेजीके यथेष्ट प्रचलनके कारण ८-१० डच शब्दोंको छोड़कर और डच शब्द हमें याद ही नहीं रहे। हालैण्डवालोंको अंग्रेजी, फ्रेंच और जर्मनसे बहुत काम पड़ता है। कहते हैं कि डच भाषामें और जर्मन भाषामें बहुत साम्य है। डच भाषाके दो-तीन शब्द जो बारबार इस्तेमाल किये जाते रहे और बहुत कर्णमधुर रहे वे या या और ने ने थे। ये बड़े तर्जसे कहे जाते हैं। या या का मतलब हाँ होता है और ने नेका नहीं। कुछ डच शब्द हिंदीसे भी मिलते-जुलते मिले। कामरका अर्थ होता है कमरा।

यूरोप जानेके पहले मैं समझता था कि जिन-जिन देशोंको अमेरिकन डालर सहायता मिलती है वहाँ-वहाँ जनतामें अमेरिका-विरोधी भावना गहरी होगी, पर हालैण्डमें ठीक इसके उलटी बात निकली। जर्मनोंसे हालैण्डको मुक्त करनेमें सबसे आगे कनाडा और अमेरिकाकी सेना थी। हालैण्डकी अर्थव्यवस्था सुदृढ़ करनेमें मार्शल सहायताने ऐन मौकेपर आकर मदद दी। इससे

हालैण्डवासियोंमें अमेरिकाके प्रति श्रद्धा और आदर उत्पन्न हो गया है। हम जब कभी कोई अमेरिकाविरोधी मजाक या कहानी कहते तो डच लोगोंको वह पसंद नहीं आती थी। हमें मालूम हुआ कि यूरोपभरमें सबसे कम अमेरिकाविरोध हालैण्डमें है और अमेरिकाकी भी धारणा है कि यूरोपमें उसका सबसे बड़ा दोस्त हालैण्ड है, इसीसे हालैण्डपर वह पूरा विश्वास रखता है। 'नैटो'के बड़े-बड़े आर्डर डच कारखानोंको मिले हैं।

इतना अमेरिका-प्रेम होनेपर भी हालैण्डमें हमें रूस-विरोधी भावना भी नहीं दिखाई दी। राटरडमका जो कारखाना 'नेटो'के लिए विध्वंसक बना रहा है वही रूसके लिए भी दो जहाज बना रहा है। के० एल० एम० कंपनीका यह प्रयत्न सफल हो गया है कि उसके विमानोंको पूर्वी बरलिनके शोएनेवेल्ड हवाई अड्डेपर उतरनेकी अनुमति दी जाय। सम्भवतः वह कंपनी चाहती है कि पश्चिमी बरलिनके टेम्पलहाफ हवाई अड्डे पर उतरनेकी अनुमति उसके विमानोंको मिले तो व्यावसायिक दृष्टिसे अधिक लाभप्रद होगा, पर रूसी अधिकारियोंकी अनुमतिका उसने निरादर नहीं किया है।

तात्पर्य यह कि हालैण्डवाले पूर्व-पश्चिमके झगड़ेमें जान-बूझकर दिलचस्पी नहीं लेते। वे दुनियाभरको अपना मित्र बनाकर रखना चाहते हैं। वैसे अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ोंमें जब दुनिया दो हिस्सोंमें बँट गयी है तो ऐतिहासिक कारणोंसे हालैण्ड पश्चिमके अधिक निकट हो जाता है, इसमें कोई आश्चर्य नहीं।

हालैण्डका यह संक्षिप्त इतिहास-भूगोल, वहाँके लोगोंकी जीवनप्रणाली, रीतिरिवाज राष्ट्रीय चरित्र-विशेष आदि समझ लेनेके बाद अब हमारी दैनिक यात्राके वर्णनका आनन्द लेनेमें आसानी होगी।

८—कार्यक्रमका पहला दिन

४ अप्रैल १९५४

रविवार होनेके कारण तथा यात्राकी थकावट दूर करनेके लिए खाली दिन रखनेके उद्देश्यसे सरकारी कार्यक्रममें आज केवल यह था कि दोपहरको होटलमें ही एमेच्योर गाइड्स असोसिएशनके सदस्य आकर मिलेंगे। पर हम लोगोंने पहले दिनसे ही व्यस्त कार्यक्रम बना लिया।

११ बजे एमेच्योर गाइड्स असोसिएशनके सदस्य आये। हालैण्डमें पर्यटकोंको आकृष्ट करनेके लिए सरकारी टूरिस्ट एजेन्सी है और वह बहुत ही अच्छा काम करती है, पर यह असोसिएशन उससे अतिरिक्त है। उच्च शिक्षावाले विद्यालयोंके छात्रों और छात्राओंने, जो कई भाषाएँ सीखते हैं और दुनियाके इतिहासमें विशेष दिलचस्पी लेते हैं, यह संस्था बनायी है। वे लोग विदेशी यात्रियोंकी बहुत सहायता करते हैं। इससे छात्रों-छात्राओंको विदेशियोंसे सम्पर्क बढ़ानेका और उनके रीतिरिवाज जाननेका अपने ही देशमें रहकर अवसर मिल जाता है। जो छात्र कई भाषाएँ जानते हैं या सीखना चाहते हैं तथा अपने देशके इतिहास और संस्कृतिके जानकार हैं उनको इस संस्थासे बहुत लाभ होता है और इन छात्रोंके कारण विदेशी यात्रियोंको बड़ी सुविधा होती है। उन्हें पेशेवर पैसा-कमाऊ गाइडोंके शिकंजेमें नहीं पड़ना पड़ता। सरकारी यात्रा-दफ्तर तथा औद्योगिक संस्थाएँ इस असोसिएशनकी आर्थिक सहायता करती हैं। हमारा अपना देश भी विदेशी यात्रियोंको अधिकाधिक आकर्षित करना चाहता है।

यहाँ भी कालेजों, विश्वविद्यालयोंके छात्र और छात्राएँ इसी प्रकारकी कोई गाइड संस्था बनावें तो बहुत लाभ हो।

आज भी आकाशमें बादल छाये रहे और सूर्य-दर्शन नहीं हुआ। सवेरे मैं और शास्त्री होटलके बाहर घूमने निकले। ठंढ बहुत थी, सड़कें सूनी थीं। शामको ६ बजे एक बार कुछ मिनटोंके लिए सूरज निकला था। हम लोगोंने तै किया था कि भारतीय दूतावासके लोगोंके साथ आजका दिन बिताया जाय। दोपहरको हम सूचना सेक्रेटरी श्री जगमोहन महाजनके यहाँ लंचके लिए गये। ये पंजाबसे आये हैं और हिंदी-भाषी हैं। बहुत मिलनसार हैं। पूरी यात्रामें उन्होंने हमारी बहुत सहायता की। भारतमें पत्रकार थे। दिल्लीमें फ्री प्रेस जर्नलके संवाददाताका काम करते थे। पत्रकार ये अब भी बनना चाहते हैं। विदेशमें खर्च बहुत होता है और सरकारी तनखाह अधिक होनेपर भी इतनी पर्याप्त नहीं होती कि बिना अपनी गाँठका खर्च किये अच्छी तरह आदमी रह सके।

अपनी मोटर है। थोड़ी ही अवधिमें इन्होंने हालैण्डके अधिकारियों-पत्रकारोंसे खासा परिचय कर लिया है। हालैण्डमें जेका उच्चारण य करते हैं इसलिए वहाँवाले इनको महायान कहते हैं। अविवाहित हैं। पेयिंग गेस्टकी तरह रहते हैं।

श्री महाजनके यहाँ भारतीय दूतावासके द्वितीय सेक्रेटरी श्री नरेन्द्र सिंहसे हमारी मुलाकात हुई। इनकी बदली हो गयी थी। पश्चिम अफ्रीकाके गोल्डकोस्टकी राजधानी आक्रा जानेका इन्हें आदेश मिला था। ये उसीकी तैयारी कर रहे थे। सहारा रेगिस्तान ये बसमें बैठकर पार करनेवाले थे।

श्री महाजनके घरसे लौटकर हम होटल आये और फिर हेगका चक्कर लगानेके लिए निकले। गाइड्स असोसिएशनकी एक छात्रा सदस्य हमारे साथ थीं।

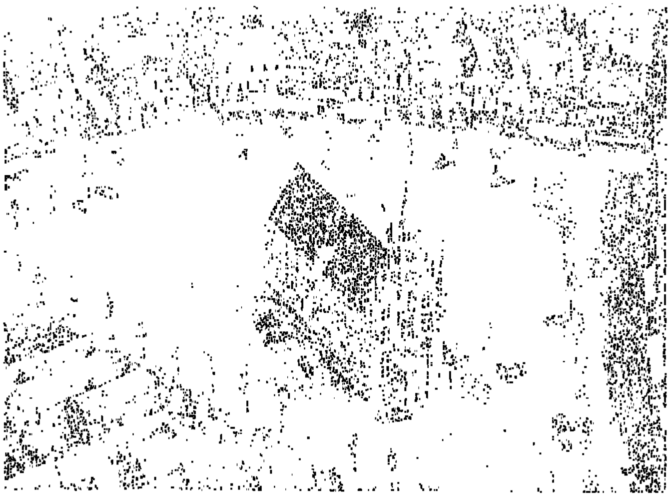
शामको ५ बजे हम भारतीय दूतावासके फर्स्ट सेक्रेटरी डाक्टर एस० सिनहाके घर चाय पीने गये। (श्री चक्रवर्तीके लन्दन जानेके बाद ये अब वहाँके प्रभारी दूत हैं।) इन्होंने लेनिनकी तरह छोटी बकरदाढ़ी रखी है। अविवाहित हैं। शायद आजीवन ऐसा ही रहना चाहते हैं। तिब्बत, भूटान या सिक्किमसे वहाँ गये हैं।

डाक्टर सिनहाके घरसे हम लोग राजदूत श्री चक्रवर्तीके घर गये। लगा कि हम किसी भारतीयके घर आये हैं। श्री चक्रवर्ती बंगाल सरकारके चीफ सेक्रेटरी रह चुके हैं। आइ० सी० एस० अधिकारी हैं। इन्होंने फजलुल हक और सुहरावर्दीकी कई कहानियाँ स्वानुभवकी (सुहरावर्दी और श्रीधरानीकी शकल मिलती-जुलती है।) सुनायीं। राजधानी हेगसे १०-११ मील दूर वैसे-नारमें एक बहुत बड़ी इस्टेट और बँगला भारतीय दूतावासके लिए खरीदा गया है। हमारे ड्राइवरने बताया कि इसी इस्टेटके पाससे महायुद्धकालमें जर्मन लोग ब्रिटेनपर वी २ राकेट छोड़ते थे। चक्रवर्ती परिवारने इसे बहुत सादगीसे, पर भारतीय वातावरणका बना दिया है। श्रीमती चक्रवर्ती इलाहाबादके बैरिस्टर सान्यालकी पुत्री हैं। बनारससे भी उनका काफी सम्बन्ध रहा। उनकी पुत्री भी छुट्टीमें वहाँ आयी थी। शान्तिनिकेतनकी छात्रा रह चुकी हैं। श्री एन राघवन पिल्लईके दो लड़के भी लन्दनसे वहाँ आये थे।

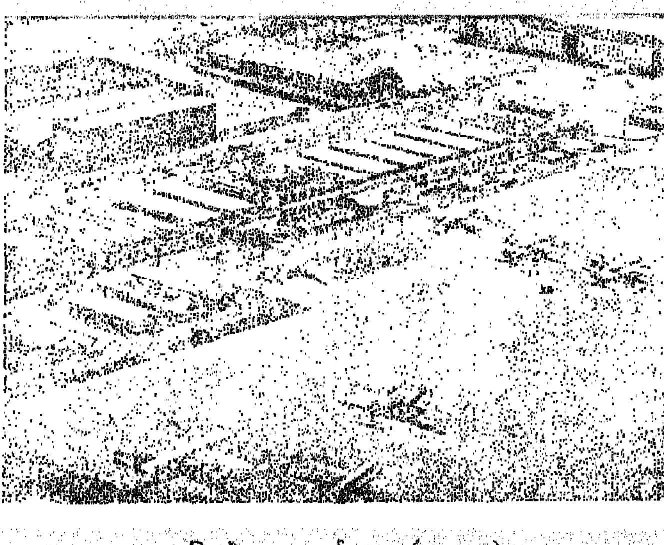
भोजन कर हम लोग होटल लौट आये।

हेग

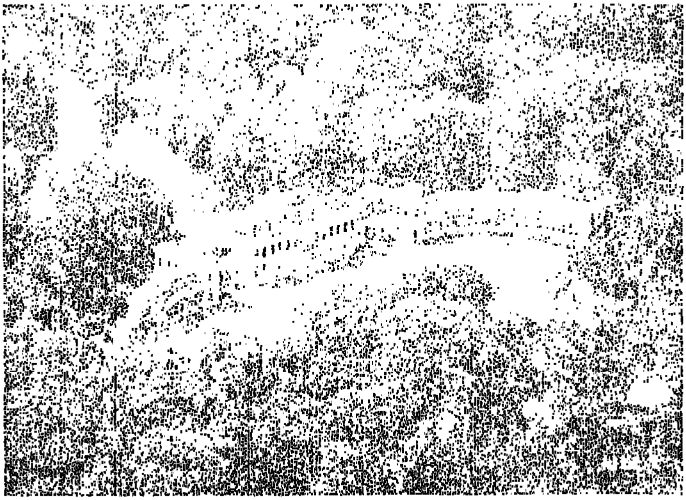
हालैण्डके लोगोंका सन्तोष किसी एक चीजसे नहीं होता। असन्तोषके कारण नहीं, पर आपसकी मैत्रीसे झगड़ा टालनेकी इच्छासे द्वैतकी यह उत्पत्ति हुई है। देश छोटासा है, पर राज-धानियाँ दो हैं, परराष्ट्र मन्त्री दो हैं। हेगमें सरकारी मंत्री रहते हैं, सरकारी कार्यालय यहीं है, संसद भी यहीं बैठती है, पर



गौडा शहरका सिटी हाल (पृ० ४९)



शिफोलका हवाई अड्डा (पृ० ५८)



सुस्टडेक शाही महल (पृ० ६१)

राजतिलकोत्सव देशकी औद्योगिक राजधानी और हालैण्डके सबसे बड़े शहर आम्सटर्डममें होता है। महारानी रहती हैं तीसरी ही जगह एक देहात सुस्टडेकमें।

हेगको लोग यूरोपका सबसे बड़ा और सबसे सुन्दर ग्राम कहनेमें गौरवका अनुभव करते हैं। डच नाम डेन हाग, फ्रेंच ला हाये, अंग्रेजी दि हेग है। आम्सटर्डम (९ लाख), राटरडम (८ लाख) के बाद हेगका नम्बर आता है। जनसंख्या ६ लाख होगी। बहुत सुन्दर शहर है। शहरका पश्चिमी भाग शेवनिंगेन कहलाता है। बम्बईके जूहूकी तरह समुद्र-किनारेका आनन्द लेनेके लिए यह बनाया गया है। यूरोप, अमेरिकाके रईस हेगसे अधिक सम्भवतः शेवनिंगेनको जानते हैं।

हेगका मारित्स म्यूजियम दुनिया भरमें प्रसिद्ध है। पिछली सदियोंके प्रसिद्ध डच चित्रकारोंकी कला-कृतियाँ इस म्यूजियममें हैं। हेगके पूर्वमें गौडा (खौडा) शहर पनीरके लिए और चर्चकी खिड़कियोंके पेण्ट किये हुए शीशोंके लिए प्रसिद्ध है।

राजधानी हेगका प्रारम्भ ७०० साल पहले इस प्रकार हुआ कि विलियम द्वितीयने शिकारके बाद (हालैण्डमें हिरन 'सबसे भीषण जंगली' जानवर है, वहाँ शेर, भालू, चीते नहीं होते।) विश्राम लेनेके लिए सन् १२५०में जंगलमें उस जगह एक किला बनवाया जहाँ आजकल हेग शहरका केन्द्र भाग है। डच भाषामें हाग शिकारकी जगहको और 'ग्राफ' काउण्टको कहते हैं। इसीसे सरदारोंकी शिकारकी जगहका नाम ग्राफेन हाग पड़ा जो बादमें हाग हो गया।

बिनेनहाफ याने इनरकोर्ट। इसीसे इर्दगिर्द आजकल भी सरकारी दफ्तर हैं। पास ही नाइट्स हाल है जहाँ हर साल सितम्बरमें स्टेट्स जनरल (संसद) का उद्घाटन होता है।

विनेनहाफके पास ही स्पुइस्ट्राट (स्ट्रीट) है जिसे हेगका चौक या मॉल ही समझिये ।

विनेनहाफके पास एक भव्य खुली जगह है जिसे वूरहाउट कहते हैं । हमारा होटल डे सां भी यहीं हैं । आधुनिक कलाकारों-का काफे पोस्ट हूर्न पास ही है । कई विदेशी दूतावास भी आस-पास हैं । राजमाता विल्हेल्मिनाकी माता कीन एम्माका महल भी इसी चौकमें है ।

पीस पैलेस

हेगका पीस पैलेस हालैण्डकी एक अद्‌भुत इमारत है । इसकी इमारत, इसका बाग आदि तो दर्शनीय हैं ही, साथही यहाँ दुनिया की सर्वोच्च अदालत इंटरनेशनल कोर्ट आफ जस्टिस बैठती है इसलिए यह एक विश्व-केन्द्र भी है । पहला शान्ति-सम्मेलन सन् १८९९ में रूसके जार निकोलस द्वितीयने हेगके हाउस टेन बाश महलमें बुलाया था । इसके बाद पर्मानेण्ट कोर्ट आफ आर्बिट्रेशनकी स्थापना हुई । इसके लिए इमारत बनानेका प्रस्ताव आया तो अमेरिकाके करोड़पति एण्ड्रू कार्नेगीने १५ लाख डालर देना मंजूर किया । इमारतकी डिजाइनके लिए दुनिया भरसे २१६ नक्शे आये । पहला इनाम फ्रेंच वास्तुकलाविज्ञ एम० कोडोनियेको मिला । ३० जुलाई १९०७ को दूसरे शांति-सम्मेलन के अवसरपर रूसी अध्यक्ष एम० डी० नेलिडोवने पीस पैलेसकी इमारतकी नींवका पत्थर बैठाया । शान्ति-सम्मेलनमें यह निश्चय हुआ कि सम्मेलनमें शामिल होनेवाले राष्ट्र महलके निर्माणके लिए सामान या अपने देशकी कोई विशेष कला-वस्तुएँ महल सजानेके लिए देंगे । ब्रिटिश वाटिका-वास्तुविज्ञ टी० एच० मासन महलके चारों ओरकी वाटिकाकी रचनाके लिए बुलाये गये ।

दो सालमें इमारत पूरी हुई और २८ अगस्त १९१३ को उद्घाटन हुआ । उद्घाटनके समय श्री कार्नेगी सपत्नीक उपस्थित

थे। कोर्ट आफ आर्बिट्रेशनके साथ-साथ १९२२ में पर्मानेण्ट कोर्ट आफ इण्टरनेशनल जस्टिस और १९२३ में एकेडेमी आफ इण्टरनेशनल ला-को भी इस महलमें जगहें दी गयीं। एकेडेमीकी अपनी इमारत अलग भी वाटिकामें बनी। महायुद्धके बाद पर्मानेण्ट कोर्टका नाम इंटरनेशनल कोर्ट आफ जस्टिस रखा गया और यह संयुक्तराष्ट्र संघकी एक विशेष शाखा हो गया। इसकी लाइब्रेरीमें कानूनके ढाई लाख ग्रन्थ हैं।

भारतके बी० एन० राव बहुत काल तक यहाँ स्मरण किये जायंगे। महलमें भारत द्वारा प्रदत्त किसी कला-वस्तुका अभाव खटकता है।

९—परराष्ट्र विभागमें स्वागत

५ अप्रैल १९५४

हमारा बाकायदा कार्यक्रम आज शुरू हुआ। १० बजे हम लोग सरकारके विदेश विभागमें गये जहाँ हमारे २५ दिनके कार्यक्रमका शुभारम्भ होनेवाला था। हालैण्डके सरकारी दफ्तर शहरसे बाहर कहीं अलग सचिवालयमें नहीं हैं। हम लोग जिस होटलमें रहते हैं उसीके पासके मुहल्लेमें एक पत्थरकी पुरानी बड़ी इमारतमें विदेश विभाग है। परराष्ट्र मन्त्री श्री लुन्सने उपयुक्त भाषण कर हमारा स्वागत किया और श्री मणिने हम लोगोंकी ओरसे उपयुक्त उत्तर भी दिया। इसके बाद बातचीत हुई। परराष्ट्र मन्त्रीने जब सुना कि श्री मणि भारतकी ओरसे संयुक्त राष्ट्रसंघकी बैठकोंमें गये थे और थर्ड कमेटी और फोर्थ कमेटीमें थे तो संयुक्त राष्ट्रसंघकी बातचीत छिड़ी क्योंकि वे भी संघमें

कई बार जा चुके थे। राष्ट्रसंघके विभिन्न सदस्योंको मनोरंजक कथाएँ दोनों ओरसे सुनायी गयीं।

परराष्ट्र मन्त्रीने जिस कमरेमें हमारा स्वागत किया वहाँ युद्ध-कालमें जर्मन जनरल सोसिनक्वार्ट अपनी अदालत लगाता था और इसी कमरेसे वह सैकड़ों डच नागरिकोंको फाँसीकी सजा सुना चुका था। परराष्ट्र मंत्रीने कहा कि 'उसका भूत अब भी इस कमरेमें है और आप लोग आध्यात्मिक देश भारतसे आये हैं इसलिए ऐसा कुछ करें कि वह भूत भाग जाय!'

इस प्रकार हमारा पहला कार्यक्रम ही मैत्रीपूर्ण और मनोरंजक वातावरणमें शुरू हुआ और यही क्रम अन्ततक बना रहा।

एक घण्टा परराष्ट्र विभागमें रहकर ११ बजे हम लोग टाउन-हालमें गये। टाउनहालकी नयी इमारत बिलकुल आधुनिक ढंगकी बनायी गयी है। यह इमारत कई मंजिलकी थी, ऊपर-नीचे जानेके लिए कई लिफ्टें थीं, पर एक लिफ्ट नये ढंगकी यहाँ देखी। जिस प्रकार कुएँमेंसे पानी निकालनेके लिए बाल्टियों-का रहट-चक्र घूमता है या मेलोंमें बच्चोंके लिए ऊपर-नीचे जोरोंसे गोल घूमने-वाली चरखी रहती है उसी प्रकार यह लिफ्ट रहती है। यह हमेशा घूमनेवाली मालाकी तरह एक तरफ ऊपर जाती रहती है और दूसरी तरफ नीचे आती रहती है। अपनी मंजिलमें सामने लिफ्टका कोई भी कमरा आनेपर उसपर तेजीसे चढ़ जाते हैं और गंतव्य मंजिलपर आते ही उतर जाते हैं। लिफ्ट चलती रहती है। चलती बस या ट्राममें चढ़नेके समान करना होता है। म्युनिसिपल दफ्तर, विवाह कार्यालय, आदि सब वहाँ हमने देखे। हेगके मेयरने हमारा स्वागत किया। टाउनहालसे निकलते ही फाटकपर एक दो फोटोग्राफरोंने हमें घेरा। ये फोटोग्राफर म्युनिसिपल दफ्तरमें शादी रजिस्टर करानेवाले नवदम्पतियोंके फोटो खींचनेका काम करते हैं। उन्होंने हमें भी समझा कि हम

शादी करके आ रहे हैं यद्यपि हमारे साथ लड़की एक भी नहीं थी। उनसे बचकर हम चले।

आजका लंच म्युनिसिपलिटीकी ओरसे था। शेवेनिंगेनके समुद्रतटपर यह हमारा पहला भोज था।

दोपहरके बाद ३॥ बजे हम लोग २ नम्बर ल्यूटेनरस्टवेगमें गये। यहाँ भारतीय दूतावासका कार्यालय है। दरवाजेपर पीतलका बोर्ड लगा है जिसपर ऊपर हिन्दीमें 'भारतीय दूतावास' लिखा था। हालैण्डमें हिंदी अक्षर देखकर बड़ा अभिमान हुआ। भारतीय राजदूत तथा अन्य लोगोंसे कल ही परिचय हो गया था, इसलिए आजकी चाय रस्मी ही रही।

भारतीय दूतावाससे सीधे हम १५ मील दूर राटरडम गये। राटरडम शहर हेगसे बड़ा है। यूरोपका सबसे बड़ा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारका बन्दरगाह है। शहर घूमनेका कार्यक्रम हमारा बादमें किसी और दिन है। आज हमें जगत्प्रसिद्ध हाइनकेन बीयर शराबका कारखाना देखना था और रातको वहीं डिनर था।

इस पहले डिनरमें ही हमें डच आतिथ्यका परिचय मिल गया। यह भोज २-३ घण्टे तक प्रसन्न वातावरणमें हुआ। एकके बाद एक बीसों तरहके खाद्य पदार्थोंके कोर्स आते रहे। भोज खतम होनेका कोई लक्षण नहीं था। भोज कारखानेके तहखानेमें 'बीयर सेलर' में मोमबत्तियोंके प्रकाशमें हो रहा था। (बिजलीकी बत्तियाँ भी थीं।) हमें हिटलरके म्यूनिख बीयर सेलरके भोजों और बैठकोंका स्मरण आया। पीनेके लिए कमी नहीं थी क्योंकि बीयरके कारखानेका ही यह भोज था। किसी प्रकार २-३ घंटेके बाद भोज समाप्त हुआ। उसके बाद हमारे मेजवान ऐसे रंगमें आये कि पियानो बजने लगा और वे खुद गाने और नाच-नाचकर ताल देने लगे। वहाँ अफसरीकी झूठी प्रतिष्ठा नहीं थी, विशुद्ध जीवन-आनन्द क्या हो सकता है और यूरोपीय लोग सब

कुछ भूलकर किस प्रकार अपनी शाम मनोरंजक ढंगसे बिताते हैं, इसका पहला अनुभव मुझे यहाँ हुआ।

रातको हम होटल लौट आये।

डच बीयर शराब

हालैण्डकी 'हाइनकेन' और 'आम्स्टेल' बीयर शराब दुनिया भरमें प्रसिद्ध है। पर हालैण्डमें बीयरके ये दो ही कारखाने नहीं हैं। १ अप्रैल १९५४ को हालैण्डमें ४६ ब्रूवरियाँ या मद्योत्पादनके कारखाने थे। दुनिया भरमें जितनी बीयर शराब निर्यात होती है उसका एक चौथाई हिस्सा अकेले हालैण्ड निर्यात करता है और बीयरका सबसे बड़ा निर्यातक है। १९५३ में १८ लाख हेक्टालीटर बीयर बनी जिसमेंसे ५ लाख ४८ हजार हेक्टा लीटर निर्यात हुई। बीयरके निर्यातकोंमें ब्रिटेन, जर्मनी, डेनमार्क, फ्रांस और संयुक्त राष्ट्र अमेरिकाका क्रम हालैण्डके बाद आता है। बीयरके निर्यातसे ४॥ करोड़ गिल्डरके बराबर विदेशी मुद्राएँ हालैण्डको प्राप्त होती हैं। भारतमें शराबबन्दीके कारण डच बीयरका आना कम हो रहा है। १९४८ में २१ हजार हेक्टा लीटर बीयर आयी थी पर १९५३ में १५ हजार हेक्टा लीटर बीयर ही आयी थी।

हालैण्डमें हमने देखा कि बहुत बड़े-बड़े कारखाने भी निर्यात आदिके बारेमें आपसकी चढ़ा-ऊपरी नहीं करते। महायुद्धके बाद उन्होंने इस बातमें बड़ा लाभ समझा कि बड़े कारखाने भी निर्यात व्यापारके बारेमें कोआपरेटिवकी तरह काम करें। जहाज बनाने की बड़ी कम्पनियोंने भी विदेशोंके आर्डर लेनेके लिए कोआप-रेटिव बनायी है। बीयर कारखानोंने भी एक सेण्ट्रल ब्रूवरी कार्यालय बनाया है। ४६ ब्रूवरियोंमेंसे केवल १० का माल निर्यात होता है। दुनियाके १३० देशों-प्रदेशोंमें डच बीयर भेजी जाती है पर आधा निर्यात यूरोपीय देशोंको ही होता है। बीयर बनानेमें ३०

हजार टन जौ हर साल लगता है जो सब हालैण्डमें ही पैदा होता है। जौकी किस्म अच्छी बनानेके लिए 'नेशनल कमेटी फार ब्रूइंग बार्ली' बहुत प्रयत्न करती है। ३०० टन 'हाप्स' धान्य भी बीयर बनानेके लिए जर्मनी, चेकोस्लोवाकिया, इंगलैण्ड और फ्रांससे मंगाया जाता है। कच्चा माल खरीदनेका सारा काम सेण्ट्रल ब्रूवरी संघटन करता है।

डच होटलोंमें मैंने देखा कि एक कप चाय या एक कप काफी या एक बोतल बीयरका दाम बराबर ही १५ आनेके करीब लगता था पर एक गिलास आरेंज जूस या संतरेके रसके दाम अधिक, सवा रुपयेके करीब होता था।

१०—फूलोंका नीलाम–महारानीसे भेंट

६ अप्रैल १९५४

आज सबेरे १० बजे हम लोग हेगसे कुछ मील उत्तर आल्समेरके लिए रवाना हुए जहाँ फूलोंका नीलाम होता है। डच लोग फूलोंके बड़े शौकीन हैं और हर एक डच परिवार अपने टेबुलपर या खिड़कीमें फूलोंका गुच्छा अवश्य रखता है। डच लोगोंके फूलोंके प्रेमके बारेमें मैं आगे चलकर और विस्तारसे लिखूँगा।

आल्समेरमें रोज फूलोंका नीलाम होता है। मोटरबोट नावोंपर देशभरसे रोज सबेरे यहाँ फूल आते हैं। नीलाम करनेवाली कोआपरेटिव कम्पनी सन् १९१२में स्थापित हुई थी। इसकी इमारतमें सभी तरहकी सुविधाएँ हैं। व्यापारियोंके ठहरने, खाने-पीने, टेलिफोन, रेडियो, पैकिंग, सभाकी जगह आदि सभी सुविधाएँ यहाँ हैं। फूलोंके गुच्छोंके साथ-साथ

छोटे-छोटे गमलोंमें उगे फूलोंका गमलोंके साथ ही नीलाम भी होता है।

डच लोगोंकी शान्तिप्रियताके अनुरूप ही यह नीलाम भी रहता है। नीलामी बोली बोलनेके लिए यहाँ हल्लागुल्ला करनेकी कोई आवश्यकता नहीं होती। फाटकके अन्दर घुसते ही पहले बड़े हालमें सवेरे आये फूल अलग-अलग छाँटकर ट्रालियोंपर सजाये हुए दिखाई देते हैं। ये ट्रालियाँ एकएक करके नीलाम घरमें ले जायी जाती हैं। यहाँ थोक, खुरदा और निर्यातक व्यापारी सीढ़ीदार गैलरीमें अपनी-अपनी पूर्वनिश्चित जगहपर बैठे रहते हैं। हर एक व्यापारीकी सीटपर एक बिजलीका बटन लगा रहता है। सामने दीवारपर एक घड़ीनुमा यन्त्र रहता है जिसपर एक बहुत बड़ा काँटा घड़ीके काँटेकी उलटी दिशामें घूमता रहता है। घड़ीपर १०० से लेकर ० तक आँकड़े लिखे रहते हैं। बगलमें ऊँचे बारजेमें नीलामवाले कर्मचारी बैठे रहते हैं। ट्रालीपर फूल लाये जाते हैं और एक आदमी उनको हाथमें उठाकर व्यापारियोंको दिखाता है। नीलामका कर्मचारी उन फूलोंका वर्णन करता है। नीलाम शुरू होता है और घड़ीका काँटा घूमना शुरू होता है। ट्रालीके फूलोंके लिए कोई खरीदार जितना दाम देना चाहता है उस आँकड़ेपर काँटा आते ही वह अपने सामनेका बटन दबाता है और काँटा वहाँ रुक जाता है। घड़ीके पीछे बहुतसे बल्ब भी लगे रहते हैं। काँटा रुकते ही जिस व्यापारीने बटन दबाया होगा उसके नम्बरका बल्ब भी पीछे बल उठता है। नीलामके कर्मचारी चटसे दाम और नाम नोटकर माल पैकिंग घरमें भेज देते हैं जहाँसे व्यापारी तुरत दाम देकर उसे इच्छित जगहपर भेज देता है। जाड़ेमें फूल खराब न हों इसलिए हालमें गरमी भी पैदा की जाती है। डच लोगोंकी पुष्पप्रियता और फूलोंका व्यापार बड़ी तेजीसे बढ़ रहा है।

१९१२ में जहाँ सालभरमें ८० हजार फूलोंके गुच्छे नीलाम किये गये वहाँ ३५ साल बाद १९४७ में गुच्छोंकी संख्या ६० लाखके करीब हो गयी। फूलोंके नीलाम हुए गमलोंकी संख्या भी जो १९१७ में ३१॥ हजार थी, बढ़कर १९३७ में ४० लाख हो गयी। विदेशोंमें हालैण्ड ट्यूलिप फूलोंके लिए और इस फूलके बीजकन्दों (बल्ब) के लिए प्रसिद्ध है। इन बीजकन्दोंका व्यापार हालैण्डका एक वृहत निर्यात व्यापार हो गया है। इस व्यापारका केन्द्र कुकेनहाफ है। हम लोग १८ अप्रैल रविवारको कुकेनहाफके पुष्पमेलेमें गये थे। इसका वर्णन मैं बादमें करूँगा।

शिफोलका हवाई अड्डा

आम्सतेरसे हम लोग खाना खानेके लिए के० एल० एम०के मेहमान होकर शिफोल हवाई अड्डेपर आये। अड्डेके 'एवियो-रामा' रेस्टोरांमें भोजका प्रबन्ध था। शिफोलका हवाई अड्डा आजकल जहाँ है वहाँ पहले बड़ी हार्लेम झील थी। जब समुद्रमें भारी तूफान आता था तो जहाज आश्रय लेनेके लिए झीलके इस कोनेमें आ जाते थे। इसीसे इसका नाम शिफोल यानी शिप्सहैवेन, जहाजोंका आश्रय-स्थान पड़ा। १८५२ में हार्लेम झील सुखा दी गयी। १९१७ में इस दलदलवाली जगह पर एक सैनिक हवाई अड्डा बनानेका डच सरकारने निश्चय किया। समुद्र-की सतहसे १३ फुट नीचे यह अड्डा है। महायुद्धके बाद नागरिक उड्डयन शुरू हुआ और शिफोलका सैनिक अड्डा के० एल० एम० कम्पनीका नागरिक उड्डयनका अड्डा बन गया। १९ मई१९२० को के०एल०एम०का पहला विमान आम्सटर्डमसे लन्दनके लिए यहाँसे उड़ा। सात आदमियोंके स्टाफसे शिफोलके ६ सैनिक हैंगरोंमेंसे एक हैंगरके अन्दर यह के० एल० एम० कम्पनी शुरू हुई। द्वितीय महायुद्धके प्रारम्भ तक १९३९ में शिफोलका हवाई अड्डा विशाल

एवं जगत्प्रसिद्ध हो चुका था। युद्धकालमें १० मई १९४० हवाई हमलेसे यह अड्डा सर्वथा नष्ट हो गया। युद्धके बाद १९४५ में फिर इसके पुनर्निर्माणका काम इतनी तेजीसे कि गया कि एक ही महीनेके अन्दर हवाई जहाज चलनेके लायक हो गया। आज तो यह इतना सुन्दर हो गया है कि हर स ८-१०लाख आदमी केवल इसे देखने और सैर करने यहाँ आते

शिफोल और के० एल० एम०ने छोटेसे हालैण्डको दुनिया उड्डयनका चौथे नम्बरका देश बना दिया है। हर दस मिनट कोई न कोई विमान शिफोल आता है या यहाँसे उड़ता रोज कोई १२०० यात्री इस हवाई अड्डेपर उतरते हैं या विमान चढ़ते हैं।

हालैण्डवाले आदिकालसे ही समुद्रसे लड़ते आये हैं। उन सारा जीवन दरियासे लड़नेमें बीता है। इसी संघर्षमें 'फ्ला डचमैनकी यानी एक डच जहाजके प्राचीन भूतकी कहा लोकप्रिय हो गयी है। यह जहाज ३०० साल पहले ईस्ट इण्डि कम्पनीके जमानेसे लेकर आजतक दक्षिण सागरसे लेकर ध्रुव तक चलता जाता है, घूमता रहता है। तूफान, आंधीमें यह बन्दरगाहपर नहीं लगता। बीच-बीचमें भूतकी तरह अ भी वह समुद्रमें किसी-किसी नाविकको दिखाई देता है। जो देखता है वह तूफानमें समुद्रार्पण हो जाता है। इस भूत-जहा के कप्तान जूस्ट फान डर डेकेनका भूत भी दिन-रात उसी जहाज घूमता रहता है। उसे जमीनपर न आनेका शाप है क्योंकि उ अपनेको ईश्वरसे भी बड़ा समझा था।

'फ्लाइंग डचमैन' अब समुद्रपर नहीं चलता। वह स समुद्रपर हवामें उड़ता है। के० एल० एम० के हर एक विमान 'दि फ्लाइंग डचमैन' लिखा रहता है। के० एल० एम० दुनि की सबसे पुरानी हवाई कम्पनी है। रायल डच एयर लाइन्स

डच शब्द 'कोनिंकलिके लुखतवार्ट मासचापिय'का के० एल० एम० संक्षिप्त रूप है।

मैं ऊपर लिख चुका हूँ कि इस कम्पनीका पहला विमान शिफोलसे १८ मई १९२० को उड़ा। दरियापर विजय प्राप्त करनेवाले डच लोगोंने वायुमार्गसे उत्तर सागरको जीता था। आज के० एल० एम० के विमान दुनियाके दूर देशोंके सौसे अधिक शहरोंमें आस्ट्रेलियामें सिडनीसे लेकर अर्जेण्टीनामें ब्यूनोसायरिस तक पहुँचते हैं। हर ४॥ मिनटपर दुनियामें के० एल० एम० का कोई न कोई विमान किसी न किसी हवाई अड्डेपर उतरता है या वहाँसे उड़ता है। डाक्टर अल्बर्ट प्लेसमैन इसके जन्मदाता और पिछले साल अपनी मृत्युके अन्तिम क्षणतक इसके पोषक थे। शिफोलके हवाई अड्डेपर आजकल १० हजार आदमी काम करते हैं जिनमेंसे ७ हजार के० एल० एमके कर्मचारी हैं। हररोज के० एल० एम०के ९० विमान शिफोल आते हैं या यहाँसे उड़ते हैं। इस कम्पनीके विमान हर रोज इतना फासला तै करते हैं कि दुनियाके पूरे तीन चक्कर लग जायँ। इसके विमान हर सप्ताह २० बार भूमध्य रेखा पार करते हैं। कम्पनीकी नौकरीमें २०० स्वस्थ आकर्षक नवयुवतियाँ स्वागतिकाओंका काम करनेके लिए हैं। कामदेव इनकी संख्या बराबर घटानेकी कोशिश करते हैं, पर नयी भरती भी उतनी ही तेजीसे होती है और १८ साल पुरानी यह स्त्री-सेना कभी कम नहीं होती।

महारानीसे भेंट

शिफोलसे हमें सीधे हेग वापस आये बिना ३० मील दूर सुस्टडेक नामके देहातमें जाना था जहाँ हालैण्डकी महारानी रहती हैं। भारतीय राजदूत श्री चक्रवर्तीकी इच्छा थी कि हम सब लोग एक ही पोशाकमें, सफेद चूड़ीदार पैजामा, काली शेरवानी,

सफेद मोजे और काले बूट पहनकर जायँ। जिनके पास पैजामा या शेरवानी नहीं थी उनको उन्होंने राजदूतावासके सदस्योंसे दिलवा दिया। मेरे, शास्त्री और श्रीधरानीके पास ब्राउन बूट थे, इसलिए हम लोगोंने बाज़ार जाकर काले बूट खरीद लिये थे। २३ गिल्डर या ३० रुपयेमें बूट केवल एक इसी समारोहके लिए खरीदने पड़े। बूट तो बादमें बराबर काम आ रहे हैं, पर ८०-९० रुपये खर्च कर मैं जो शेरवानी बनवा ले गया था वह केवल पूरी यात्रामें यहीं एक बार काम आयी।

चूड़ीदार पैजामा और शेरवानियाँ हम लोग अपने हैण्डबेगोंमें शिफोल ले गये थे। वहाँ अन्दर एक कमरेमें जाकर हम अपना ड्रेस बदल आये। रेस्टोराँमें बैठे लोग अचम्भेसे देखने लगे जब उन्हें ६ मूर्तियाँ एक पोशाकमें नजर आयीं। शिफोलसे हम लोग रवाना हुए और ठीक ४ बजे सुस्टडेकके राजमहलमें पहुँच गये। राजदूत श्री चक्रवर्तीने हम लोगोंका परिचय करा दिया, फिर हम लोग तीन-तीनके दलमें बातचीत करने लगे। पहले मणि, मानकेकर और मैंने आधे घण्टे तक महारानीसे बातचीत की। बादमें आधे घण्टे हमारे अन्य तीन साथियोंने बातें कीं।

महारानी जूलियाना तो कई साल ब्रिटेन और कनाडामें रही हैं, इसलिए अंग्रेजी वे खूब जानती हैं। बड़ी सादगीसे रहती हैं, पर हैं बहुत आकर्षक। उनकी उम्र अब ४५ की हो गयी है, पर चेहरेके तेज और आकर्षणमें किसी प्रकारकी कमी नहीं हुई है। हम लोगोंको उनकी बातचीतसे लगा कि भारतीय समस्याओंसे महारानी अनभिज्ञ नहीं हैं। हिन्दी-उर्दूके प्रश्न पर भी उन्होंने बातचीत छेड़ी, तब उनके बारीक अध्ययनका प्रमाण मुझे मिला।

हालैण्डमें २-३ पीढ़ियोंसे कोई राजा नहीं हुआ, रानियाँ ही राज कर रही हैं। महारानी जूलियानाकी माता महारानी विल्हेल्मिनाने १८९८ से १९४८ तक ५० साल शासन करनेके बाद

राजपाट अपनी बेटीको सौंप दिया, क्योंकि उन्हें कोई पुत्र नहीं था। ६ सितम्बर १९४८ को आम्सटर्डमके न्यू चर्चमें जूलियानाका राज्यारोहण समारोह हुआ। (यद्यपि हालैण्डकी शासकीय राजधानी हेग है, पर आम्सटर्डममें ही राज्यारोहण समारोह होते हैं और देशकी व्यावसायिक राजधानी भी वहीं है।) राज्यारोहणके समय महारानीकी उम्र ३९ साल थी। राज्यारोहणके पहले वे दो बार कई महीनोंतक अपनी माताकी बीमारीकी अवस्थामें रीजेण्टका काम कर चुकी थीं। माताकी ट्रेनिंगमें राजपाटका काम देखना उन्होंने बहुत अच्छी तरह सीख लिया था। द्वितीय महायुद्धकालमें वे कनाडा और संयुक्तराष्ट्र अमेरिकामें रहीं और वहाँ उन्होंने बहुतसे नये मित्र बना लिये थे, इसलिए परराष्ट्रीय सम्बन्धोंमें भी उनको कोई दिक्कत नहीं हुई।

सन् १९३७ में जूलियानाका विवाह प्रिंस बर्नहार्डके साथ हुआ। विवाहके समयसे ही वे यूट्रेक्ट प्रदेशके हरियालीसे भरे सुस्टडेक ग्राममें बने अपने छोटेसे पर आकर्षक श्वेत महलमें रह रही हैं। उन्हें ४ संतानें हुईं, पर चारों लड़कियाँ हैं इसलिए हालैण्डका अगला शासन भी एक रानी ही करेगी। जूलियाना बहुत सादगीसे रहती हैं। हमें बताया गया कि कभी-कभी वे खुद साइकिलपर देहातके बाजारमें चली जाती हैं। उनकी पुत्रियाँ भी सुस्टडेकके स्कूलमें अन्य सब ग्रामवाले लड़के-लड़कियों के साथ ही पढ़ती हैं।

महारानी अपनी सादगी, उदारता, जनसाधारणसे सम्पर्क बढ़ानेकी प्रवृत्ति, पीड़ितों-दलितोंके प्रति सहानुभूतिके कारण नेदरलैण्डमें बहुत ही लोकप्रिय हैं। डच लोगोंकी राष्ट्रीय विशेषताओंकी महारानी जूलियाना प्रतीक ही हैं। महारानी होनेपर भी पारिवारिक जीवनका उन्होंने पूरा-पूरा प्रतिपालन किया है। उन्हें यात्राएँ बहुत प्रिय हैं। हर साल विदेश अवश्य जाती हैं।

जूलियानाके पति प्रिंस बर्नहार्ड विमान उड़ाने, मोटर दौड़ानेके खेल-कूद और क्रीड़ा कौशलके शौकीन हैं।

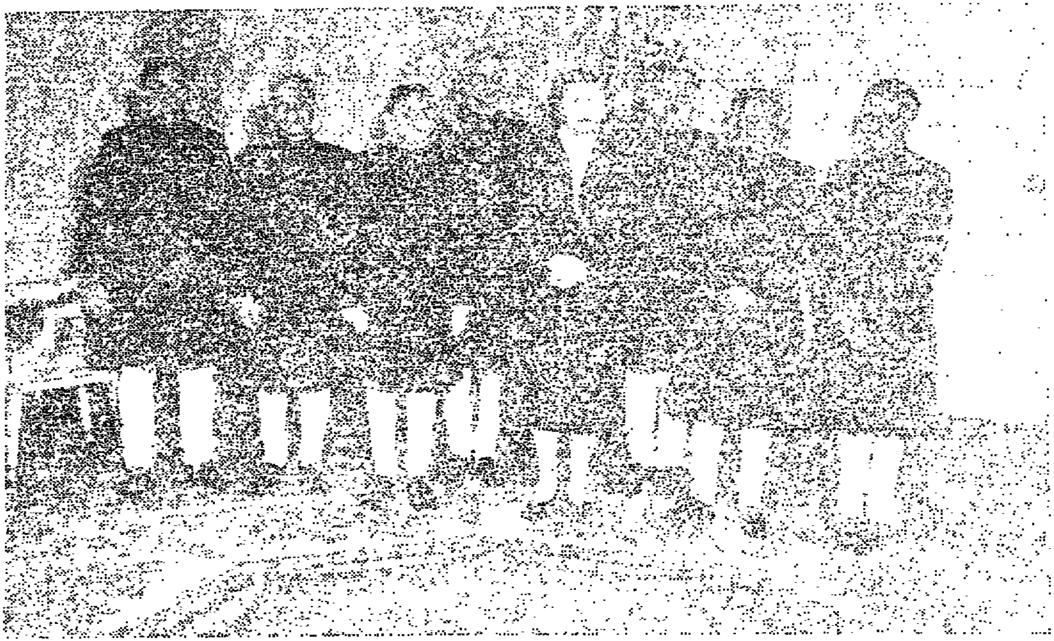
महारानीको हर साल सितम्बरमें हेगमें स्टेट्स जनरल (डच पार्लमेण्ट)के अधिवेशनका उद्घाटन करना पड़ता है। २७ दिसम्बर १९४९ को आम्सटर्डमके महलमें हिंदेशियाके स्वातन्त्र्य विधानपर उन्होंने हस्ताक्षर किये और तुरन्त उठकर मुहम्मद हाटासे जब हाथ मिलाया तो उनकी इस अचानक सूझ और मैत्रीभावना प्रदर्शनसे सभी उपस्थित लोग चकित हो गये थे।

महारानीके पति बर्नहार्डका विधानतः कोई पद नहीं है पर ब्रिटेनकी महारानी एलिजाबेथके पति फिलिप माउण्टबैटनकी तरह प्रिंस बर्नहार्डका भी विशिष्ट व्यक्तित्व है। बर्नहार्डने हालैण्डकी राष्ट्रीय सेवा कम नहीं की है। महारानी कभी अपनी तसवीर अकेली नहीं खिंचवातीं। राजशासनका कार्य भी वे पतिके सहयोगसे करती हैं।

महारानी जूलियाना आरेंज घरानेकी हैं। सन् १५४४ में विलियमने प्रिंस आफ आरेंजकी उपाधि ली। ये हालैण्डके राष्ट्र-पिता कहलाते हैं। सन् १६७२ में आरेंज घरानेका विलियम तृतीय हालैण्डका शासक हुआ। १६८८ में यही विलियम ब्रिटेनका भी बादशाह हुआ। हालैण्डका स्वतन्त्र राज्य स्थापित होनेपर फिर तीन विलियम, प्रथम द्वितीय, तृतीय गद्दीपर बैठे। १८९० में विलियम तृतीयकी मृत्यु हुई। उन्हें कोई पुत्र नहीं था, इसलिए उनकी १० सालकी लड़की विल्हेल्मिना हालैण्डकी महारानी हुई। विल्हेल्मिनाका जन्म ३१ अगस्त सन् १८८० को हुआ। सन् १९३४ में उनके पतिकी मृत्यु हो गयी। वे आजकल उत्तर हालैण्डके एक देहातमें सन्यस्त जीवन व्यतीत कर रही हैं। विल्हेल्मिनाकी १८वीं वर्षगाँठके दिनतक उनकी माता महारानी



महारानी जूलियाना और उनके पति प्रिंस बर्नहार्ड (पृ० ६२)



महारानीके साथ भारतीय पत्रकार दल (पृ० ६३)

खाडिलकर, शास्त्री, श्रीधरानी, राजदूत चक्रवर्ती, महारानी जूलियाना, मानकेकर, मणि और मेनन

एम्मा रीजेण्ट थीं। एम्माका महल अब भी हेगकी घनी बस्ती वूरहाउटमें है।

महारानी जूलियानाका जन्म ३० अप्रैल सन् १९०९ को हुआ। इनके अतिरिक्त विल्हेल्मिनाको और कोई सन्तान नहीं हुई। जूलियानाकी बड़ी लड़की बीट्रीका जन्म ३१ जनवरी १९३८ को, आइरीनका ५ अगस्त १९३९ को, मार्गरेटका १९ जनवरी १९४३ को (कनाडामें) और मेरीके का १८ फरवरी १९४७ को हुआ। जूलियाना सन् १९२७ में लाइडन विश्वविद्यालयमें पढ़ने गयी थीं। अपनी पुत्रियोंकी पढ़ाईमें वे बहुत दिलचस्पी लेती हैं।

राजमहलमें हम लोग करीब एक घण्टा ठहरे। इसके बाद महारानीसे हाथ मिलाकर, गुडबाई कर तथा सबेरे आल्समेरमें ३० डालरमें खरीदा फूलोंका एक गुच्छा उन्हें भेंटकर हम ५० मील दूर फिर हेगमें वापस अपने होटलमें आ गये। सुस्टडेक महलसे रवाना होनेके पहले हम सब लोगोंकी फोटो महारानीके साथ खींची गयी। यह फोटो हालैण्डके और भारतके समाचारपत्रोंमें छपी थी। हमारी हालैण्ड यात्रामें हमारे जो पचासों चित्र खींचे गये उनमें सबसे अधिक स्मरणीय यही चित्र था।

११—यूट्रेक्टका औद्योगिक मेला

(७ अप्रैल १९५४)

आज हमें हेगसे ४५ मील दूर यूट्रेक्ट जाना था और रातमें भी वहीं रहना था। इसलिए हमने अपना आवश्यक सामान भी अपने साथ ही मोटरमें ले लिया। यूट्रेक्टके पास ही न्यूसडेन नामक देहातमें एकान्तमें स्थित डेन ड्रेक नामके होटलमें हमारे एक रात ठहरनेकी व्यवस्था की गयी थी। यूट्रेक्टके मेलेके दिनोंमें

शहरके आसपास २०-२५ मील तकके होटलोंकी सभी जगहें भर जाती हैं। यह होटल देहातमें होनेपर भी यहाँ खाने-पीनेके सामान की कमी नहीं थी। हर कमरेमें टेलिफोन भी था। हालैण्ड छोटा-सा देश होनेके कारण और संचार-वार्तावहन साधन वहाँ बहुत तीव्र और घने होनेके कारण देशका कोई भी ऐसा कोना नहीं है जहाँ जीवनोपयोगी आवश्यक सामग्री और सेवासाधन रोज-रोज प्रातःकाल न पहुँच जाते हों।

हालैण्डकी सबसे ऊँची मीनार यूट्रेक्टके कैथेड्रलकी मीनार है। यह ३५० फुट ऊँची है और सन् १३८२ में बनी थी।

ब्रिटिश इतिहासमें यूट्रेक्ट इसलिए प्रसिद्ध है कि स्पेनिश उत्तराधिकारके प्रश्नपर सन् १७१३ में इस डच शहरमें ही ब्रिटेन और फ्रांसमें संधि हुई थी। पर अब यूट्रेक्ट हालैण्डके प्रति-वार्षिक अंतर्राष्ट्रीय औद्योगिक मेलेके लिए प्रसिद्ध हो गया है। छोटा-सा हालैण्ड किस तेजीके साथ भारी और बड़े उद्योग-धन्धों-का केन्द्र होता जा रहा है, यह इस औद्योगिक मेलेसे जाना जा सकता है। यह अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी इतनी बड़ी होती है कि इसे देखनेके लिए हमारे कार्यक्रममें दो दिन रखे गये थे। यूट्रेक्टमें ही रेलगाड़ीके इंजन, डब्बे, शकरके कारखानेके कलपुर्जे तथा सभी भारी मेलकी मशीनरी बनानेका 'वर्क्सपूर' नामका कारखाना भी है।

आजके हमारे कार्यक्रममें 'वर्क्सपूर' और यूट्रेक्टके औद्यो-गिक मेलेका भीतरी हिस्सा देखना शामिल था। कल बाहरी मैदानी हिस्सा देखेंगे जहाँ बड़ी बड़ी मशीनें, क्रेन आदि प्रदर्शित होते हैं।

अपने देशमें तथा विदेशोंमें व्यापार-वृद्धिके लिए औद्योगिक प्रदर्शनियाँ या मेले बड़े उपयोगी सिद्ध होते हैं। प्रथम महायुद्धके कालमें, लंदन, (१९१५), पेरिस (१९१५), लियों (१९१६), यूट्रेक्ट (१९१७) और ब्रुसेल्स (१९२०) में औद्योगिक मेले शुरू हुए। १९२९ की व्यापक मंदीके बाद सभी देशोंमें अंतर्राष्ट्रीय व्यापारपर

अधिकाधिक रुकावटें डाली जाने लगीं। इससे अंतर्राष्ट्रीय औद्योगिक मेलोंका भी महत्त्व घटा, पर द्वितीय महायुद्धके बाद इनकी उपयोगिता फिर बढ़ी। हालैण्ड तो यूरोपके ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी इन तीनों बड़े देशोंके बीच यातायातके केन्द्रका काम करता है। हालैण्डमें खुद उद्योगीकरण भी तेजीसे बढ़ता गया है और आज उस देशकी जनसंख्याके ४० प्रतिशत मजदूर उद्योगों-कारखानोंमें काम कर रहे हैं।

उद्योगोंके बढ़नेके साथ ही यूट्रेक्टके मेलेका भी महत्त्व बढ़ता गया है और आज यह यूरोपका संभवतः सबसे बड़ा औद्योगिक मेला हो गया है। प्रदर्शनकी जगह और हॉलके स्थानमें बराबर वृद्धि होती जा रही है। सालमें दो बार बड़ी प्रदर्शनी होती है और एक-एक उद्योग-धंधेकी चीजोंका छोटा-छोटा प्रदर्शन साल-भरमें कई बार होता है। कभी केवल जूतोंका प्रदर्शन होता है तो कभी केवल खिलौनोंका।

१९१७ में जब यह प्रदर्शनी शुरू हुई तो एक छोटेसे काठके घेरेमें लगी थी। पहले ही साल ऐसी सफलता मिली कि मेलेके लिए इमारत बनाना जरूरी हो गया। २५ फरवरी १९२० को राजकुमारी जूलियानाके हाथों व्रेडेनबर्गमें इमारतका शिलान्यास हुआ। एक सालमें ५ मंजिलकी इमारत बन गयी। इसमें प्रदर्शनके लिए ३६ हजार वर्ग फुट जमीन थी। १९३० में एक और इमारत बनानी पड़ी। प्रदर्शनीकी जमीन ६६ हजार वर्गफुट हो गयी। १९३२ में पाँचमंजिली एक और इमारत बनानी पड़ी और १ लाख ८४ हजार वर्गफुट जमीन प्रदर्शनीय स्टालोंके लिए मिल गयी। इन इमारतोंमें बृहत्काय मशीनोंका प्रदर्शन नहीं हो सकता था। ट्रेक्टर, क्रेन तथा कृषि और यातायातके उपयोगमें आनेवाली भारी भारी मशीनोंके लिए और उनको चलाकर दिखानेके लिए खुली जगहकी आवश्यकता थी। १९३६ में मेलेकी एक

और शाखा—कृषि शाखा, खुले मैदानमें खुली। १९३८ और १९४६ में एक-एक हॉल और बनाने पड़े और प्रदर्शनीय जगह २ लाख ४२ हजार वर्गफुट हो गयी। फिर भी जगह कम पड़ने लगी। १९४६ में शहरके बाहर क्रोयेसेलानमें खुली प्रदर्शनीके लिए ३० एकड़ जमीन और ली गयी। अब जमीन ३ लाख ६० हजार वर्गफुट हो गयी। बिट्री और आइरीन हालोंमें वृद्धि की गयी। विदेशी स्टालोंके लिए 'पैविलान डे नेशन्स' बढ़ाया गया। आज यूट्रेक्ट मेलेमें प्रदर्शनीय वस्तुओंके लिए ४ लाख ९५ हजार वर्गफुट जगह प्राप्त है, पर यह भी काफी नहीं है। हर साल इस मेलेका विस्तार बहुत तेजीसे हो रहा है। क्रोयेसेलानमें २ लाख ६० हजार वर्गफुट जमीनपर इतना बड़ा हाल बनाया जानेवाला है जो यूरोपका सबसे बड़ा हाल होगा। इस हालके अन्दर नये नये रेल इंजन, नये नये डिब्बोंकी पूरी गाड़ियाँ प्रदर्शनके लिए हालके अन्दर तक ले जा सकेंगे! इस हालके अन्दर ही एक छोटा बन्दरगाह भी बनाया जानेवाला है जिसमें छोटे-छोटे जहाजोंसे सीधे प्रदर्शनके स्टालपर ही माल उतारा जा सके। जेडेनबर्गमें एक चौथी इमारत भी बनायी जानेवाली है। नयी योजनाएँ अमलमें आने पर प्रदर्शनके लिए प्राप्य स्थान ८॥ लाख वर्गफुट हो जायगा।

यूट्रेक्ट मेलेकी वृद्धिके साथ-साथ शहरकी वृद्धि भी होती गयी है। होटल, सड़कें आदि बढ़ती गयी हैं। इस मेलेको देखनेके लिए हर साल दुनिया भरसे हजारों व्यापारी और कारखानेदार हालैण्ड जाते हैं। हर साल ७-८ लाख दर्शक मेला देखने जाते हैं। दर्शकों-की मोटरें मील मीलतक लम्बी ४-४, ५-५ कतारोंमें खड़ी रहती हैं और यह स्वतः एक अंतर्राष्ट्रीय कार-प्रदर्शनी हो जाती है।

यूरोपके इस इतने बड़े औद्योगिक प्रदर्शनमें भारतका एक भी स्टाल नहीं था। यह बात मुझे खटकी। मैंने भारतीय दूतावास-

वालोंसे इसका जिक्र भी किया। सम्भवतः लंदनकी प्रदर्शनीमें स्टाल रखनेसे यूरोपके व्यापारका भारतका काम चल जाता होगा इसलिए यूट्रेक्टकी प्रदर्शनीपर भारतका ध्यान नहीं गया है। पर हमें शीघ्र ही उस मेलेमें भी अपना स्टाल भेजना होगा क्योंकि यूट्रेक्ट अब यूरोपका निश्चयेन सबसे बड़ा औद्योगिक मेला हो रहा है।

यूट्रेक्टके इस सालके वासंतिक मेलेका कल ८ अप्रैलको आखिरी दिन है। इस साल दुनियाभरके ६७ देशोंके लोग इसे देखने आये थे। सफाईके वेकुअम क्लीनर बनानेवाली एक डच फैक्टरीको फ्रांससे २ लाख गिल्डरके आर्डर मिले। बेलजियम, जर्मनी और अमेरिकासे सबसे ज्यादा व्यापारी आये थे।

यूट्रेक्टके मेलेमें टेलिविजन सेटोंके भी कई स्टाल थे। एक स्टालपर दर्शकोंकी टेलिविजन फोटो स्वयं दर्शक ही अपने सामने रखे हुए सेटमें देख सकते थे। मैंने अपना पहला टेलिविजन दर्शन यहीं पर किया।

मेलेसे हम रातको ठहरनेके लिए डेन ट्रीक होटल चले गये।

१२—पहला सार्वजनिक समारोह

(८ अप्रैल १९५४)

ल्यूसडेनके देहातके उस होटल डेन ट्रीकमें हमारा पड़ाव एक ही दिनका था। संयोगसे इस होटलमें भी मुझे ५७ नंबरका ही कमरा मिला था। (होटल डे सांमें भी इसी नम्बरका मेरा कमरा था।) हम लोगोंने सवेरे ही अपना सामान बाँधकर मोटरोंपर लदवा दिया। दिनमें यूट्रेक्ट मेलेके मैदानवाले हिस्सेको देखते

रहे। यहाँ बड़े बड़े क्रेन (२५ टनतक वजन उठानेवाले), ट्रैक्टर, जमीन समथल करनेवाले यंत्र, हाथीसे भी बड़े-बड़े बृहदाकार यन्त्र प्रदर्शित थे। यहाँ प्रदर्शित एक मोटर हमने ऐसी देखी कि उसीमें आप पत्नी और एक बच्चेके साथ सपरिवार दिनरात रह सकते हैं। छोटासा गुसलखाना, रसोईघर, सब इन्तजाम उसमें था। वैज्ञानिक, यांत्रिक, शैल्पिक सब तरहकी प्रगतिका उद्योगोंमें जैसा उपयोग बढ़ता जा रहा है, उसका ताजासे ताजा प्रदर्शन ऐसे मेलोंमें देखनेको मिल जाता है।

कई घंटे तक मेलेमें घूमनेके बाद हमने खाना खाया और फिर ४५ मील दूर हेग वापस जानेके लिए रवाना हुए। आज शामको हमारे स्वागतमें हेगमें पहला बड़ा सार्वजनिक समारोह था। समुद्रतटवर्ती हेगके जूहू शेवेनिंगेनके कूरहाउस होटलमें नेदरलैण्ड उद्योगसंघकी ओरसे इनफार्मल ईवीनिंग पार्टी थी। इसमें हालैण्ड भरके सभी बड़े बड़े उद्योगपति बुलाये गये थे। भारतीय राजदूत श्री चक्रवर्तीका भारत-हालैण्ड आर्थिक सम्बन्धपर भाषण भी होनेवाला था। हालैण्ड छोटा-सा देश होनेके कारण देशके किसी कोनेसे भी हेग पहुँचनेमें ३-४ घंटेसे अधिक समय नहीं लगता इसलिए वहाँ देशभरके व्यापारी ६ घंटेकी पूर्व सूचना पर भी किसी भी एक जगह एकत्र हो सकते हैं।

यूट्रेक्टसे हम वापस हेगमें होटल डे सां आये तो मेरे नाम एक चिट पड़ी थी। उसमें लिखा था कि काशीके श्री मलकानी सवेरे ९॥ बजे मुझसे मिलनेके लिए आये थे, वे फिर आयेंगे।

मैं कपड़े बदलकर कमरेमें आराम कर रहा था और आश्चर्यके साथ सोच भी रहा था कि ये कौन मलकानी हैं कि श्री प्रीतम मेरा कमरा खोजते हुए अपने एक फिनिश दोस्तके साथ आ ही पहुँचे। बनारस टीचर्स ट्रेनिंग कालेजके भूतपूर्व प्रिंसपल श्री मलकानीके ये सबसे छोटे पुत्र, सुश्री हरदेवी मलकानीके सबसे

छोटे भाई हैं। छोटे, नाटे, रंगमें डच लोगोंमें खप जानेवाले, पर कदमें डच लोगोंकी दृष्टिसे असाधारण नाटे इन्होंने जब अखबारोंमें पढ़ा कि बनारसका कोई खाडिलकर नामका पत्रकार स्वदेशसे ५-६ हजार मील दूर हालैण्डमें आया है तो समाचार पढ़ते ही बिना मिले ही उन्होंने मुझसे दोस्ती कर ली। बनारसका नाम ही ऐसा है। विदेशमें जहाँ जहाँ दो बनारसी एक जगह हो जाते हैं, केवल एक शहरमें आनेकी खबरसे ही दोनोंमें दोस्ती हो जाती है। बनारसी आदमी बड़ा स्वतन्त्रताप्रिय होता है। विदेशका, नियमोंमें जकड़ा जीवन उसे कभी पसन्द नहीं आता। गमछा, साफा और पानपत्तेलोके बिना उसे चैन नहीं पड़ता। इसीलिए दो बनारसियों-में जितनी जल्दी अपनापन पैदा हो जाता है उतना और किसी शहरके दो लोगोंमें नहीं होता होगा।

प्रीतमने मेरे कमरेमें घुसते ही टेबुलपर पड़ी सुपाड़ी, सरौते और इलायचीपर हमला बोल दिया। कई महीनेके बाद उसे ये चीजें मिली थीं। वह एम० आर० ए० (मारल रीआर्मामेण्ट) के दलके साथ काम कर रहा था। यूरोपके कई देशोंमें दलके साथ रहकर उन दिनों हालैण्ड आया था। घण्टों बनारसके बारेमें बात हुई। उसके फिनलैण्डवासी दोस्तको भी विश्वास हो गया कि बनारस नाममें कोई जादू अवश्य है। नहीं तो ये दोनों पहली बार मिलनेवाले प्राणी ऐसे बात कर रहे थे जैसे वर्षोंसे दोस्त हों।

शामको ६॥ बजे हमको शेवनिंगेन पहुँचना था, इसलिए हम तैयार हो गये। ५ तारीखको हम वहाँ खाना खा आये थे। आज दूसरी बार हेगके उस जूहूमें हम जा रहे थे।

कूरहाउसमें आज हालैण्डमें रहनेवाले सभी भारतीय बुलाये गये थे। इसलिए वहाँ बहुतसे नये लोगोंसे परिचय हुआ। खाने-का इन्तजाम 'बूफे' था यानी टेबुलोंकी कतारपर खानेकी चीजें रखी गयी थीं। हर एक आदमी प्लेट लेकर अपने लायक चीजें

ले लेकर खाता जाता था। परोसनेका झंझट नहीं था। आज महत्वके भाषण थे। पर भाषणोंके पहले भी खानेका इन्तजाम था और भाषण सुनकर फिर भूख लगे तो फिर खा सकते थे।

समारोहमें सौ सवासौसे भी अधिक लोग आमंत्रित थे। मुख्य अतिथि भारतीय राजदूत श्री चक्रवर्ती और हम छ भारतीय पत्रकार थे। भारतीय दूतावासके सभी भारतीय कर्मचारी तथा हालैण्डमें पढ़नेवाले दो दर्जन भारतीय छात्र भी निमन्त्रित थे। इन छात्रोंमें कुमारी एस० खरे, कुमारी सुदर्शन मल्होत्रा, कुमारी सारा मथाई, श्रीमती मंजुला मजुमदार और कुमारी कामिनी साहनी ये छात्राएँ भी थीं। श्रीमती चक्रवर्ती भी आयी थीं। दूतावासके सिख कर्मचारियों और साड़ियाँ पहनी हुई भारतीय छात्राओंके फोटो फोटोग्राफर बड़े शौकसे, पर नम्रताके साथ ले रहे थे। भारतीयोंके अतिरिक्त डच सरकारी अधिकारी, प्रमुख समाचारपत्रोंके सम्पादक, व्यापार-मंडलके अधिकारी और सभी प्रमुख कारखानोंके संचालक-व्यवस्थापक पार्टीमें बुलाये गये थे। छोटे देशमें एक ही पार्टीमें देशभरके सभी बड़े लोगोंकी मुलाकात एक साथ हो जा सकती है, यह सुविधाकी बात होती है।

आजके समारोहके सभापति उद्योग-संघके उपाध्यक्ष श्री सिमोनिस थे। नेदरलैण्ड-भारत आर्थिक सम्बन्धपर नेदरलैण्डकी ओरसे फिलिप्स कम्पनीके एक संचालक श्री एफ० जे० फिलिप्सने और भारतकी ओरसे भारतीय राजदूत श्री बी० एन० चक्रवर्तीने भाषण किये। आज ही श्री मणिकी 'वर्षगाँठ' थी। इस बातकी चर्चा भाषणोंमें भी हुई और श्री मणिकी आयुर्वृद्धिके लिए लोगोंने शुभ कामनाएँ प्रकट कीं। यूरोपमें वर्षगाँठका बड़ा महत्त्व रहता है। छोटे बालकसे लेकर बड़ों तकके जन्म-दिनोंपर और बड़ोंके भी विवाहके वर्षदिनोंपर लोग बधाइयाँ देते हैं और तरह-तरहसे शुभ कामनाएँ प्रकट करते हैं।

आज जो भाषण हुए वे हमारी यात्राके उद्देश्यके सूचक थे। यह हमारी हालैण्ड-यात्रामें पहला महत्त्वका सार्वजनिक समारोह था और हमें हालैण्ड-यात्राके लिए निमन्त्रण देनेवालोंका उद्देश्य आजके कार्यक्रमसे स्पष्ट हो जाता था।

हालैण्डको बाहरके लोग कृषि-प्रधान देश समझते रहे हैं—दूध-मक्खनकी बहुलताका वह देश माना जाता रहा है। आज भी वह दूध-मक्खनसे भरा है, पर अब हम उसे कृषि-प्रधान नहीं कह सकते। अब वह उद्योग-प्रधान हो गया है। हालैण्डका क्षेत्र-फल १५ हजार वर्गमीलके लगभग है यानी हमारे बनारस और गोरखपुर डिवीजनोंके १० जिलोंके बराबर या मिरजापुर जैसे बड़े जिलेके तीन जिलोंके बराबर इसका क्षेत्रफल है। आबादी १ करोड़ हो गयी है। प्रति वर्ष यह १ लाखके हिसाबसे बढ़ रही है। लोग रोमन कैथलिक धार्मिक विचारके अधिक होनेके कारण 'सन्तान-निग्रह'को पाप समझते हैं। सरकार भी बड़े परिवारवालों को अधिक आर्थिक सुविधाएं देती है। आबादी इसीलिए तेजीसे बढ़ रही है। इस बढ़ती हुई आबादीके पालन-पोषणकी व्यवस्था एक ही प्रकारसे हो सकती है और वह प्रकार है देशके बड़े और भारी उद्योगधंधोंको तेजीसे बढ़ाना। हालैण्ड यही कर रहा है। उसके उद्योगधन्धे तेजीसे बढ़ रहे हैं। उद्योगधन्धे और कल-कारखाने बढ़नेपर उनके लिए बाजार चाहिये। हालैण्डका बाहरी साम्राज्य हिंदेशियाके स्वतन्त्र होनेके कारण समाप्त हो गया। जो कुछ प्रदेश अब भी बचा है वह भी स्वतन्त्रताके मार्गपर ही है। इसलिए नये-नये देशोंसे हालैण्डको व्यापार-सम्बन्ध बढ़ाने हैं। नये व्यापार-सम्बन्ध नये आधारपर ही बढ़ सकते हैं। यह बरा-बरीका आधार है। नये व्यापार-सम्बन्धके लिए देशोंमें सद्भाव-वृद्धि होना जरूरी है। देशोंके व्यापारियों, शासकों, पत्रकारों आदिका परस्पर आदान-प्रदान होता है तो सद्भाववृद्धि भी होती

है। इसीलिए हालैण्डने पिछले वर्ष पाकिस्तान और इस वर्ष भारतके पत्रकारोंको निमन्त्रित किया।

हालैण्ड-भारत उद्योग-सम्बन्ध

हालैण्ड और भारतके साढ़े तीन सौ साल पहले स्थापित प्राचीन सम्बन्धके बारेमें अलगसे एक अध्याय पुस्तकके अन्तमें परिशिष्ट में दिया गया है। यह प्राचीन सम्बन्ध भी व्यापारके उद्देश्यसे ही स्थापित हुआ था। आज भी हालैण्ड और भारतमें अच्छा व्यापार होता है। एशियामें हिंदेशियाके बाद सबसे अधिक हालैण्डका व्यापार भारतके साथ ही होता है। फिर भी यह व्यापार भारतीय निर्यात व्यापारका केवल १·८ प्रतिशत है। भारतने हालैण्डसे मशीनें आदि अधिक मँगानी शुरू की हैं। पर हालैण्डका भारतके साथ व्यापार तभी और बढ़ सकता है जब वह भारतसे और अधिक कच्चा माल खरीदने लगे। अब व्यापार शोषणके लिए नहीं हो सकता, परस्पर आवश्यकतापूर्ति और परस्पर नयी आवश्यकताओंके निर्माणके ही आधारपर अब व्यापार-वृद्धि हो सकती है। भारत हालैण्डको पाट, वस्त्र, तेल-तेलहन, चमड़ेकी चीजें, तम्बाकू, कच्चा लोहा तथा अन्य खनिज पदार्थ दे सकता है। चाय, मसाले, सिल्क, हाथी दाँत और धातुपर नक्काशीके काम की हुई चीजें हालैण्ड अधिक मात्रामें भारतसे मँगा सकता है।

इधर हालके ३-४ वर्षोंमें भारतने हालैण्डसे मालगाड़ीके १००० डब्बे, रेलके टिकट छापनेके लिए ५०० टन कार्डबोर्ड, १२०० टन दूध पाउडर, छिछले पानीमेंसे मिट्टी निकालकर गहरा करनेवाले जहाजी यन्त्र, २६५ मील लम्बे टेलिफोन केबल आदि खरीदे। दलदलवाली जगहसे पानी हटाकर उस भूमिको रहने योग्य बनानेमें डच इंजीनियर बड़े कुशल होते हैं। ऐसे कई इंजीनियरोंको भारतने अपने यहाँ बुलाया है। कलकत्तेके पासका खारे पानीका दलदल साफ करनेके लिए एक डच कम्पनीको ठेका दिया गया

है। सुप्रसिद्ध फिलिप्स कम्पनीने कलकत्तेके पास बिजलीके बल्ब, रेडियो आदि बनानेका एक कारखाना खोला है। कल-कारखाने खोलनेके लिए भारतमें उच्च पूँजी लगानेकी पूरी गुंजाइश है। यूट्रेक्टके वर्कस्पूर कारखानेसे भारतीय चीनी मिलें बहुत-सी मशीनरी मँगाती रहती हैं।

÷ ÷ ÷

आजके समारोहके अन्तमें श्री मणिने भी भाषण कर धन्यवाद दिया। उनके भाषणका बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा। आजके समारोहका उपयोग बादकी हमारी यात्रामें बहुत सहायक हुआ क्योंकि बादमें जहाँ जहाँ हम गये वहाँ वहाँके लोग आजके समारोहमें उपस्थित थे और वे भारतीय पत्रकार दलके बारेमें बड़ी अच्छी राय लेकर अपने-अपने स्थान वापस गये।

१३—सुन्दरतम शहर राटरडम

(९ अप्रैल १९५४)

आज हमारा राटरडमका दिन भरका कार्यक्रम था। राटरडम हालैण्डका दूसरे नम्बरका सबसे बड़ा शहर है। आम्सटर्डमकी आबादी ९ लाख, राटरडमकी ९ लाख और इसके बाद हेगकी ६ लाख है। राटरडमका बन्दरगाह यूरोपका सबसे अच्छा और सबसे बड़ा बन्दरगाह समझा जाता है। दूसरे महायुद्धमें राटरडमको जर्मन विमानोंने नष्ट कर डाला था, पर इतने थोड़े समयमें ही फिर, पहलेसे भी अधिक अच्छा, बन गया है। कहीं-कहीं अब भी खंडहर बचे हैं जो महायुद्धके समयकी याद दिलाते हैं।

राटरडम पश्चिमी यूरोपका सबसे बड़ा बन्दरगाह है। दुनियाके बड़े बन्दरगाहोंमें न्यूयार्क और लंदनके बाद इसीका तीसरा नम्बर आता है। राटरडम शहर आज हालैण्डका दूसरे नम्बरका शहर है पर यह इतनी तेजीसे बढ़ रहा है कि बहुत शीघ्र यह आम्सटर्डमसे भी बड़ा हो जायगा। प्रकृतिकी कृपा राटरडमपर विशेष रूपसे है। मास और राइनके मुहानेपर यह स्थित है। समुद्रतट तथा दो-दो नदियोंका मुहाना होनेके कारण यूरोपके देशी और विदेशी दोनों व्यापारोंके बीच पुलका काम करता है। राइन नदी स्विट्जरलैण्डकी सुरम्य झीलोंसे निकलती है। इसलिए दक्षिणमें स्विट्जरलैण्डसे लेकर उत्तरमें बाल्टिक तकका व्यापार राटरडम होकर होता है। जैसे-जैसे जर्मनीका उद्योगीकरण वृद्धिंगत होता जायगा, राटरडम भी उतनी ही तेजीसे बढ़ता जायगा। हालैण्ड इसीलिए जर्मनीके प्रति कटुता रख नहीं सकता क्योंकि हालैण्ड जर्मनीकी महत्त्वपूर्ण रक्तवाहिनीका काम करता है।

राटरडममें उत्कृष्टतम और आधुनिकतम इमारतें बनी हैं। स्थापत्यकलाका, शिल्पकलाका, वास्तुकलाका खुला प्रदर्शन ही राटरडम नगरको समझिये। राटरडमका बन्दरगाह कितना व्यस्त रहता है इसका अंदाज आँकड़ोंसे तो हो सकता है, पर बिना प्रत्यक्ष देखे कोई आदमी यह ठीक-ठीक कल्पना भी नहीं कर सकता कि हजारों लाखों टन सब तरहका सामान किस प्रकार रोज सबेरेसे राततक यहाँ आता रहता, उतरता रहता और गंतव्य स्थानके लिए रवाना होता रहता है। हजारों मजदूर काम करते हैं, पर कहीं हल्लागुल्ला नहीं, कहीं देर नहीं, कहीं चोरी नहीं, धोखेबाजी नहीं, सरकारी चुंगी कर्मचारियोंकी धाँधली नहीं, जैसे सब कुछ मशीनकी तरह होता है। राटरडमको इसीलिए मुक्त से भी अधिक मुक्त (फ्रीयर दैन फ्री) बन्दरगाह कहा जाता है।

द्वितीय महायुद्धकालमें जो कुछ नुकसान राटरडमको हुआ था वह ४-५ सालके अन्दर ही पूरा हो गया। जो कुछ नष्ट हुआ था, वह नया, पहलेसे भी अच्छा, बन गया। 'स्ट्रेन्थ थ्रू स्ट्रगल' यह नया प्रतीक वाक्य शहरके प्रतीक चिह्नमें जोड़नेकी अनुमति इसी-से महारानीने दी। इस समय राटरडममें २१,१०० गज लम्बा किनारा समुद्रगामी बड़े जहाजोंको ठहरने—माल उतारने और १२७७९ गज नदियों-नहरोंमें यूरोप महादेशके अन्दर जानेवाले बजड़ों, छोटे जहाजोंके उपयोगके लायक है। किनारोंपरके २६० क्रेन, ८६ तैरते क्रेन, १३ माल उतारनेके पुल, २६ तैरते गल्ला ढोनेके एलेवेटर, २० तैरते सूखे डक, बन्दरगाहमें हैं। सामान रखनेके गोदामोंकी ५४ लाख वर्गफुट बँधी और ३९ लाख वर्गफुट खुली जगह है। लगभग २ लाख टन गल्ला बन्दरगाहके गोदामोंमें रह सकता है। २५ लाख टन खनिज तेल और ३ लाख टन खाद्य तेल रहने लायक टंक इस बन्दरगाहमें हो गये हैं। ऐसी व्यवस्था है कि २४ घण्टेमें १ लाख टन वजनका सामान यहाँ जहाजोंपरसे उतारा जा सके। दुनियाभरकी २०० जहाजी कम्पनियोंके जहाज इस बन्दरगाहमें आते हैं। १९५२ में १६ हजारसे अधिक समुद्र-गामी जहाज सालभरमें इस बन्दरगाहमें आये और ४ करोड़ टन वजन माल साल भरमें उतारा गया। इसमें एक तिहाई तो केवल खनिज तेल ही था। इन बड़े जहाजोंके अतिरिक्त २ लाख बजड़े साल भरमें राटरडममें आते हैं।

राटरडम बन्दरगाहका आधा उपयोग हालैण्ड द्वारा और आधा पश्चिमी यूरोप द्वारा होता है। युद्धकालमें जर्मन बमवर्षासे शहरके ११ हजार मकान भी नष्ट हो गये थे। इसके बाद नये मकान शहरके बाहरी भागोंमें बनाये गये और योजनानुसार नया सुन्दर शहर बनने लगा। दुनिया भरका सारा इमारती सौन्दर्य आज राटरडम शहरमें आ गया है। नगर-सभा नहीं चाहती थी

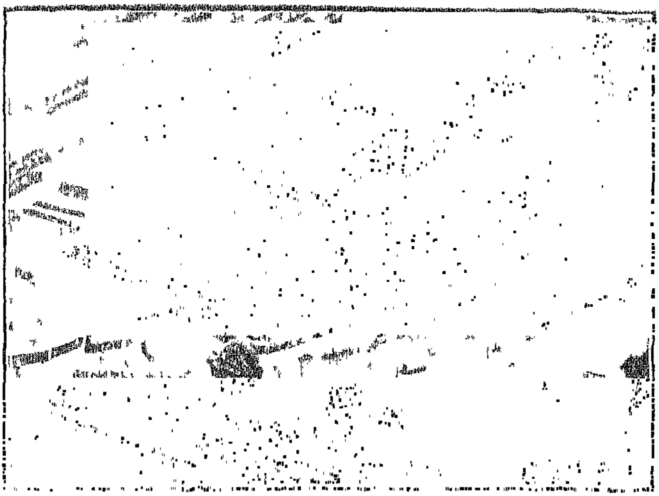
कि शहरमें ७ लाखसे अधिक आबादी हो, बढ़ती जन-संख्याके लिए शहरके बाहर वह व्यवस्था कर रही है पर आबादी बढ़ती ही जा रही है। कल-कारखानोंके लिए भी दो क्षेत्र निश्चित कर दिये गये हैं। सांस्कृतिक चहल-पहलके लिए भी पूरी गुंजाइश रखी गयी है।

बन्दरगाहके लायक ही बड़ा रेलवे स्टेशन राटरडममें हैं, रेलवे साइडिंगोंकी लम्बाई सवासौ मील होगी। सालभरमें २ लाखसे अधिक मालके डब्बे यहाँसे रेलोंपर माल ढोते हैं। बन्दर-गाहसे बड़ी बड़ी खूब चौड़ी पक्की सड़कें यूरोपके सभी शहरोंकी ओर जाती हैं।

वैसे तो सारा राटरडम नगर ही आधुनिक भवन निर्माण-कला और शिल्पकलाका एक विस्तृत और खुला प्रदर्शन लगता है, फिर भी उसकी २-३ खास इमारतों और रचनाओंका ही वर्णन हम यहाँ करेंगे। इनमेंसे एक होलसेल ट्रेड बिल्डिंग है जो यूरोपकी सबसे बड़ी इमारत कही जा सकती है।

होलसेल ट्रेड बिल्डिंगको हम 'वाणिज्य-महल' कह सकते हैं। हालैण्डके बड़े-बड़े उद्योगपति और व्यवसायी सरकारी दबाव या कानून न होते हुए भी अनुभवसे और स्वहितके हेतु सहयोगसे काम करना सीख गये हैं, इस बातका भी यह 'वाणिज्य-महल' दर्शनीय सबूत है। १५० थोक व्यापारियोंके लिए एक ही इमारतमें दफ्तर और गोदाम, दूकानें आदि इसमें बनी हैं।

यह वाणिज्य महल ६ सालमें बन गया और ३ जून १९५३ को हालैण्डकी महारानीने इसका उद्घाटन किया। यह इमारत ७२२ फुट लम्बी, २७९ फुट चौड़ी और १३१ फुट ऊँची है। इमारतमें ९ मंजिलें हैं। ७ वीं मंजिलकी जगह विदेशी व्यवसा-इयोंको दी गयी है। गचपर बगीचा है, रेस्टराँ है और एक थियेटर भी है। हम लोग राटरडमकी इस सबसे ऊँची इमारतकी



राटरडमका ४ करोड़का 'वाणिज्य महल' (पृ० ७६)



राटरडमकी सबसे ऊँची इमारतकी छतपर श्री मणि और
इस पुस्तकका लेखक (पृ० ७७)

गचपर जाकर चाय पी आये। वहाँ जो फोटो खींची गयी उसमें एकमें मैं और मणि इस तरह खिंच आये जैसे जान बूझकर हम लोगोंने वह फोटो खिंचवायी हो। हम जब गये तो बगलके थियेटरमें एक फैशन-शो हो रहा था और सैकड़ों महिलाएँ अपनी अच्छीसे अच्छी फैशनकी पोशाकें पहनकर वहाँ एकत्र हुई थीं। हम चाय पी रहे थे तभी शो खतम हुआ और ये सैकड़ों पुतलियाँ बाहर निकल आकर रेस्टोराँमें बैठकर चाय पीने लगीं। सबसे ऊँची इमारतकी छत, बगलमें बाग और इर्दगिर्द सैकड़ों सुन्दरियाँ बैठ गयीं—इस तरह वहाँ स्वर्गका-सा समाँ बँध गया।

वाणिज्य-महलके अन्दर ही चक्करदार १ मील लम्बी सड़क बनी है जो तीन मंजिल ऊपर तक चली जाती है। तीन मंजिल तकके गोदामोंमें सीधे मोटर और ट्रकें ले जाकर माल उतारा जा सकता है। ४० बिजलीकी बड़ी बड़ी लिफ्टें सामान ढोनेके लिए हैं। इस इमारतको बनाने और सजानेमें करीब ४ करोड़ रुपया खर्च हुआ।

'वाणिज्य-महल' राटरडमकी सबसे प्रेक्षणीय इमारत है।

४ करोड़के वाणिज्य-महलकी तरह २ करोड़का 'मास टनेल' भी राटरडमका एक आश्चर्य है। राटरडम नगर समुद्र किनारेसे १६ मील दूर पूर्वमें है और किनारेपर स्थित हूक ऑफ हालैण्डसे मास नदीके पाटमें जहाज घुसते हैं। यहाँ गहराई भाटेके समय भी ३० फुट रहती है। मास नदीके दोनों तटोंपर राटरडम नगर है। यह नगर पश्चिमकी ओर बढ़ता जा रहा है। दोनों तटोंको मिलानेके लिए शहरके पूर्वी भागमें एक पुल है, कई स्टीमर फेरियाँ भी हैं, पर इतनेसे काम नहीं चलता था, हमेशा आवागमन रुक जाता था, जैसा अब भी आम्सटर्डममें होता है। इसीलिए पुराने पुलके पश्चिममें एक और पुलकी आवश्यकता हुई। यदि नदीके ऊपर पुल बनाया जाता तो बड़े बड़े जहाज फिर

पुलके पश्चिममें ही रोकने पड़ते इसलिए पानीके ऊपर पुल न बनाकर नीचे सुरंग बनाना तै हुआ। फरवरी १९४२ में ही इसका उद्घाटन हुआ। यह सुरंग ३५१० फुट लम्बी है जिसमेंसे १८०४ फुट प्रत्यक्ष पानीके नीचे है और बाकी किनारेके दोनों ओर। इतनी बड़ी है कि एक घण्टेमें ६००० मोटरें, १६ हजार साइकिल सवार और ७२ हजार पैदल चलनेवाले इसमें बिना किसी रुकावटके आ जा सकते हैं। इंजीनियरीका यह अद्भुत नमूना है। नदी तलके ५ फुट नीचे कंकरीटकी यह बहुत ही सुन्दर और प्रशस्त भूमिगत सड़क है।

मास टनेल तथा होलसेल बिल्डिंगके अतिरिक्त, लाइनबान आधुनिकतम दूकानोंका चौक, बाइजमान म्यूजियम, ब्लाइजडार्प जू और बाऊसेण्ट्रम (इमारतकेन्द्र) भी देखनेकी चीजें हैं। बाऊसेण्ट्रममें आधुनिकतम इमारतोंके नमूनोंका अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शन, खोज विभाग और सूचनाकेन्द्र है। ब्लाइजडर्प जू यूरोपका सबसे सुन्दर चिड़ियाघर है। बाइजमान म्यूजियममें पुराने चित्रकारोंकी कृतियाँ सबसे अधिक संख्यामें हैं। लाइनबान चौक पिछले साल १९५३ में ही बना है। इस चौकमें ६६ बड़े-बड़े स्टोर हैं और सैकड़ों अन्य दूकानें हैं।

राटरडमसे हम लोग ४ बजे लौट आये। ५ बजे भारतीय राजदूतके वासस्थानपर स्वागत-समारोह था। कल जो लोग कूर हाउसके समारोहमें आये थे वे सब तो थे ही, पर विदेशी राजदूत भी सभी आज अपनी-अपनी पत्नियोंके साथ आये थे। राजदूत श्री चक्रवर्ती, उनकी पत्नी तथा हम ६ पत्रकारोंने सभी आगतोंका हाथ मिलाकर स्वागत किया। इसके बाद आधा-पौन घंटे तक खड़े-खड़े ही सब लोगोंने 'पान' किया और रवाना हुए। कोई भाषण नहीं हुआ।

१४—विद्या-केंद्र लायडनमें

(१० अप्रैल १९५४)

आज हालैण्डके विद्या-केन्द्र लायडन नगरमें जानेका हमारा कार्यक्रम था। १० बजे हम हेगसे मोटरमें १५ मील दूर स्थित इस विद्यापीठके नगरमें पहुँच गये। सबसे पहले पौर्वात्य प्रकाशक ई० जे० ब्रिल कम्पनीमें हम गये। इनके छापाखानेमें दुनियाभरकी भाषाओंकी पुस्तकें छापनेकी व्यवस्था है। हिन्दी टाइप भी यहाँ हैं। इन्होंने प्रेमचंदके सप्तसरोज कहानी-संग्रहका डच अनुवाद हालमें छापा है। इनके पुस्तक भंडारमें भारतकी बहुत-सी पुस्तकें बेचनेके लिए रखी थीं। काशीके भार्गव बुकडिपोके हिन्दी-अंग्रेजी कोशकी बहुत-सी प्रतियाँ वहाँ दिखाई दीं।

ब्रिलकी संस्था तीन सौ साल पुरानी है। ब्रिलकी दूकानसे हम लाइडन विश्वविद्यालयकी लाइब्रेरीके पूर्वी विभागमें गये। यहाँ संस्कृत, तमिल आदिकी बहुत-सी प्राचीन पांडुलिपियाँ प्रदर्शित हैं। तमिलमें ताड़पत्रपर एक फलितज्योतिषकी पुस्तक वहाँ रखी थी। जो भी पन्ना आप खोलिये और उसपर लिखा भविष्य पढ़िये, वह उस दिनका आपका भाग्य होगा। श्रीधरानीने एक पन्ना खोला, शास्त्रीने बहुत मुश्किलसे उस पन्नेका पुरानी तमिलमें लिखा मजमून पढ़ा। श्रीधरानीके भाग्यमें उस दिन लिखा था कि आपको एक कन्याकी प्राप्ति होगी !! लाइब्रेरीमें एक अंतर्राष्ट्रीय 'कौन क्या' 'हूज हू' में श्रीधरानीका भी परिचय था जिसे देखकर दो मुट्ठी मांस उनके शरीरपर और चढ़ गया।

१५—भारतीय छात्रोंके बीच

(११ अप्रैल १९५४)

आज रविवार है इसलिए सरकारी कार्यक्रममें आज हमारे लिए छुट्टी थी। पर एक गैरसरकारी कार्यक्रम आज था। हालैण्डके विश्वविद्यालयोंने मिलकर अन्तर्राष्ट्रीय सहयोगके उद्देश्यसे एक पीठकी अलग स्थापना की और उसकी ओरसे हेगमें इन्स्टीट्यूट आफ सोशल स्टडीज खोला गया है। इसमें विदेशोंके ३-४ दर्जन छात्रोंको वे वजीफे देकर बुलाते हैं। १९५२ से इसका प्रारंभ हुआ है। इस वर्ष इसमें भारतीय और पाकिस्तानी छात्रोंकी संख्या २४ और ९ है। एक सिंहली लड़की भी आयी है। कुल मिलाकर ५३-५४ में ४५ विदेशी छात्र यहाँ थे। हम लोगोंके होटलके पास ही एक पुराने राजमहलको होस्टल बनाकर यह इन्स्टीट्यूट खोला गया है। छात्रोंमेंसे भारत, पाकिस्तान और लंकाके छात्रोंने मिलकर एक अलग संस्था नेदरलैण्ड-इण्डिया-पाकिस्तान-सीलोन सोसाइटी बनायी है। इसी सोसाइटीकी ओरसे आज हम लोगोंको लंच था। ११ बजे हम लोग मोलेन स्ट्राट पहुँच गये। इन्स्टीट्यूटके भारतीय छात्रोंसे दो दिन पहले कूरहाउसमें मुलाकात हो चुकी थी। यहाँ सबसे खुलकर बात-चीत हुई। भारतीय छात्रोंने शिकायत की कि भारतीय दूतावास वाले उनकी उतनी खोजखबर नहीं लेते जितनी पाकिस्तानके दूत श्री बुखारी पाकिस्तानी छात्रोंकी लेते हैं। वे खुद अक्सर इन्स्टी-ट्यूटमें आते हैं और पाकिस्तानी छात्रोंकी बहुत सहायता करते हैं। (बेगम लियाकतअली अब हालैण्डमें पाकिस्तानकी राज-दूतिका नियुक्त की गयी हैं।) ५-६ भारतीय छात्राएँ भी यहाँ

हैं, पर उनके रहनेका इन्तजाम छात्रोंके होस्टलसे अलग है। यहाँ मेरी मुलाकात २-३ ऐसे बंगाली छात्रोंसे हुई जो पहले कभी काशीमें बंगालीटोलेमें रहते थे, पर अब सरकारी नौकरी या शिक्षाके लिए कलकत्ते चले गये हैं। उन्नावके श्री विश्वम्भरदयाल त्रिपाठीके सुपुत्रसे भी यहाँ मुलाकात हुई। जयपुरके कोई श्री गुप्त मुझे अपने कमरेमें ले गये।

लंच बहुत सादा, पर ग्राह्य था। यहीं मेरी श्री बर्वे नामके एक डच युवकसे मुलाकात हुई। ये हिन्दी और भोजपुरी बोल लेते थे। सुरीनाममें रहनेके कारण इन्होंने इन भाषाओंको पढ़ना शुरू किया था। हिन्दी बहुत शुद्ध बोलनेका प्रयत्न करते थे। आजकल लायडन विश्वविद्यालयमें जातिशास्त्रके म्यूजियममें काम करते हैं।

इन्स्टीट्यूटमें लंचमें श्री प्रीतम मलकानी भी आये थे। हम लोग लंचके बाद शेवेनिंगेन गये। आज रविवार होनेके कारण तथा धूप निकल आनेके कारण शेवेनिंगेनपर मेला लगा था। इतनी मोटरें थीं कि उनको पैदल आदमियोंसे भी धीरे-धीरे चलना पड़ता था।

यूरोपके समुद्रतटवर्ती ठंढे देशोंमें जिस दिन धूप निकल आती है उस दिनको लोग दिवालीका दिन मानते हैं। यह दिन अगर रविवार रहा तब तो शेवेनिंगेन जैसे समुद्रतटपर मेला लग जाता है। हालैण्डके ग्रीष्मका सम्भवतः आज पहला धूप निकलनेवाला रविवार था। शेवेनिंगेनके रेस्टोराँ भी दिनभर भरे रहे। मुश्किल-से हम लोगोंको एक रेस्टोराँमें एक टेबुल मिला। चाय वगैरह पीकर हम शामको होटल लौट आये।

१६—रेडियो नगरी हिल्वरसम—सुगन्धिका शहर आर्हेम

(१२ अप्रैल १९५४)

आज हमें हेगका होटल डे सां बिलकुल छोड़ देना था। सारे देशका चक्कर लगाकर २३ अप्रैलको हम हेग लौट आयँगे, पर तब हमें यहाँके दूसरे बड़े होटल विटेब्रुगमें ठहरना है, होटल डे सांमें अब हम न आयँगे। इसलिए हमने अपना सारा सामान बाँध लिया। जो कागज-किताबें आदि छोड़ सकते थे, होटल विटेब्रुग भेजनेके लिए कहकर वहीं छोड़ दिया। हालैण्डमें एक-एक नगर एक-एक बातके लिए छोड़ दिया गया है। हेग शांत राजनीतिज्ञोंके लिए राजधानीका काम करता है। राटरडम अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री और नहरी व्यापारकी राजधानी है। सुन्दर, सुन्दरतर और सुन्दरतम इमारतें यहाँ हैं। आम्सटर्डम हवाई व्यापारकी राजधानी है। लायडन विद्यापीठ है। उसी प्रकार हिल्वरसम रेडियोके लिए छोड़ दिया गया है। हेग, आम्सटर्डम या राटरडम इन तीनों बड़े शहरोंमेंसे किसीमें भी सार्वजनिक रेडियो स्टेशन नहीं है। हिल्वरसम हेगसे ५५ मील दूर उत्तर-पूर्वकी ओर है। आज हमें हिल्वरसम जाना है और वहाँसे ५५ मील दक्षिण-पूर्व चलकर देशकी पूर्वी सीमापर स्थित शहर शारबर्गेनमें हम रातभर ठहरेंगे। मोटरसे दो घंटेसे भी कममें देशके पश्चिमी छोरसे पूर्वी छोर तक जाया जा सकता है।

हालैण्डकी जनताके धार्मिक विश्वासोंपर आधारित जिस प्रकार वहाँकी राजनीतिक पार्टियोंका संघटन है उसी प्रकारसे स्कूल और रेडियो भी इसी सम्प्रदायमूलक आधारपर हैं।

हिल्वरसममें कई रेडियो स्टेशन हैं जिन्होंने आपसके सहयोगसे दिनका समय बाँट लिया है और धर्म-सम्प्रदायके अनुसार अपनेको विभाजित कर लिया है। इनके अलावा एक बड़ा स्टेशन है जो सबके लिए है। इसका नाम रेडियो नेदरलैण्ड इन्टरनेशनल सर्विस है।

१९४५ के पहले हालैण्डमें कोई बाकायदा रेडियो सरविस नहीं थी। वैसे फिलिप्स कम्पनीका जन्म-देश होनेके कारण, १९२७ से ही हालैण्ड शार्ट वेव ब्राडकास्टिंगका प्रारम्भ-केन्द्र था, पर ये ब्राडकास्ट आइण्डहावनसे (फिलिप्स कारखानेका शहर) होते थे। १९४५ में रेडियो नेदरलैण्ड इन्टरनेशनल सर्विसकी, सरकारी सहयोगसे, पर स्वतन्त्र फाउण्डेशनके रूपमें स्थापना की गयी। हालैण्डमें उद्योगोंके और सरकारके सामाजिक उद्देश्योंमें कोई फर्क न होनेके कारण सभी तरहकी औद्योगिक संस्थाओं और सरकारी हलचलोंमें इतना अधिक सामञ्जस्य रहता है कि आप एक दूसरेको अलग नहीं कर सकते, यद्यपि सिद्धान्तकी दृष्टिसे सब स्वतन्त्र रहते हैं। रेडियो नेदरलैण्डका भी यही हाल है।

यूट्रेक्टके दक्षिण एक छोटेसे ग्राम लोपिकको अब यहाँके लोग हालैण्डका रेडियो केन्द्र बना रहे हैं। रेडियो नेदरलैण्डके बड़े ट्रांसमिटर यहीं लगनेवाले हैं। आजकल रेडियो नेदरलैण्ड ६ भाषाओंमें—डच, अंग्रेजी, आफ्रिकान, अरबी, इंडोनेशियाई और स्पेनीशमें—दिन-रात २० घण्टे ब्राडकास्ट करता रहता है।

इस तटस्थ अंतर्राष्ट्रीय रेडियो स्टेशनकी बड़ी शानदार इमारतें हिल्वरसममें बन गयी हैं। 'एवरो' स्टूडियो उनका नाम है। सड़कके दोनों ओर इमारतें हैं और सड़कके नीचेसे दोनोंको मिलानेवाला रास्ता है। हमने ये इमारतें और स्टूडियो देखे तथा यहाँसे 'नार्डेन'के लिए रवाना हुए।

पुराने जमानेमें नार्डेन आम्सटर्डमकी पूर्वसे रक्षा करनेवाला दुर्ग था। अब यह सुगंधिका शहर बन गया है। रसायनशास्त्रका प्राविधिक औद्योगिक उपयोग यहाँ पूरा पूरा किया जाता है। हम यहाँ केमिकल इण्डस्ट्रीजकी प्रयोगशालाएँ और कारखाने देखने आये हैं। इस कारखानेमें ५० साल पहले ग्लिसरीन बनाना शुरू किया गया। उसके बाद सैकारिन (रासायनिक शकर), पेपरमिंट तेल, फलोंके एसेन्स बनाने शुरू किये गये। कहा गया है कि पानीके बाद सबसे अधिक उपयोगमें आनेवाला द्रव पदार्थ ग्लिसरिन है। वस्त्रोद्योग, स्याही, सौन्दर्य प्रसाधन और विस्फोटकों आदि विविध १५०० नरसंहारक और नरोपादेय वस्तुओंके बनानेमें ग्लिसरीनकी जरूरत होती है। साबुनके कारखानेसे इसका कच्चा माल मिलता है। दुनियाभरमें हर साल २-२। लाख टन ग्लिसरिन तैयार किया जाता है। कैफीन, बेनजाइक एसिड भी यहाँ बनता है। बेनजाइक एसिड और इसके लवण खाद्य पदार्थोंमें भी इस्तेमाल किये जाते हैं। फलोंके रस टिकाऊ बनाकर बड़े-बड़े मिट्टीके कुण्डोंमें यहाँ रखे थे। फलोंकी रासायनिक महकोंका उपयोग आजकल पेय पदार्थों, मुरब्बों, चाकलेट, मिठाई, आइसक्रीम आदिमें होता है। नार्डेनकी फैक्टरीमें तरह तरहके इत्रोंके लिए बहुत व्यापक खोज होती है। वहाँ हमने कस्तूरी, केशर तथा अन्य दुर्लभ सुगन्धियाँ प्रयोगके लिए रखी देखीं।

नार्डेन कारखानेकी एक शाखा बंगलोरमें भी है।

नार्डेनसे चाय पीकर हम लोग देशकी पूर्वी सीमाके पासके शहर शार्सबर्गेनके लिए रवाना हुए जो यहाँसे ५५ मील दूर है। यहाँ होटल कूनिंग्स व्याग्टमें २ दिन ठहरनेका हमारा इन्तजाम था।

१७—आर्नहेम—क्रोलरमुलर म्यूजियम

(१३ अप्रैल १९५४)

आज हमारा एक तरहसे 'बहरी तरफ' का प्रोग्राम था। आर्नहेम शहरके पास शार्सबर्गेन है और इसके आसपास मीलों जगह सुरक्षित जंगलकी तरह छोड़ दी गयी है। आर्नहेममें ही सरकारी मत्स्यपालन, भूमि-अन्वेषण और कृषि-नियोजनके कार्यालय और प्रयोगशालाएँ हैं। सबेरे हम लोग मत्स्यपालनका 'ट्राउट फार्म' देखने गये। शामको नेशनल पार्क 'होग वेल्यू' का मीलों चक्कर लगाया। इस सुरक्षित पार्कमें हिरन विचरते हैं और हालैण्डका सबसे वन्य पशु हिरन ही है। वहाँ शेर, हाथी, भालू शायद अजायबघरोंमें ही दो चार हों तो होंगे। नेशनल पार्कमें दूरसे हमें हिरनोंके झुंड दिखाकर हमारे मेजमान बहुत पुलकित होते थे, पर मुझे उन हिरनोंमें कोई रस नहीं आता था, कोई विशेषता नहीं दिखाई देती थी।

पार्ककी भूमि २३ वर्गमील है। इसके अन्दर ही एक 'क्रोलर मुलर म्यूजियम' भी है जिसमें प्रसिद्ध डच कलाकार पेण्टर फान गागकी दो सौ सत्तर कलाकृतियाँ संग्रहीत हैं। फान गागकी कृतियोंका सबसे बड़ा संग्रह यहीं है यद्यपि यहाँ अन्य कला-कृतियाँ भी बहुत-सी हैं।

श्रीमती क्रोलर मुलर नामकी एक धनी कलाप्रेमी महिलाका यह संग्रह है। उन्होंने १९३७ में इसे डच सरकारको समर्पित कर दिया। दो वर्ष बाद उनकी मृत्यु हो गयी। इस संग्रहालयमें लगभग १३०० पेटिंगें हैं। इनके अलावा शिल्पकारोंकी २७५

कृतियाँ, ४००० ड्राइंग, ११०० लिथोग्राफी, लकड़ीके काम, एचिंग, एनग्रेविंगकी कला कृतियाँ, कुछ चीनी जापानी तैलचित्र, चीनी मिट्टीके कलापूर्ण ५०० बर्तन और विविध कलाओंके सम्बन्धके १५०० ग्रन्थोंका एक पुस्तकालय है।

आर्नहेम जिस प्रांतकी राजधानी है उसका नाम गेल्डरलैण्ड है। हालैण्डसे सबसे अन्तमें जर्मन इसी शहरसे हटे थे। यहाँ मित्रराष्ट्रोंने हवाई जहाजोंसे सैनिक उतारे थे। आर्नहेमके ही एक होटलके कमरेमें जर्मन सेनापतिने अन्तिम आत्मसमर्पण किया था। मित्र राष्ट्रोंके जो हवाई सैनिक आर्नहेमकी लड़ाईमें मरे उनको यहीं दफनाकर एक बड़ा भारी कब्रगाह बनाया गया है। हमारे दलके डाक्टर नारायण मेननके एक युवक अंग्रेज मित्रका शव भी यहीं दफनाया गया है। वे उसे देखने गये थे और वहींसे उस मित्रकी माताको उन्होंने लिखा भी कि आपके पुत्रकी स्मृतिमें मैं अन्तर्राष्ट्रीय सिमेटरीमें उसकी कब्रपर फूल चढ़ा आया।

आर्नहेममें एक 'ओपन एयर म्यूजियम' है जहाँ हालैण्डकी तरह-तरहकी प्राचीन वेशभूषाओं, पवन चक्कियों, पुराने ढंगकी झोपड़ियों और देहाती पुरानी गाड़ियों तथा बर्तनों, फर्निचर और पुरानी कारीगरीका प्रदर्शन है। हालैण्डकी ग्रामीण संस्कृतिका इतिहास यहाँ देखा जा सकता है। ८२ एकड़में फैला हुआ यह प्रदर्शन-मैदान १९१२ में स्थापित हुआ था। हेगके मदुरोडैममें जहाँ हम आधुनिक हालैण्डके दर्शन करते हैं वहाँ आर्नहेमके इस म्यूजियममें ग्रामीण प्राचीन हालैण्डके दर्शन होते हैं। दुर्भाग्यसे हमें इसे देखनेका मौका नहीं मिला।

१८—वैज्ञानिक वक्ता—एन्केलाम

(१४ अप्रैल १९५४)

आज हम उत्तरकी ओर प्रस्थान कर रहे हैं। पहले यहाँसे १०० मील दूर एमेन शहर जायँगे और वहाँकी नाइलन फैक्टरी देखकर ४० मील और उत्तर स्थित ग्रोनिंजेन शहरमें आज रात हमारा पड़ाव रहेगा। एमेन जर्मन सीमाके पास ही है। हम अब हालैण्डके पूर्वी भागसे जा रहे हैं जो समुद्रकी सतहसे ऊँचा है। यहाँ नहरें और पानी उतना नहीं दिखाई देता जितना पश्चिमी या उत्तरी हालैण्डमें। वहाँ तो नहरों और नालियों, नदियोंकी सीधी रेखाएँ इतनी विस्तारके साथ फैली दिखाई देती हैं कि लगता है मानो कोई आकाशमें बैठकर हालैण्डकी भूमिपर भूमितिके सवाल हल कर रहा हो।

एमेन जाते समय हमने रास्तेमें खेतोंमें चल रहे तेलके बहुतसे पंप देखे। ये दिन रात जमीनसे तेल पंप कर पासकी तेल शोधक फैक्टरीमें पहुँचा रहे हैं। पता लगा कि यह तेलका सोता जर्मनी-की सीमाके अन्दर चला गया है और डच लोग चाहते हैं कि जर्मनीके अपनी सीमामें पंप लगानेके पहले ही इधरसे वे उधरका जितना तेल खींच सकें, खींच लें।

एमेनमें पहले हम म्युनिसिपल दफ्तरमें गये जहाँ बर्गोमास्टरने हम लोगोंका स्वागत किया। बर्गोमास्टरोंका वहाँ चुनाव नहीं होता, महारानी उन्हें नियुक्त करती हैं। एमेनके बर्गोमास्टरको लकवा मार गया था, फिर भी उनकी फुर्ती अजीब थी। उन्होंने हमें दफ्तरके तहखानोंमें ले जाकर वहाँ शहरके विस्तारके जो

बड़े-बड़े नक्शे टँगे थे उनको समझाया। एमेन शहरके विस्तारकी और यहाँकी एन्केलान फैक्टरीकी एक विचित्र कहानी है। हमने हालैण्डमें जो कुछ दर्जन दो दर्जन बड़े-बड़े कारखाने देखे उन सबमें एमेनके कारखानेका मेरे ऊपर सबसे अधिक प्रभाव पड़ा। इस कारखानेकी सफाई अद्भुत थी। इस कारखानेके संचालक अपने यहाँके श्रमिकोंके बारेमें जितना और जैसा सोचते हैं वह भी अद्भुत था।

एमेनमें एन्केलान फैक्टरी खोलनेके पहले दो बातोंका विशेष-रूपसे ध्यान रखा गया था। एमेनके आसपासके लोग पहले जमीनमेंसे पीट खोदनेका काम करते थे। पीट मिट्टीमेंसे लोहा निकलता है और उस जमीनमें आलूकी खेती होती है। वह अब पीट मिट्टी खतम हो रही है और एमेनमें बेकारी बढ़ रही थी। इन बेकारोंको नौकरीके लिए अन्यत्र न ले जाकर यहीं कारखाना खोलनेका निश्चय हुआ ताकि मजदूरोंको अपने घरबारके साथ हटना न पड़े।

दूसरी बात यह सोची गयी कि फैक्टरीमें शिफ्टोंमें जो मजदूर काम करते हैं उनके आनेजानेके समयके कारण उनके परिवारके लोगोंको क्या परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं। कारखानेमें काम करनेवाले मजदूरको केवल एक व्यक्ति मजदूर न मानकर, एक परिवारका प्रमुख सदस्य मानकर उसके बारेमें सारा विचार किया गया।

एमेन म्युनिसिपलिटीकी आबादी ६० हजार है। बेकारोंके पास काम ले आनेके उद्देश्यसे यहाँ जब एन्केलानका कारखाना खोला गया तो बाहरसे केवल १०० सुपरवाइजरी स्टाफ और १०० कुशल कारीगर सपरिवार आये। बाकी सारी भरती यहीं की गयी।

एन्केलान क्या चीज है ? नाइलानका ही डच नाम एन्केलान

रखा गया है। रसायन-उद्योगोंके कारण मनुष्यके दैनिक रहन-सहनमें कितना भारी परिवर्तन हो रहा है, यह हमारे ध्यानमें तभी आता है जब हम एन्केलान जैसे कारखानोंको देखते हैं।

नाइलानका उत्पादन वस्त्रोद्योगमें क्रांति कर रहा है। वस्त्र शब्दसे हम रूई, ऊन, और बहुत हुआ तो रेशम, कोकटी आदिके वस्त्र समझते हैं, पर रासायनिक वस्त्र रेयान बना और १९३८ के बादसे अब नाइलानने तो न केवल वस्त्रोद्योगमें, पर मनुष्यकी अन्य उपयोगी वस्तुओंकी बनावटमें भी क्रांति कर दी है। नाइ-लान जिस रासायनिक पदार्थोंसे बनता है उन्हींसे स्पंज, प्लास्टिक बनानेके टुकड़े या पाउडर, कागज बनानेका सेलूलोज आदि भी बनते हैं। नाइलानने प्लास्टिक और कागज उद्योगपर भी धावा बोल दिया है। नाइलान बनानेमें अमेरिकाकी ड्यू पाण्ट कम्पनी प्रसिद्ध है। इन रासायनिक वस्त्रोंके मूल द्रव्योंके जरासे हेरफेरसे और विभिन्न देशोंकी विभिन्न कम्पनियोंकी अपनी विशेषता रखनेके खयालसे दर्जनों नाम प्रचलित हैं। परलान (जर्मन) रोविल (फ्रेंच), विन्यान, केमस्ट्रैण्ड या एक्रिलान, आरलान, विनिलान, पालीथीन, सारान, टेरिलीन, ड्रेकान, रिलसान (फ्रेंच), फिलान (जर्मन), ग्रिलान (स्विस) और आमिलान (जापानी) ये कई नाम रासायनिक वस्त्रोंके लिए प्रसिद्ध हैं।

दुनियामें रूई और सूती वस्त्रोद्योगके बाद ऊनका नम्बर आता था, पर अब रेयान या रासायनिक वस्त्रने ऊनको पीछे ढकेल दिया है। सूती वस्त्रोद्योगको भी यह दबा रहा है। नाइलानके कपड़ोंको इस्त्री नहीं करना पड़ता। पानीमें निचोड़कर सुखा देनेसे साफ हो जाते हैं। सूती कपड़ोंमें भी जहाँ कपड़ा जल्दी फटता है नाइलन लगा दिया जाता है जिससे कपड़ा अधिक दिन तक टिकता है। हालैण्डमें नाइलानके री-इन्फोर्स्ड मोजे बिकते हैं।

कहते हैं कि ये २-२॥ साल तक फटते नहीं। क्योंकि उँगलियोंके पास और एड़ीके पास नाइलानके धागोंसे बुनाई करते हैं।

एन्केलान कारखाना देखकर हम लोग फिर मोटरोंमें उत्तरको ओर रवाना हुए। ४० मील दूर ग्रोनिंजेनमें शामको पहुँच गये। जिस होटलमें ठहरे वह शहर और बाजारके बिलकुल बीचमें है। ग्रोनिंजेनमें ठंढ भी दक्षिणसे अधिक थी।

१९—दुग्ध-पदार्थोंके कारखानेमें

(१५ अप्रैल १९५४)

ग्रोनिंजेन हालैण्डका धुर उत्तरका प्रान्त है। यह कृषिप्रधान है। राजधानीके शहरका नाम ग्रोनिंजेन ही है। आबादी सवा लाखके ऊपर है। ग्रोनिंजेन प्रांत दूध, दूधकी बनी चीजें और घोड़ोंके लिए प्रसिद्ध है। हमें रास्तेमें किसानोंकी गाड़ियाँ मिलती थीं जिनमें घोड़े जुते रहते थे। ये घोड़े इतने तगड़े रहते थे कि छोटे हाथीसे लगते थे। सामने आते थे तो डर लगता था। घोड़ोंके पुष्ट शरीर देखकर ईर्षा होती थी। दलित, पीड़ित और और सामाजिक क्रांतिकी कल्पना भी न करनेवाले सोच सकते हैं कि गरीब देशोंमें मनुष्यका जन्म लेनेसे हालैण्ड जैसे देशमें घोड़े और गायका जन्म लेना भी अच्छा है। यहाँके घोड़े घुड़दौड़ोंमें बहुत जाते हैं। ब्रिटिश शाही परिवारकी विक्टोरिया (टमटम)में ग्रोनिंजेनके ही घोड़े जुते रहते हैं। अस्तु

हम लोग आज सबेरे ही राजधानीसे ८ मील उत्तर बेडुम

नामक स्थानमें गये। यहाँ दूधकी बनी चीजें तैयार करनेका बड़ा कारखाना है। देहातसे आनेवाले दूधसे लेकर तैयार माल जहाज-पर लादे जाने तक सारी क्रिया एक ही कारखानेमें होती है। वेडुमकी कोआपरेटिव फैक्टरी आफ मिल्क प्राडक्टसकी बनी चीजें भारतमें भी बहुत मिलती हैं। मक्खन, पनीर, जमाया दूध, दूध पाउडर आदि यहाँसे दुनिया भरमें जाता है। यहाँकी 'फोर काऊज' (चार गायें) लेबुलवाली दूधकी बनी चीजें दुनिया भरमें प्रसिद्ध हैं। यहाँ बनी चीजें रखनेके लिए टिनके डब्बे भी यहीं मशीनसे बनते हैं। डब्बे बनाना, उसमें दुग्ध पदार्थ भरना, ढकने बंद होना, डब्बेपर लेबुल लगना आदि सब काम मशीनोंसे ही होता है।

बम्बईके होटलोंमें चायके लिए जो दूध पाउडर इस्तेमाल होता है वह हालैण्डका ही बना होता है। बम्बईकी आरे दुग्ध कालोनीकी स्थापनाकी योजना सम्भवतः वेडुममें ही बनी थी।

वेडुमका दुग्ध-पदार्थका कारखाना देखकर हम लोग २५ मील दूर ड्राक्टेन शहरके लिए रवाना हुए। ड्राक्टेनमें फिलिप्सने अपना एक कारखाना खोला है। ' ' पश्चिमी भागमें सभी बड़े-बड़े शहर बसे हैं। पूर्वी भाग कृषिप्रधान है, यहाँ अभी कारखाने कम हैं। इसलिए नये-नये कारखाने खोलनेके लिए बड़ी औद्योगिक संस्थाएँ देशके इस भागको पसन्द करने लगी हैं। यहाँ मजदूर भी सस्तेमें मिल जाते हैं। एमेनमें इसी वजहसे एन्केलान कारखाना खोला गया और ड्राक्टेनमें फिलिप्सने इसी कारण अपना नया कारखाना खोला। फिलिप्सके बड़े प्रधान कारखाने दक्षिण हालैण्डमें आइंडहावन नगरमें हैं।

फिलिप्सके कारखानेमें लड़कियाँ रेडियो सेट और फिलिशेव बना रही थीं। बिना साबुन, पानी, ब्लेडके बिजलीसे दाढ़ी बनानेका फिलिशेव यंत्र यहीं बनता है। हालैण्डमें ये फिलिशेव

बहुत चलते हैं। विमानोंमें दाढ़ी बनानेके लिए आजकल आम तौरपर ये ही 'उस्तुरे' काम आते हैं। हालैण्डके कुछ शहरोंमें होटलके कमरोंमें फिलिशेव लटकता रहता है। प्लग साकेटमें लगाया और ५ मिनटमें दाढ़ी बन गयी!

फिलिप्सका कारखाना देखकर हम लोग आइन्डेनसे १५ मील पश्चिम ब्राऊ शहरके लिए रवाना हुए। आज रातभर हमें वहीं ठहरना है। ब्राऊमें हमारा होटल एक नहरके किनारे बना है। लगता है कि हम जैसे किसी जहाजपर ही रह रहे हैं। बाहर ठंढ बहुत भयंकर है। होटलसे बाहर निकलना मुश्किल है। पर कमरोंमें सेण्ट्रल हीटिंग होनेकी वजहसे कोई तकलीफ नहीं।

२०—दुनियाका आठवाँ आश्चर्य (जाइडर जी बाँध)

(१६ अप्रैल १९५४)

हालैण्ड उर्फ नेदरलैण्डकी जो चीज दुनियाके आठवें आश्चर्यके रूपमें प्रसिद्ध है वही आज हमें देखनी है। नेदरका अर्थ 'लो' यानी निचला होता है। हालैण्डका आधा पश्चिमकी तरफका भाग समुद्रकी सतहसे नीचे बसा है। सैकड़ों वर्ष पूर्व इसपर समुद्र रहा होगा। डच लोगोंने इस समुद्रको रोककर सुखाकर जमीन बनायी और उस जमीनको फिर नयी बनाकर कृषि योग्य बनाया। इस प्रकार जहाँ सारी दुनियाको ईश्वरने बनाया, आधे हालैण्डको वहाँके मनुष्योंने बनाया। यही नहीं, समुद्रको हटाकर नयी नयी जमीन निकालनेका और उस खारी बलुई जमीनको कृषियोग्य बनानेका काम बराबर जारी है और सम्भवतः हमेशा जारी रहेगा। डच जनता घोर परिश्रमी है।

उसने खारे पानीके दलदलमें अपनी इंजीनियरीका पसीना मिला कर महल खड़े करनेका जादू कर दिखाया है। वह न केवल अपने लिए परिश्रम करती है, पर आगे आनेवाली पीढ़ियोंके लिए काम करती है, फिर चाहे अपने लिए उस कामसे कोई लाभ न भी होता हो। उसके घोर परिश्रमका फल यह हुआ है कि आज हालैण्ड—

(१) दुनियामें सबसे घनी आबादीका देश हो गया है;

(२) मनुष्यकी औसत आयु वहाँ सबसे अधिक ७० वर्ष है;

(३) जन्मसंख्या पश्चिमी यूरोपमें वहाँ सबसे अधिक और बाल-मृत्युसंख्या दुनियाभरमें बहुत कम हो गयी है;

(४) दुनियामें प्रति एकड़ सबसे अधिक उपज वहाँ होती है।

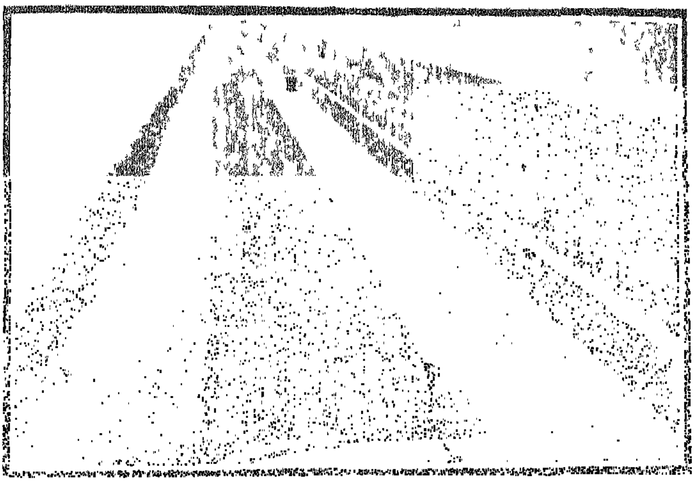
(५) दुनियामें प्रति गाय सबसे अधिक दुग्धोत्पादन वहाँका है और

(६) पश्चिमी हालैण्डमें प्रति वर्ग मीलकी आबादीको कुल आय दुनियाभरमें सबसे अधिक है।

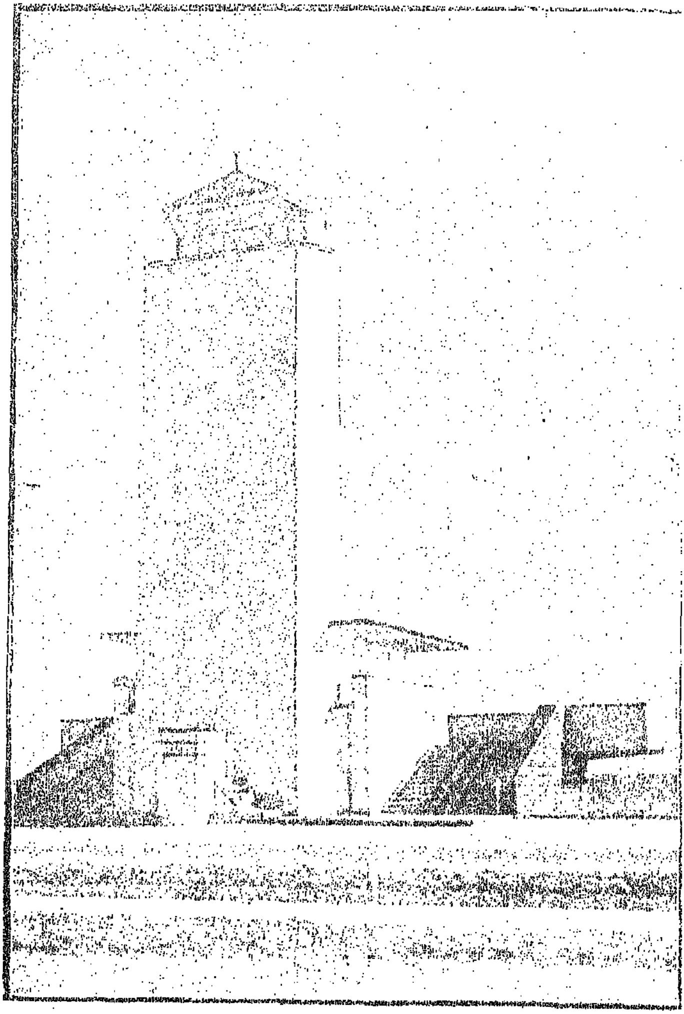
हालैण्डमें प्राकृतिक साधन कुछ भी नहीं थे, जो कुछ थे वे सब प्राकृतिक विपदाएँ ही थीं। केवल थोड़ा-सा कोयला, नमक और तेल छोड़कर खनिज पदार्थ और कोई नहीं है। पहाड़ क्या एक पहाड़ी तक वहाँ नहीं है कि उससे बहनेवाली नदियोंसे पन बिजली बनायी जाती। पर डच जनताने सदियोंके कठिन परिश्रमसे अपना देश बनाया, अपनी दौलत बनायी, सुन्दर मकान, खेत, सड़कें, नहरें और बन्दरगाह बनाये। यह सब उनके समुद्र-संघर्षसे हुआ जो आज भी जारी है। समुद्र भूमिके अन्दर घुसनेका प्रयत्न करता रहता है और डच जनता उसे पीछे हटानेका उद्योग करती रहती है। समुद्रके अन्दर घुसनेसे सन् १८४० में हालैण्डका समुद्रतट ११५० मील लम्बा था। बाँध बना-बनाकर वह पीछे ढकेला गया और १९५२ में यह तट ८४० मील रह

गया। हालैण्डवाले इसे केवल ३०० मील लम्बा रखना चाहते हैं ताकि समुद्र भी बिलकुल सीधमें सीधेसे शान्तिपूर्वक रहे। टेढ़ी-मेढ़ी चीजें डच जनताको पसन्द नहीं, उनकी नहरें, नाले, सड़कें, पेड़ सब कुछ सीधी रेखाओंकी तरह हैं। जहाँ भी समुद्र देशके अन्दर घुसकर तटको टेढ़ा बनाता है, वहीं डच लोग सीधा बाँध बनाकर समुद्रको सीधा कर देते हैं। यह तट ३०० मील लम्बा बनानेके लिए १४ जगहोंपर समुद्रको सीधा करना पड़ेगा।

समुद्रको सीधा बनानेका सबसे बड़ा कार्य सन् १९२० में शुरू हुआ और १२ बरस बाद १९३२ में समाप्त हुआ। जाइडर जीको २७ मील लंबा बाँध बनाकर बंद करनेका यह कार्य था। दुनियाका सबसे बड़ा इन्जीनियरीका काम हम इसे कह सकते हैं। राइनकी एक सहायक नदी आइसेल जहाँ उत्तर सागरमें मिलती है वहाँ उत्तर सागर जमीनके अन्दर छुरीकी तरह घुस रहा था। करीब सवा पाँच लाख एकड़ जमीनपर यह घुस चुका था। इसीको जाइडर जी (सी, समुद्र) कहते थे। यदि समुद्रका घुसना न रोका जाता तो यह देशके दक्षिण छोरतक पहुँच जाता और पश्चिमके आधे हालैण्डको काट देता। इसलिए इसे रोकनेका उपाय करना अवश्यम्भावी हो गया था। १९१८ में इसकी योजना बनायी गयी और १ मई १९१९ को काम शुरू हो गया। योजना यह थी कि नार्थ हालैण्ड प्रान्तसे फ्रीजलैण्ड प्रान्ततक २७ मील लम्बा एक बाँध बनाया जाय और जाइडर जीको झील बना डाला जाय। इसके बाद पंपोंसे धीरे-धीरे इसका पानी निकाला जाय और भूमि खेती योग्य बनायी जाय। पानीमेंसे इस प्रकार निकाली गयी और चारों ओर बाँधसे रक्षित भूमिको पोल्डर कहते हैं। लम्बे बाँधपर १२ सालतक काम होता रहा। अन्तमें मनुष्य और समुद्रकी इस लड़ाईमें मनुष्यकी



२७ मील लम्बा बाँध, आठवाँ आश्चर्य, एक ओर खारा समुद्र,
दूसरी ओर मीठी झील (पृ० ९४)



आठवें आश्चर्यके निर्माणका स्मृति-स्तम्भ (पृ० ९५)

'जीवित राष्ट्र भावी पीढ़ियोंके लिए निर्माण करता जाता है'

विजय हुई और २८ मई १९३२ को दोपहरमें १ बजकर २ मिनटपर बाँधकी अन्तिम खाई भी पट गयी। २७ मील लम्बा बाँध—एक तरफ उत्तर सागर फैला था और दूसरी तरफ आइसेल झील भी सागरकी तरह ही फैली थी और दोनोंको अलग करनेवाला मनुष्य-प्रयत्नकी उत्कृष्ट सफलताका द्योतक २७ मील लम्बा यह बाँध—अपनी कहानी कह रहा था। एक तरफ खारे पानीका भण्डार था तो दूसरी तरफ मीठे पानीका आगार। खारे और मीठे समुद्रोंको केवल एक इस बाँधकी दीवार अलग किये हुए है। जहाँ बाँधकी अन्तिम खाई पाटी गयी वहाँ स्मारक पट्टपर बहुत उपयुक्त यह वाक्य लिखा है—A nation that lives, builds for its future (ए नेशन दैट लिव्स, बिल्ड्स फार इट्स फ्यूचर) जीवित राष्ट्र अपनी भावी सन्तानोंके लिए ही निर्माण करता है। बाँधपर बहुत चौड़ी ४ मोटरें दौड़ने लायक पक्की सड़क, साइकिल सवारोंके लिए एक छोटी सड़क और पैदल चलनेवालोंके लिए एक पक्की पगडंडी बनी है। २७ मील लम्बे इस बाँधपर मोटरसे यात्रा करना एक अद्भुत अनुभूति पैदा करता है।

हम लोग ब्राऊसे ११॥ बजे रवाना हुए और पश्चिमसे पूरबकी ओर बाँधपर चले। २७ मील लम्बे बाँधके पश्चिमवाले छोरके १॥-२ मील पास ही वह स्थान है जहाँ बाँधकी अन्तिम खाई पाटी गयी थी। यहाँ एक लम्बा स्मारक स्तम्भ बना है। यहीं हमने भोजन किया जो हम साथ ले आये थे। बड़ा आनन्द आया। स्तम्भ-मीनारके ऊपर हम लोग चक्करदार सीढ़ियोंसे गये। ऊपर आँधी जैसे तेज वेगसे समुद्री हवा बह रही थी। पचासों, सैकड़ों विदेशी यात्री लगातार दुनियाका यह आठवाँ आश्चर्य देखनेके लिए आते रहे। स्मारक-स्तम्भके पास ही एक हाल है जहाँ बड़े-बड़े नकशोंकी सहायतासे यह जाना जा सकता है कि

दुनियाका समुद्रबन्धनका यह अद्भुत काम किस प्रकार और किस विधिसे सम्पन्न हुआ।

बाँधको पारकर हम पोल्डरोंमें बने गाँवोंको देखते हुए दक्षिणकी ओर मुड़े। रास्तेमें इडैम और वेनडैमके गाँवोंमें ठहरे जहाँ अब भी स्त्री-पुरुष पुराने ढंगकी विशेष पोशाक पहनते हैं।

करीब १०० मील चक्कर लगाकर शामको हम हालैण्डके सबसे बड़े नगर आम्सटर्डम पहुँचे। उत्तरसे नगरमें आनेके लिए नदीपर फेरीसे आना पड़ता है। यह फेरी कई छोटे जहाजोंकी है और मोटरें, साइकिल सवार तथा पैदल सभी इसपर बिना कोई खेवा दिये आ सकते हैं। राटरडममें नदीके नीचेसे सुरंग निकालकर सड़क बनायी गयी है इसलिए वहाँ आवागमन रुकता नहीं। आम्सटर्डममें भी सुरंग बनानेकी योजना है। जब यह बन जायगी तब इस शहरकी एक बड़ी भारी कमी दूर होगी। फेरीके लिए मोटरोंका लम्बा क्यू लगा था, पर चूँकि हम सरकारी मेहमान थे इसलिए पुलिसवालेने हमारी तीनों मोटरोंको सबसे आगे कर दिया।

आम्सटर्डममें हमें ३ दिन ठहरना था। जो तीनों मोटरें हमारे साथ पहले दिन से थीं उनको आज हमने विदा दे दी। तीनों मोटर ड्राइवर हम लोगोंके १०-१२ दिनके साथके कारण दोस्त हो गये थे। मैं और शास्त्री जिस गाड़ीमें बैठते थे उसका ड्राइवर तो बड़ा खुशदिल था। वह टूटी-फूटी अँग्रेजीमें हमसे बातें करता था। थ्री मस्केटियर्स कहकर अपने दोनों ड्राइवर दोस्तोंका और अपना परिचय देता था।

तीनों ड्राइवरोंको मिलाकर हम लोगोंने करीब ५० गिल्डर टिप, बख्शीश दिया। हालैण्डमें और सारे यूरोपमें टिपकी बहुत प्रथा है। पर इसकी रकम निश्चित होती है। होटलके बिलका

१० या १५ प्रतिशत होटलके नौकरोंको टिप देना पड़ता है। सब नौकर आपसमें रुपया बाँट लेते हैं।

ड्राइवरोंको बिदा कर आम्सटर्डमके सबसे बड़े होटल विक्टोरिया होटलके अपने-अपने कमरोंमें हम पहुँच गये।

२१—सबसे बड़े नगर आम्सटर्डममें

१७ अप्रैल १९५४

हालैण्डकी १ करोड़ जनसंख्याका ८-९ प्रतिशत, करीब ९ लाख आदमी हालैण्डके इस सबसे बड़े शहर आम्सटर्डममें रहते हैं। आम्स्टेल नदीपर बाँध बनाकर यह शहर बसाया गया, इसलिए इसका नाम आम्सटर्डम पड़ा। सत्रहवीं सदीमें यह लंदनसे भी अधिक महत्त्वका शहर हो गया था। यह शहर एक तरहसे पानीके अन्दर ही लाखों लकड़ीके शहतीर गाड़कर उनपर बना है, बिलकुल वेनिस लगता है। यहाँकी मजदूरोंकी बस्तियाँ इतनी सुन्दर हैं कि उन्हें श्रमिकोंका मक्का कहा जाता है। आम्सटर्डम शहर उत्तर सागरसे उत्तरमें और राइन नदीसे दक्षिणमें नहरों द्वारा जोड़ा गया है। इसलिए जलमार्गकी दृष्टिसे यह महत्त्वका हो गया है।

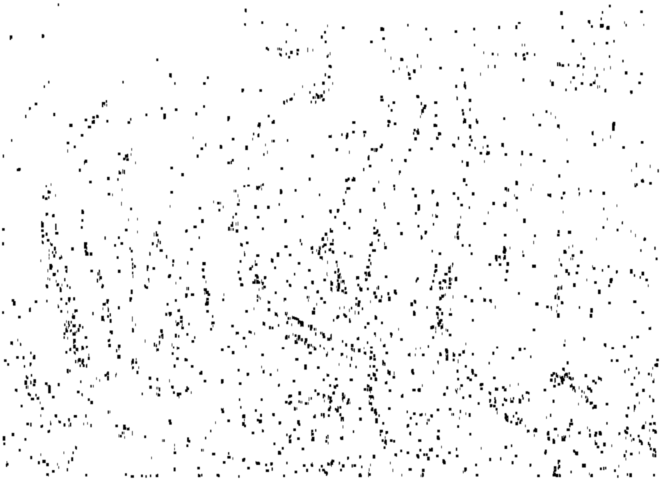
उत्तर समुद्रसे आम्सटर्डममें घुसनेका जो रास्ता है, उसमें आइजम्यूडेन बन्दरगाहमें चार बड़े-बड़े लॉक बने हैं। सबसे बड़ा नार्दर्न लॉक १३२० फुट लम्बा, ५५ फुट चौड़ा और ४७ फुट गहरा है। दुनियाका यह सबसे बड़ा लॉक कहा जा सकता है। बड़ेसे बड़े जहाज भी इसमेंसे आम्सटर्डमकी ओर जा सकते हैं। शिफोल हवाई अड्डा आम्सटर्डम म्युनिसिपलिटीके अधिकार क्षेत्रमें ही है।

इससे दुनियाकी विमान कम्पनियों और अन्तर्राष्ट्रीय वैमानिक यात्रियोंके लिए भी आम्सटर्डम महत्त्वका केन्द्र हो गया है। फाक्करका विमान बनानेका कारखाना यहीं है।

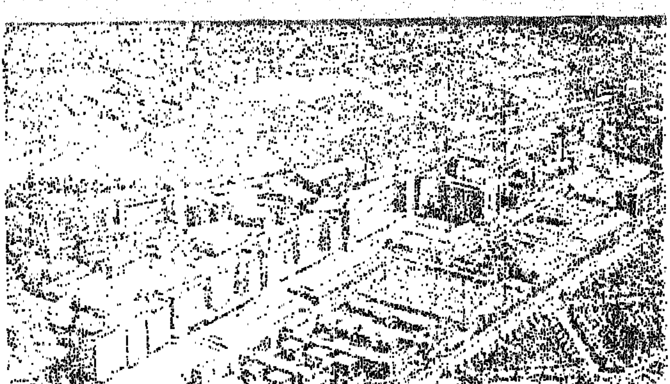
इस नगरमें छोटे-बड़े करीब १५ हजार कारखाने हैं जिनमें कुल मिलाकर कोई डेढ़ लाख मजदूर काम करते हैं। मजदूरोंमें २५ प्रतिशत स्त्रियाँ हैं। दो युनिवरसिटियाँ हैं जिनमें ७-८ हजार छात्र पढ़ते हैं। ४० म्यूजियम हैं।

शहरमें जितनी सड़कें हैं उतनी ही नहरें हैं। चाहे जलमार्ग-से शहरका चक्कर लगाइये चाहे सड़कसे। बड़ी-बड़ी इमारतें २-३ सौ सालसे पानीमें खड़ी हैं, पर उन्हें जरा भी नुकसान नहीं पहुँचा है। काशीके घाट फिर बनानेके पहले हालैण्डके इंजीनियरों से सलाह अवश्य लेनी चाहिये। पानीकी टैक्सियोंमें बैठकर नहरों मेंसे शहरका चक्कर लगानेमें बड़ा आनन्द आता है। इन नौकाओं-पर ४-४ भाषाओंमें (अंग्रेजी, डच, फ्रेंच और जर्मन) दोनों किनारोंपरकी इमारतोंका परिचय बतानेवाली लड़कियाँ रहती हैं। इन्हें चारों भाषाओंमें दिन भरमें पचासों बार एक ही चीज की उद्धरणी करनी पड़ती है। आम्सटर्डमका बड़ा सेण्ट्रल रेलवे स्टेशन भी नहरोंसे घिरा हुआ है।

शहरमें कई बड़े डिपार्टमेंटल स्टोर हैं। हर चीजके भांडार वहाँ हैं। हमारे यहाँके एक-एक शहरका पूरा बाजार वहाँके एक-एक डिपार्टमेंटल स्टोरमें समा जायगा। हालैण्डका सबसे बड़ा कला-संग्रह राइक्स म्यूजियम आम्सटर्डममें ही है। हालैण्डके सबसे बड़े पेण्टर कलाकार रेम्ब्राण्टकी कब्र इसी शहरमें वेस्टरटोरनमें है। रेम्ब्राण्ट १६३९ से १६५८ तक जिस घरमें रहे वहाँ भी अब एक म्यूजियम की स्थापना की गयी है। नहरोंका उपयोग यातायातके लिए किया जाता है। हालैण्डमें इनको ग्राख्ट कहते हैं। सड़कोंकी त्रिमुहानी चौमुहानीकी तरह यहाँ नहरें भी आपसमें मिलकर



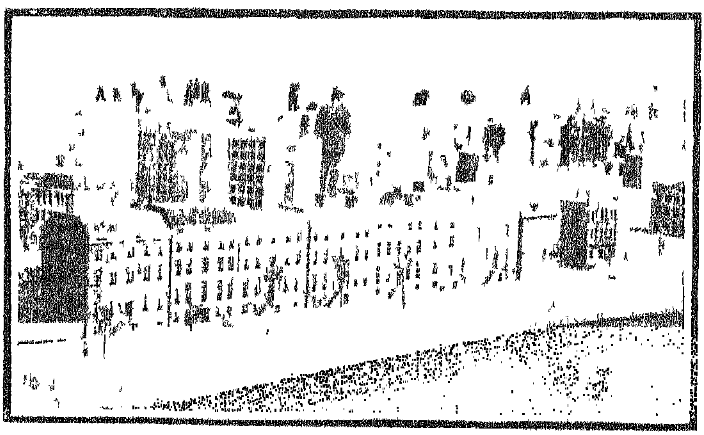
आम्सटर्डम नगरके केन्द्रका दृश्य (पृ० ९८)



आइण्डहोवनमें फिलिप्सके कारखाने (पृ० १०८)



श्रमिकोंके लिए बनायी गयी एक बस्ती (पृ० ११३)



बच्चोंके नगर मदुरोडैममें दर्शक (पृ० १२४)

त्रिमुहानियाँ, चौमुहानियाँ बनाती हैं। हमने मोटर बोटमें इन नहरी सड़कोंपर सैर की। आज हमारे लिए कोई सरकारी कार्य-क्रम नहीं था। शहरके टूरिस्ट कार्यालयने हमको लंच दिया और उसके बाद 'आम्सटर्डमके हम यात्री रह चुके हैं' इस बातका बड़ा सचित्र सार्टिफिकेट (स्क्राल) उन्होंने हम लोगोंको भेंट किया। उसपर हम लोगोंका नाम अलग-अलग बिलकुल छपे जैसे टाइपमें लिखा गया था। सार्टिफिकेटपर शहरका बड़ा नकशा छपा था। आम्सटर्डम शहरमें जानेकी यादगारमें हमें वह मिला था।

आम्सटर्डममें यूरोपकी सबसे बड़ी टाइप फाउण्ड्री टैटराड नामकी है। मैं यह जानना चाहता था कि नागरी टाइपकी ६ या ८ पाइंटकी मेट्रिस बन सकती है या नहीं। टैटराडका पता लगाकर मैं वहाँ गया। ये लोग अखबारोंके सम्बन्धकी सभी तरहकी मशीनें भी बेचते हैं। टाइप फाउण्ड्री देखकर मैं दंग रह गया। दुनियाकी सब भाषाओंके टाइप वहाँ थे (देवनागरी टाइपों-को छोड़कर ! देवनागरीके टाइप लायडनके ब्रिलके छापाखानेमें देख चुका था)। वहाँके मैनेजरने हमें एक नमूनेका टाइप दिया। उस एक छोटेसे टाइपपर एक बड़ी किताबका मुख-पृष्ठ छोटा बनाकर ढाला गया था। जब एक पूरा पृष्ठ एक एमके टाइपपर ढाला जा सकता है तो ८-१० पाइंटके टाइप बनाना उनके बायें हाथका खेल था, पर टैटराडके मैनेजरने बताया कि वे लोग मेट्रिस किसीको नहीं बेचते, केवल टाइप बनाकर बेचते हैं।

टैटराडसे मैं ट्राममें बैठकर होटल वापस आया। बंबईकी ट्रामोंकी जैसी भीड़ वहाँ थी। हमारी चमड़ी सफेद न होनेपर भी कोई हमें अजायबघरके जानवरकी तरह नहीं देखता था। हालैण्डमें रंग-चेतना बहुत ही कम है। हमें देखकर कभी कभी वहाँके बच्चे अवश्य आश्चर्यचकित होते थे, पर बड़ोंने कभी

हमारे साथ कहीं भी भेदभाव नहीं किया। मैं समझता हूँ कि यूरोपके देशोंमें सबसे कम रंगभेदका भेदभाव हालैण्डमें है। इंगलैण्डकी भी इसके संबंधमें लोग तारीफ करते हैं, पर वहाँ भी कुछ होटल ऐसे निकल ही आयँगे जहाँ अश्वेत लोग नहीं जाने पाते होंगे। हालैण्डमें यह बात हमारे देखनेमें बिलकुल नहीं आयी।

कल हम लोग जब विक्टोरिया होटल पहुँचे तो रेडियो नेदरलैण्डके लोग अपना मोबाइल रेकार्डर लेकर आये थे। हमारी यात्राके अबतकके अनुभव वे रेकार्ड करना चाहते थे। मुझे छोड़कर मेरे अन्य पाँचों साथियोंने प्रश्नोत्तरके रूपमें अपने अनुभव अंग्रेजीमें रेकार्ड कराये। मैंने अकेले हिंदीमें भाषण कर अपने अनुभव रेकार्ड कराये। केवल १० मिनटका मुझे समय भाषण तैयार करनेके लिए मिला था, पर भाषणके बाद साथियोंने और भारतीय दूतावासके प्रेस सेक्रेटरी श्री महाजनने बताया कि मेरा भाषण बहुत ही उत्तम हुआ। अंग्रेजीवालोंकी रेकार्डिंग भी ठीक नहीं हुई और उसका रेकार्ड रद्दी हो गया। मेरे भाषणका रेकार्ड भी अच्छा आया। (भाषण इसी पुस्तकके अन्तमें परिशिष्टमें दिये गये हैं। ये दोनों रेकार्ड २३ जुलाई १९५४ को लखनऊ-इलाहाबाद रेडियो स्टेशनोंसे सुनाये गये।)

२२—फूलोंकी नगरी कुकेनहाफमें

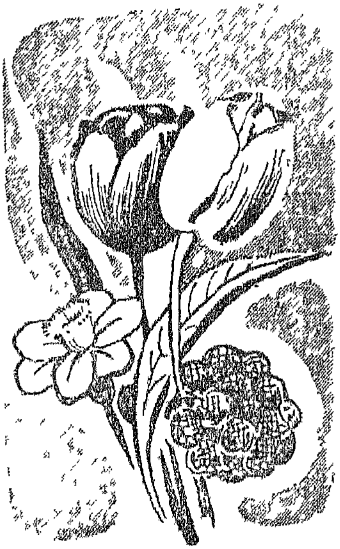
१८ अप्रैल १९५४

हमारी मोटरें हेग वापस चली गयी थीं, इसलिए आज हमें एक बड़ी ही लक्स बस यात्राके लिए मिली। इसमें रेडियो भी लगा था। आज हमें यहाँसे १८ मील दूर कुकेनहाफ नामक स्थानमें राष्ट्रीय पुष्प प्रदर्शनी देखने जाना था। १०॥ बजे हम लोग रवाना

हुए। आज रविवार और ईस्टर सण्डे होनेके कारण कुकेनहाफमें बहुत भीड़ थी। (ईस्टर वीक-एण्डमें २-३ लाख विदेशी यात्री हालैण्ड आये जिनमें १ लाख २० हजार जर्मन थे। जर्मनोंका यह 'आक्रमण' स्वागतार्ह था।) कुकेनहाफके पास पहुँचते-पहुँचते कारोंका ताँता लग गया। कारके आगे हुडको बड़ी-बड़ी मालाएँ पहनायी गयी थीं। रास्तेपर मालाएँ बेचनेवाले लड़के और माली अपनी माला आगे कर-करके माला खरीदनेको कहते थे। बहुतसे साइकिल सवारोंने मालाएँ खरीदकर अपने सिरपर लपेट ली थीं।

फूलोंका प्रेम—और व्यापार भी !!

डच जनताका फूलोंका प्रेम अद्भुत है। आप मीलों घूम आइये, हरएक घरकी सामनेवाली खिड़कीके शीशेके अन्दर आपको फूल दिखाई देंगे। हेगके हमारे होटलकी लिफ्टमें भी फूल सजाकर रखे गये थे। सवेरे रोटीवाला, मक्खनवाला, मांसवाला, धोबी, तरकारीवाला इन सबकी फेरीके साथ फूलवालेकी भी फेरी होती है और गरीबसे गरीब परिवार भी फूलोंपर कुछ न कुछ खर्च करता ही है। लीसेसे हार्लेमतक १०–१५ मील-की दूरीपर मार्चसे लेकर मई-तक हर साल रंग-बिरंगे फूलोंके मानों मीलों लम्बे चौड़े गलीचे जमीनपर बिछ जाते हैं।



ट्यूलिप फूल और उसका बीजकन्द

अब डच लोग फूलोंके प्रेमके साथ-साथ उसका व्यापार भी

अधिक करने लगे हैं। कुकेनहाफ उसके विश्वव्यापी व्यापारका केन्द्र है। ४०० साल पहले एक डच वनस्पति-शास्त्रज्ञ टर्कीसे ट्यूलिप फूलके कुछ बीजकंद (बल्ब) यूरोप ले गया। प्रकृति-वैज्ञानिकोंने उसपर प्रयोग किये और आज केवल एक ट्यूलिप फूलकी विभिन्न आकार, रंग, रूपकी ६ हजार किस्में हालैण्डमें उगायी जाती हैं। इनके अलावा नरगिस (डफोडिल), हायासिंथ, क्रोकस आदिकी भी हजारों किस्में तैयार की गयी हैं। हालैण्डमें फूल अब प्रकृतिके नहीं रहे, सब अप्राकृतिक, जाति-संकर हो गये। पर प्रकृति और विज्ञानका सर्व-सुन्दर मेल कैसे बैठाया जा सकता है इसे कुकेनहाफमें देख सकते हैं। यदि वसंत ऋतु देरसे आयी तो शीशेके एयर कंडीशण्ड हॉलमें ८०० मेलके ट्यूलिप अस-मय-समय चाहे जब देख लीजिये। बीजसे फूल आनेमें ५ साल लग जाते हैं, पर बीजकंदसे दो-तीन महीनेमें फूल आ जाता है। प्रयोगशालामें विभिन्न रंगोंके फूलोंके बीजोंसे संकर पैदा कर नित नये सौंदर्यका निर्माण किया जा रहा है। कुकेनहाफके मीलों लम्बे फूलोंके गलीचे देखकर लगता है कि स्वर्ग और सौंदर्य प्रकृतिसे भी अधिक सुनियोजित अप्राकृतिक संकर उत्पत्तिसे लाया जा सकता है। पिछले ५ सालसे हर साल मार्चसे मईतक कुकेनहाफमें फूलोंका मेला होता है जिसमें लाखों व्यक्ति जाते हैं—महारानी भी जाती हैं, हेलिकाप्टरमें यूरोपभरसे पर्यटक और व्यापारी आते हैं। पिछले साल हालैण्डने १५ करोड़ गिल्डरके (एक गिल्डर सवा रुपयेके बराबर होता है।) ट्यूलिप बल्ब निर्यात किये। यह विदेशी मुद्रा लानेवाला हालैण्डका सबसे बड़ा व्यापार हो गया है क्योंकि इसमें बाहरसे किसी प्रकारका कच्चा माल नहीं लाना पड़ता। इस प्रकार हालैण्ड दुहरे लाभमें रहता है—फूलोंसे प्रेम करता है और उनके बीजकंदोंका व्यापार भी करता है। कुकेनहाफके मेलेमें ६ बाग भी हैं जहाँ कलापूर्ण ढंगसे बाग

लगानेका प्रदर्शन है। बागोंमें शिल्पियोंकी भी प्रतियोगिता होती है और हर साल उच्च कलाकार तरह-तरहकी पत्थरकी मूर्तियाँ बनाकर और वहाँ प्रदर्शित कर उस स्थानको स्वर्ग बनानेमें सहायता करते हैं। हमारी हालैण्ड-यात्राका सबसे प्रिय दिन मेरे लिए यही था।

आज दिनभर घने बादल छाये रहे। वर्षा भी बीच-बीचमें हो जाती थी (यहाँ वर्षाका मतलब कभी मूसलाधार वर्षा नहीं, मात्र झींसी होता है।) पर फूलोंके बगीचेके बीच मन वर्षासे अप्रसन्न नहीं था। सावनका असली मजा आज हमें आया। कुकेनहाफका पुष्प-सौंदर्य सचमुच देखनेकी चीज है, पर यह सौंदर्य देखकर मनमें हजारों तरहके विचार भी उठे। मनुष्यने फूलोंके बीजोंपर हजार तरहके प्रयोग कर और उनमें संकर कर यह सौंदर्य पैदा किया। इसमें काले ट्यूलिपों का भी सौंदर्य था और श्वेत शुभ्र ट्यूलिपोंका भी था। विचार आया कि सौंदर्य क्या संकरमें ही हो सकता है? इस संकर-सौंदर्यसे प्रकृतिका सौंदर्य कम ही कहना होगा।

आज तो सामाजिक और राजनीतिक धारणाएँ मनुष्यमें संकर-सौंदर्यको अनैतिक ही मानती हैं। पर बहुत संभव है कि कभी भविष्यमें देश-देशके बीचकी सीमाएँ, और श्वेत-अश्वेत चमड़ीका भेदभाव मिट जाय और मनुष्य योजनानुसार देह सौंदर्य उत्पन्न करे। पाप-पुण्य ये मानसिक और युगधर्मानुसारी धारणाएँ हैं। ये हमेशा परिवर्तित होती आयी हैं। सत्य-शिव-सुन्दर ये नित्य हैं। इस त्रैगुण्यमेंसे अंतिम गुणका प्रयोग मनुष्यके शरीरपर भी कभी पूर्व नियोजनके अनुसार हो सकता है।

जो सब चीजको माया ही मानते हैं और सचमुच मानते हैं, केवल मुँहसे कहते ही नहीं, उनकी बात अलग है। उनका स्थान भी हिमालय जैसा एकांतस्थल है, पर जो ब्रह्मको ब्रह्मके लिए

और जगतको अपने लिए मानते हैं उनके मनमें इस तरहके विचार कुकेनहाफको देखकर अवश्य उठते होंगे।

२३—छः घंटेकी जलयात्रा

१९ अप्रैल १९५४

आज हमें आम्सटर्डमसे मय सामानके रवाना होना था। अब हम उत्तर हालैण्डको छोड़कर दक्षिण हालैण्डके दौरेपर जा रहे हैं। ५ दिन दक्षिण हालैण्डका दौराकर २३ को हेग वापस लौटेंगे। आज हम दक्षिण-पश्चिम हालैण्डके उस प्रदेशमें जा रहे हैं जहाँ पिछले वर्ष तूफानके कारण समुद्र घुस आया था और करोड़ों गिल्डरका नुकसान हुआ था, १८५० आदमी मरे थे। आम्सटरडमसे हम बसपर रवाना हुए। रास्तेमें हेग पड़ा। वहाँ होटल विक्टोरियामें हमने भारतसे आयी हुई अपनी चिट्ठियाँ ले लीं। भारतीय दूतावासके सूचना सेक्रेटरी श्री महाजन, एक और कर्मचारी श्री मेनन तथा उनकी पत्नी हमारे दलमें सम्मिलित हो गये। राटरडमके दक्षिण-पश्चिम व्लार्डिंजेन नामक स्थानतक हम बसमें गये। आम्सटरडमसे यह ५० मील दूर है। यहाँ हमने बसको छुट्टी दे दी और नेदरलैण्ड जल-पुलिसकी एक तेज मोटर-बोटपर सवार हुए।

६-७ घंटेतक समुद्र यात्राका आनन्द लेकर हम शामको अपने गंतव्य स्थान व्लिसिंजेन उर्फ फ्लशिंग पहुँचे। आजका दोपहरका खाना मोटरबोटपर ही हुआ। भूख १ बजेसे ही लगी, पर खाना ४ बजेके पहले तैयार नहीं हो सका। आज हम सब लोग जल-विहार करते-करते रंगमें आ गये थे। घंटे दो घंटे हम-

लोग जो भी गाना सूझा, गाते रहे। राष्ट्रीय गीत भी गाया। हमारे साथवाले डच सरकारी अधिकारी भी रंगमें आये। उन्होंने भी अपना राष्ट्रीय गीत गाया। कहावत है कि 'भूखे भजन न होहिं गोपाला' पर आज हम भूखे थे और हमारी नाक मोटरबोटके नीचेके हिस्सेमें बननेवाली रसोईकी ओर थी, पर भोजनके निमंत्रणकी राह देखते देखते गायन-भजनका अच्छा समाँ बँध गया। मेरी सुपारी, लौंग इलायचीकी डिब्बियोंपर भी लोगोंने खूब हाथ साफ किया। बीच बीचमें हम भी स्टियरिंग हाथमें लेकर मोटरबोट चलाते या बाइनाक्यूलर आँखमें लगाकर इधर-उधर किनारा देखनेका नाटक करते।

फ्लशिंगका होटल बिलकुल समुद्रतटपर था। यहींसे जहाज देशके अंदरसे बेलजियम एंटवर्प तक चले जाते हैं।

२४—जहाजके कारखानेमें

२० अप्रैल १९५४

आज हमने फ्लशिंगमें 'डी शेल्ड' नामक सरकारी जहाजी कारखाना देखा। यहाँ एक भारतीय श्री कापडियासे मुलाकात हुई। वे विजगापट्टमके जहाजी कारखानेसे यहाँ भेजे गये हैं। डच जीवनके बारेमें इनसे बहुत मनोरंजक बातें हुईं।

'डी शेल्ड' का इतिहास भी बड़ा स्फूर्तिदायी है। ऐसे ही कारखानोंने हालैण्डको आज दुनियामें जहाज बनानेके काममें तीसरे नंबरपर ला दिया है। डी शेल्डका प्रारंभ ७९ साल पहले १८ आदमियोंसे हुआ था। आज इसमें ५-६ हजार आदमी काम कर रहे हैं। बजड़ेसे लेकर युद्धपोततक, पानीपर तैरनेवाला और

पानीके अंदर चलनेवाला ऐसा कोई यान नहीं जो यहाँ न बनाया गया हो। विमान भी यहाँ बनते थे, पर इस वर्ष कंपनीने विमान बनानेका काम फाकरको दे दिया।

कारखाना देखकर और खाना खाकर हमलोग आइण्डहावन-के लिए रवाना हुए। पिछले साल जिस इलाकेमें बाढ़ आयी थी और तूफानी समुद्र घुस आया था, उसी क्षेत्रमेंसे हमलोग गुजर रहे थे। एक सालके अंदर ही डच जनताने अपने परिश्रमसे उस क्षेत्रको फिर पहले जैसा बना डाला है। उक्त क्षेत्रमें अब भी काम हो रहा था। नये नये पुल और सड़कें बन रही थीं। आज हम हालैण्डके दक्षिण-पश्चिमके कोनेको छोड़कर दक्षिण-पूर्वके कोनेकी तरफ जा रहे हैं। रास्तेमें आइण्डहावन पड़ता है जहाँ रातभर और कल दिनभर ठहरेंगे। आइण्डहावन फिलिप्सके कारखानोंके लिए जगत्प्रसिद्ध है।

शामको हम आइण्डहावन पहुँच गये। फिलिप्सके एक अधिकारी हमारे होटलमें हमारे स्वागतके लिए आये थे। रातको वे हमें सिनेमा ले गये। युद्धकालकी कहानीकी एक फिल्म थी। हालैण्डमें फिल्म उद्योग नहीं है। अंग्रेजी फिल्में चलती हैं। फिल्मोंके नीचे डच भाषामें कहानीका परिचय लिख दिया जाता है ताकि अंग्रेजी न समझनेवाले दर्शक भी फिल्मकी कहानी समझ सकें।

२५—फिलिप्सकी नगरी आइण्डहावनमें

२१ अप्रैल १९५४

आज एक ही दिनमें हमने हालैण्डके दो बहुत बड़े कारखाने देखे—एक था फिलिप्सका कारखाना और दूसरा डी० ए० एफ० का मोटर कारखाना। आइण्डहावन वस्तुतः फिलिप्स-नगर ही है। बिजलीके बल्ब बनानेवाली फिलिप्स कम्पनीने हालैण्डको दुनिया भरमें जितना प्रसिद्ध किया है, 'प्रकाशित' किया है, उतना शायद और किसी दूसरी चीजने नहीं। अब फिलिप्सके साथ ही डी० ए० एफ० कम्पनी भी आइण्डहावन शहरका वैभव बढ़ा रही है। आइण्डहावनके जिस होटलमें हम ठहरे थे उसके कुछ कमरोंमें फिलिप्सके रेडियो और फिलिप्सके दाढ़ी बनानेके विद्युतरेजर भी थे। रेडियोके बगलकी छोटी संदूकमें चवन्नी (२५ सेण्ट) सिक्का डालनेसे एक घंटा रेडियो चलता था। एक घंटेके बाद रेडियो अपने आप बन्द हो जाता और उसे पुनः चलानेके लिए एक चवन्नी डालनी पड़ती थी।

१९५१ में फिलिप्स कारखानेको खुले ६० साल हो गये। उस साल कारखानेकी हीरक जयन्ती मनायी गयी। सन् १८९१ में कार्बन फिलामेण्टके बिजलीके लट्टू बनानेके लिए यह कारखाना खुला था। पिछले ६०–६५ वर्षोंमें विद्युत-शिल्प-उद्योगने जिस तेजीसे प्रगति की उसी तेजीसे यह कारखाना भी उसके साथ रहा और बढ़ता गया है। बिजलीके लट्टूसे लेकर आजके परमाणु तोड़क-जोड़क यन्त्रोंतक यह कारखाना बराबर विद्युत्‌विज्ञानकी प्रगतिके साथ साथ चलता जा रहा है। विद्युत उद्योगमें आवश्यक विद्युत यंत्रोंके अतिरिक्त अन्य चीजोंको भी यह बनाता रहा है।

बिजलीकी हजारों तरहकी बत्तियाँ, ग्रामोफोन, टेलिफोन, रेडियो, टेलिविजन आदिके अतिरिक्त फिलिप्स कम्पनी कागज और कार्डबोर्ड बनानेके कारखाने भी चलाती है। बल्बोंमें लगनेवाला शीशा भी वह अपने यहाँ बना लेती है।

सन् १८९१ में जेरार्ड फिलिप्सने जब आइण्डहावनमें फिलिप्स एण्ड कम्पनीकी स्थापना की, तब उसमें केवल २० आदमी काम करते थे। ३६ सालके बाद सन् १९२७ में जब फिलिप्सका रेडियो बाजारमें आया तो इनके कारखानेमें १० हजार आदमी काम करने लगे थे और आज तो फिलिप्सके हालैण्डके कारखानोंमें ३० हजारसे भी अधिक आदमी काम कर रहे हैं।

फिलिप्सके करीब ५० कारखाने दुनियाभरमें और करीब २५ हालैण्डमें फैले हुए हैं। सबमें मिलाकर कोई एक लाख आदमी काम करते होंगे। १ अरब, ३८ करोड़, ४० लाख गिल्डर-का १९५२ में कारबार हुआ था।

भारतमें भी कलकत्तेके पास फिलिप्सने अपना कारखाना खोला है।

दूसरे महायुद्धमें कारखानोंको जो नुकसान हुआ वह महा-युद्धकी समाप्तिके बाद एक सालमें ही पूरा कर लिया गया। हालैण्डके सभी बड़े कारखानोंमें हमने रिसर्च लेबोरेटरियाँ देखीं जिनपर काफी खर्च किया जाता है। फिलिप्सकी रिसर्च लेबो-रेटरीका तो कहना ही क्या? हमने यहाँ दो घण्टे बिताये और जीवनभरकी संगृहीत अपनी बहुत-सी धारणाएँ हमें बदल देनी पड़ीं।

फिलिप्सके एलेक्ट्रान माइक्रोस्कोपसे कोई भी छोटी चीज ६० हजार गुना बड़ी दिखाई देती है। एक सेकेण्डमें ३ हजार चित्र लेनेवाले कैमरेसे यह मालूम हुआ कि औसत आदमीकी दाढ़ीमें १२ हजार बाल रहते हैं और दो दिनमें दाढ़ीके बाल

१ मिलीमीटर (लगभग '०४ इंच) बढ़ते हैं। बालोंकी मोटाई '०७ से लेकर '१८ मिलिमीटरतक होती है। अल्ट्रावायोलेट लैम्प बनाते-बनाते फिलिप्सको विटैमिन डी भी बनाना पड़ा और देखते-देखते फिलिप्सकी विटैमिन बनानेकी भी एक फैक्टरी खड़ी हो गयी। फिलिप्स कारखानेका अपना टेलिफोन एक्सचेञ्ज है जो हालैण्डका सबसे बड़ा प्राइवेट एक्सचेञ्ज कहा जा सकता है, कारखानेके अन्दर २७०० टेलिफोन हैं। रोज विदेशोंमें १००० और देशमें २५००० 'काल' किये जाते हैं।

फिलिप्सका रिसर्च और डेवलपमेण्ट विभाग बहुत तेजीसे काम करता है। इस विभागमें हमें बताया गया कि वनस्पति या चेतनकी वृद्धिके लिए उष्णता उतनी आवश्यक नहीं जितना आवश्यक प्रकाश है। कृत्रिम प्रकाशसे हालैण्ड जैसे ठंढे देशमें भी सालभर रोज एक आम देनेवाला पेड़ प्रयोगशालामें उगाया जा सकता है, पर यह आम कई हजार रुपये दामका होगा। प्रकाशकी किरणोंके परिवर्तनसे हमारी आँखें कितना धोखा खा सकती हैं वह हमने वहाँ देखा। जो चीज सफेद दिखाई देती है वह एक क्षणमें उसके चारों ओरका प्रकाश परिवर्तित करनेसे काली दिखाई देने लगती है। सफेद और काला यह सब मायाका खेल है।

हम जब बोलते हैं तो हमारी वह आवाज हमारी हड्डियोंमेंसे चलकर कानतक पहुँचती है। इसलिए टेप रेकार्डरपर रेकार्ड की गयी यह आवाज जब हवामेंसे हमारे कानतक पहुँचती है तो हमें अपनी ही आवाज अजनबीकी-सी लगती है। सड़कपर चलते समय पास और दूरकी आवाजोंकी लहरोंमें परिवर्तनके कारण ध्वनियोंके भी कई डाइमेन्शन हो जाते हैं। इन डाइ-मेन्शनल ध्वनियोंकी रेकार्डिंगका नमूना हमने वहाँ देखा।

फिलिप्स परिवारके श्री एफ०जे० फिलिप्स इस समय कम्पनी

के उपाध्यक्ष हैं। हमारा स्वागत करनेके लिए भाषण करते हुए इन्होंने फिलिप्सके अंतरराष्ट्रीय सहयोग और भारतमें खुले फिलिप्स कारखानेका जिक्र किया। मैंने भी उन्हें स्मरण दिलाया कि 'आज' में हालैण्डके केवल एक फिलिप्स कारखानेका ही विज्ञापन छपता है।

फिलिप्सका काम विश्वभरमें इतना फैला है कि दुनिया भरमें यदि हालैण्डसे भी अधिक फिलिप्सका नाम मशहूर है तो इसमें आश्चर्य नहीं।

फिलिप्स कारखानेकी स्मृतियाँ लेकर हम आइण्डहावनके दूसरे बड़े कारखाने डी० ए० एफ० में गये। यह कारखाना सभी तरहकी मोटर गाड़ियाँ बनाता है। तरह-तरहके काम आनेवाली ट्रकें यहाँ बनती हैं। 'नैटो'का बहुत बड़ा आर्डर इसे मिला है। जीपोंको मात करनेवाली ३ टनकी ६ व्हील ड्राइवकी इन्होंने ऐसी ट्रकें बनायी हैं जिन्हें सड़ककी जरूरत ही नहीं पड़ती। ये छोटी पहाड़ियाँ चढ़ जाती हैं, खाइयाँ पार करती हैं, पर लुढकती नहीं। हम इनपर बैठकर घूमे। बड़ा डर लगता था, पर ड्राइवर निर्भय होकर चलाता जाता था। हमारा दम टूटता था पर गाड़ियाँ बेदम चली जा रही थीं।

ट्रकोंके साथ ट्रेलर, टेण्डर, तेलके टैंकर, रेलवे कण्टेनर आदि भी यहाँ बनते हैं। ट्रैक्टर, पिक अप, बसें, टूरिंग कार, वैगन आदि बनानेका यह कारखाना २४ साल पुराना है और बहुत तेजीसे आगे बढ़ रहा है। रिसर्च और डेवलपमेण्टके लिए इस कारखानेका भी भारी विभाग है।

हमने सारा कारखाना घूम-घूमकर देखा। अमेरिकाकी तुलनामें हालैण्डमें मजदूरी कम देनी पड़ती है। इसलिए यहाँ हमने सुना कि संयुक्त राष्ट्रकी मोटर कम्पनियाँ मोटरोंके पुर्जे हालैण्डमें भेजती हैं और फिर यहाँ मोटरें बनाकर वे दक्षिण

अमेरिकामें बेचनेके लिए भेजी जाती हैं तथा अमरीकी मोटरोंसे वे सस्ती पड़ती हैं !

२६—हालैण्डका खदान क्षेत्र

२२ अप्रैल १९५४

हालैण्डका अब केवल दक्षिण-पूर्वी कोना देखना हमारे लिए शेष रह गया है। यही हालैण्डका खदान क्षेत्र है। यहीं बेलजियम, जर्मनी और हालैण्डकी सीमाएँ मिलती हैं। इस क्षेत्रकी हमारी यात्रा भी ट्रेनसे होनेवाली है। हालैण्डकी ट्रेनें, रेलें देखनेका हमें अपनी यात्रामें यह पहला अवसर मिल रहा है।

आज दोपहरको हमने आइण्डहावन छोड़ा। हमारा होटल रेलवे स्टेशनके सामने ही है, पर भारी-भारी सामान साथ लेनेकी हिन्दुस्तानी आदतके कारण हम लेट हो ही गये और गार्डको हमारे लिए ३-४ मिनट गाड़ी लेट करनी पड़ी। हालैण्डमें रेल-यात्रामें कोई भारी सामान नहीं ले जाता। स्टेशनपर हमारे यहाँकी तरह 'कुली' भी नहीं होते। कुछ रेल कम्पनीके पोर्टर रहते हैं, वे सहायता करते हैं। लोग एक छोटा-सा हलका सूटकेस लेकर यात्रा करते हैं और कुलियोंका काम उन्हें नहीं पड़ता।

हालैण्डमें मुसाफिरोंकी ट्रेनोंमें केवल दो श्रेणियाँ रहती हैं, द्वितीय और तृतीय। मुसाफिर गाड़ियाँ छोटी-छोटी केवल ३-४ डब्बोंकी बिजलीसे चलनेवाली तेज रहती हैं। हालैण्डमें नहरों, नदियों, समुद्रतटवर्ती किश्तियों, सड़कों और विमानोंसे बहुत अधिक यातायात होनेके कारण और इनका घना जाल देशभरमें फैला होनेके कारण रेलोंको अपेक्षाकृत कम माल ढोना पड़ता है।

चूँकि आजकी हमारी यात्रा १-२ घण्टेकी ही थी, हम सीधे रेस्टोराँ कारमें ही बैठे। खाना खाते-खाते ही हमारा गंतव्य स्टेशन नजदीक आ गया और जल्दीसे खा-पीकर हम तैयार हो गये।

आज रात भर हम हेरलिनके होटलमें ठहरेंगे, पर स्टेशनसे हम सीधे मोटरमें खदानक्षेत्र और सरकारी माइन्सका केमिकल वर्क्स देखने गये। यहाँ नयी-नयी इमारतें बन रही थीं और धूल-धक्कड़ थी। हालैण्डकी अपनी यात्रामें यहाँ हमें पहले पहल भारतीय धूल-धक्कड़के दर्शन हुए। इसके पहले हालैण्डमें हमको कभी भी सड़कोंपर धूल देखनेको नहीं मिली थी। ये कारखाने पूरे बन जानेके बाद यहाँ भी धूलका नाम-निशान न रहेगा।

हालैण्डमें खनिज सम्पत्ति बहुत कम है। लोहा, ताँबा आदि बिल्कुल नहीं है। आज हम जिस क्षेत्रमें आये हैं वहाँ कोयला मिलता है और हालैण्ड भरमें यही एक खनिज प्राप्तिका क्षेत्र है। इस क्षेत्रमें कोयलेकी १२ खानें हैं जिनमें चार तो सरकारी हैं और बाकी आठकी व्यवस्था चार प्राइवेट कम्पनियाँ देखती हैं। इस प्रदेशका नाम लिम्बर्ग है।

खानोंसे हरसाल सवा करोड़ टन कोयला निकलता है। पर इतनेसे देशका काम नहीं चलता, बाहरसे कोयला मँगाना पड़ता है। खदानोंमें कुल ५४ हजार मजदूर काम करते हैं। इनमेंसे ६ हजार मजदूर सरकारी खदानके केमिकल वर्क्समें काम करने-वाले हैं। इस कारखानेमें खाद तैयार की जाती है। खादके अति-रिक्त बिजली, गैस और कोक भी बनता है। सारे दक्षिण-पूर्व इलाकेमें गैस यहींसे सप्लाई की जाती है। एक पाइप लाइन जर्मन शहर आलसडार्फ तक गयी है। इस लाइनसे रूर क्षेत्रसे भी गैस ली जा सकती है। इस सरकारी कारखानेसे हर साल ३० करोड़ वर्ग मीटर गैस दी जाती है। हालैण्डमें लोग रसोई भी गैसपर

बनाते हैं। गैसकी तरह बिजलीकी लाइनें भी जर्मनी और बेल-जियमकी लाइनोंसे मिली हैं। सारे हालैण्ड देशकी बिजलीकी लाइनें भी आपसमें मिला दी गयी हैं ताकि देश भरमें चाहे जहाँसे बिजली दी जा सकती है।

खानके अन्दर काम करनेवाले मजदूरोंको कमसे कम वेतन १२.२७ गिल्डर (१५।) रुपया) रोज मिलता है। शनिवारको ६ घंटे और रोज ८ घंटे इस प्रकार ४६ घंटा सप्ताहमें काम करना पड़ता है। यह कमसे कम वेतन है। इसके अतिरिक्त कई बोनस भत्ते मिलते हैं। बच्चे होनेपर हर बच्चेपर २० से २५ रुपये महीने तक बोनस मिलता है। बच्चोंकी पढ़ाई-लिखाईकी व्यवस्था खदानकी ओरसे होती है। गोद लिये और पाले हुए बच्चोंके लिए भी भत्ता मिलता है। वृद्धावस्था और बीमारीकी अवस्थामें पेन्शनोंकी भी व्यवस्था है।

अमेरिका, ब्रिटेन आदि अन्य देशोंकी तुलनामें खानोंमें दुर्घटनाएँ सबसे कम होती हैं।

२७—खदान मजदूरके घरमें

(२३ अप्रैल १९५४)

आज सवेरे हम लोग खान मजदूरोंके मकान देखने गये। मकान छोटे हैं, पर हमारे स्टैंडर्डसे शाही हैं। एक घरमें हमने घंटी बजायी। मजदूरकी स्त्रीने दरवाजा खोला। हमने कहा कि हम आपका मकान देखना चाहते हैं। उसने कहा जरा ठहरिये, हमने अभी सफाई भी नहीं की है, पर हमने कहा कि जैसा है वैसा ही हम देखना चाहते हैं। हम अन्दर गये। सामने रसोईका

कमरा था। खड़े होकर गैस या बिजलीपर रसोई बनती है। बायीं ओर उठने बैठनेका कमरा है। फर्निचर ऐसा है जैसा अपने यहाँ हजार रुपया तनख्वाह पानेवाला भी न रखता होगा। कोच हैं, कुर्सियाँ हैं, टेबुल हैं, सब चमकदार। ऊपरकी मंजिलपर सोनेके कमरे हैं। मजदूर रात पाली करके आया था और ऊपर सोया था। बिलकुल नया बड़ा पलंग, बिस्तर बिलकुल साफ, चादर धोबीके यहाँ धुली सफेद, ऊनी कम्बल। उसके ऊपर एक और खंडमें एक सोनेका कमरा है। मजदूरके छ लड़के लड़कियाँ हैं, फिर भी एक और उसने गोद लिया है। (लड़कोंके लिए बोनस मिलता है यह हम ऊपर लिख चुके हैं।) इस लड़केका सोनेका कमरा यहाँ है। केवल एक बड़ी लड़की जो खुद काम करती है, पर जिसकी शादी अभी नहीं हुई है,अपने माता-पिताके साथ रहती है, बाकी सब अपना अपना अलग घर बनाये हुए हैं।

हम मकान देखकर जाने लगे तो लड़की बाहर आयी और कहने लगी कि काफी बनायी है, आपको पीकर जाना होगा। हम फिर घरमें गये। बिलकुल नये एक दर्जन प्याले टेबुलमेंसे निकले। हम लोगोंने काफी पी। लड़कीने रेडियो-ग्रामोफोनमें एक नृत्यकी प्लेट लगायी। श्रीधराणी नाचने लगे। पहले मांके साथ नाचे, फिर लड़कीके साथ। कहने लगे—आपके पति ऊपर सोये हैं, मेरी बीबी दिल्लीमें है और हम दोनों यहाँ नाच रहे हैं। पर वह नाच था, उसमें यौन भावना कुछ भी नहीं थी। १५ मिनट इस प्रकार आनन्दमें बिताकर हम बाहर निकले। पास पड़ोसके १०-२० बच्चे एकत्र हो गये थे। मानकेकरने सबकी तसवीर खींची। श्रीधराणीके नाचकी भी तसवीर उन्होंने ली थी—कहने लगे, तुम्हारी बीबीको दिखाकर ब्लैकमेल करूँगा (बादमें मालूम हुआ कि श्रीधराणीके सौभाग्यसे वह नेगेटिव ठीक नहीं आयी)।

दोपहरको हम मास्ट्रिच शहर गये। यहाँकी म्युनिसिपालिटीके बर्गोमास्टरने हमें एक छोटेसे रेस्टोराँमें भोज दिया। कहते हैं कि होटलोंके पारिख लोग उसे दुनिया भरमें जानते हैं। इसका नाम शरारती बच्चोंका कोना (Coindes Bous Enfants) है। बर्गोमास्टर गान्धीजीके भक्त हैं। अन्तर्राष्ट्रीय टेम्परेन्स सोसाइटीके (मद्यपानबन्दी सभा) उपाध्यक्ष हैं। उन्होंने गान्धीजीकी एक कहानी बतायी। कहा कि गान्धीजी कहते थे कि मुझे अगर दुनियाका बादशाह बना दिया जाये तो मैं एक ब्रिटेनमें अंग्रेजोंको छोड़कर बाकी सारी दुनियामें शराब पीना बन्द कर दूँगा।

खाना खाते समय श्री मणि बर्गोमास्टरके पास बैठे थे। उनके डरसे मणिने शेरी या वाइन न लेकर आरेंज जूस (संतरेका रस) लानेको कह दिया। बादमें बाकी सबको शेरी लेते देख उन्हें भोजनभर पश्चात्ताप होता रहा।

हमारा हालैण्डका दौरा खतम हो गया। आज हम हेग लौटेंगे। वहाँ ४-५ दिन रहकर २८ को विदाई समारोह होगा। उसी रातको विमानमें बैठकर स्वदेश जायँगे। एक ओर घर आनेकी, बीवी-बच्चोंके पास पहुँचनेकी, उत्कंठा और त्वरा थी, दूसरी ओर हालैण्ड छूटनेका रंज था।

तीसरे पहर ४-५२ पर हम ट्रेनसे रवाना हुए। यूट्रेक्टमें गाड़ी बदली और ७-४८ पर हेग वापस पहुँच गये।

मास्ट्रिच (मास ट्रिख्ट) बहुत पुराना शहर है। सन् १२२९ में बनी शहरकी दीवारका भाग अब भी मौजूद है। १२८० में मास नदीपर बना पत्थरका पुराना पुल अब भी चालू है। मास नदीके पास कई रास्ते आकर यहाँ मिलते हैं ~~~ नाम मास ट्रिख्ट पड़ा।

हैं। मास्ट्रिचमें ११वीं सदीका

गिरजाघर 'दि चर्च आफ अवर लेडी' देखने हम गये थे। प्राचीन कलावस्तुओंका इसमें अच्छा संग्रह है। (डच भाषामें चर्चको कर्क कहते हैं)।

२८—पत्रकारोंके साथ

(२४ अप्रैल १९५४)

इस बार हम हेगमें होटल डे सांमें न ठहरकर शहरके बाहर होटल विटेब्रुगमें ठहरे हैं। यह होटल अधिक रईसी है। सामने ही के० एल० एम० का विशाल केन्द्रीय दफ्तर है जहाँ सवेरे जाकर मैंने अपना वापसी रिजर्वेशन कर लिया।

आजका दिन हमने हेगके पत्रकारोंके साथ बितानेके लिए रख छोड़ा था। दिनमें हम लोग हेग पत्रकार संघके मन्त्री श्री डे विटके साथ 'हागशे कोरंट' दैनिक पत्रके दफ्तरमें गये। कई मंजिलकी उसकी इमारत है। सड़ककी ओर दोनों कोनोंपर दो बड़े गुम्बद हैं। एक गुम्बदमें बिजलीके लट्टुओंसे बड़े-बड़े अक्षर बनकर ताजासे ताजा खबरोंके शीर्षक बनते हैं और घूमते रहते हैं। बरलिनकी वाण्डरलिस्ट कम्पनीसे ६ सौ पौंडमें महायुद्धके पहले यह यन्त्र खरीदा गया था। दूसरी ओर गुम्बदके अन्दर एक प्लेनेटेरियम बना है। उत्तरी गोलार्द्धमें आकाश जिस प्रकार दिखाई देता है उसीकी प्रतिकृति यह है। बिजलीसे यह चलता है। चन्द्र, सूर्य, तारे आदि अपनी गतियोंसे चलते हैं। इस विशाल ब्रह्मांडको समझनेके लिए यह बहुत उपादेय है। इसे देखनेके लिए टिकट है, फिर भी हजारों आदमी हर साल इसे देखने आते हैं। हमारे यहाँ सारनाथमें नयी बननेवाली वेधशाला

में ऐसा यन्त्र जरूर लगाना चाहिये। 'हागशे कोरंट'वालोंने इसे भी जर्मनीसे ही मँगवाया था। फोटोके कैमरे बनानेवाली सुप्रसिद्ध जाइस कम्पनीने इसे बनाया था। लगभग १० हजार पौंड इसकी लागत थी।

'हागशे कोरण्ट'का दफ्तर देखकर हम लोग शेवनिंगेन गये। यहाँ साहित्यिकोंकी सोसाइटीकी ओरसे हमें लंच था। आज शेवनिंगेनमें कोई भीड़-भाड़ नहीं थी। खाना खानेके बाद हम लोग प्लैनेटेरियम देखने, फिर 'हागशे कोरण्ट'की इमारतमें गये। वहाँसे हम हेगके बड़े बाजारमें घूमने निकले। एक बड़े डिपार्ट-मेण्टल स्टोरकी कई मंजिलोंका चक्कर लगाकर हम लोगोंने घर ले जानेके लिए चीजें खरीदीं। बिजलीकी लिफ्टोंके साथ-साथ यहाँ बिजलीकी सीढ़ियाँ भी थीं। ये हमेशा चलती रहती हैं। नीचेकी सीढ़ीपर उचककर चढ़ जाइये। थोड़ी देरमें सीढ़ी ऊपर आ जायगी। वहाँ फिर उचककर उतर जाइये इसके बाद हम शहरसे १०-१५ मील एक एकांत स्थानपर स्थित होटलमें खाना खाने गये।

'हागशे कोरंट' की ओरसे आजका खाना था। भारतीय राजदूत भी निमंत्रित थे।

२९—रविवारकी सैर

(२५ अप्रैल १९५४)

आज रविवार है। कोई कार्यक्रम न होनेके कारण हम थोड़ी देर इधर-उधर घूमघाम कर होटल लौट आये। प्रीतम मलकानी आज अपने एम० आर० ए० के एक अमेरिकन दोस्त एल० मार्क्स शिपले (जूनियर) के साथ आये। शिपले ऊँचा तगड़ा लड़का है। गप लड़ानेके बाद हम लोग सिनेमा गये। यहाँ भी महायुद्धके कालकी किसी कहानीके आधारपर बनी फिल्म लगी थी।

सिनेमा देखकर हम लोग होटल वापस आये और लांउजमें चाय पी। शिपलेने बादमें मुझे एक पत्र लिखा जिसमें उसने आशा प्रकट की थी कि 'एक न एक दिन बनारसमें आकर पवित्र गंगा नदीमें गोता जरूर लगाऊँगा'। आखिरी दिन प्रीतम जरूरी कामके कारण होटल नहीं आ सके, पर उन्होंने एक चिट्ठी लिखी—विदेशमें एक बनारसी दूसरे ऐसे बनारसीको पत्र लिख रहा है जो बनारस वापस जा रहा है। प्रीतमने लिखा था—बनारससे मेरा नमस्ते। अगर गंगाजी जाइयेगा तो मेरे नामकी एक डुबकी लगा लीजियेगा। (यहाँ आनेपर दो दो ग्रहण बीत गये, पर प्रीतमके लिए डुबकी लगाना अभी बाकी है, वैसे उसके नामपर गंगाजीपर नौका विहार अवश्य कर आया हूँ।)

हमारे दोस्तोंमेंसे डाक्टर नारायण मेनन और श्री शास्त्रीको छोड़कर और तीनों आज ब्रुसेल्स गये हैं ब्रसेल्सकी नाइट लाइफके बारेमें उन्होंने बहुत सुना था। श्री शास्त्री फ्रांसके बोर्दो शहर दो दिनके लिए गये हैं। वहाँ अंतर्राष्ट्रीय श्रमजीवी पत्रकार संघका वार्षिक अधिवेशन हो रहा है। श्री शास्त्री भारतीय श्रम-जीवी पत्रकार संघकी ओरसे दर्शकके रूपमें गये हैं।

कल यहाँ डेनमार्कके राजा फ्रेडरिक और रानी इनग्रिड तीन दिनके दौरेपर आ रहे हैं। उनके स्वागतके लिए हेग, आम्सटरडम और राटरडम तीनों शहरोंमें सजावट और रोशनी हो रही है। सारे सरकारी अधिकारी भी इसीकी तैयारीमें हैं। [हालैण्डकी महारानीकी तरह डेनमार्कके राजाके भी कोई लड़का नहीं है, तीन लड़कियाँ हैं। हालैण्डकी महारानीके कुल चार लड़कियाँ हैं।]

३०—डेल्फ्टकी केबुल फैक्टरी

(२६ अप्रैल १९५४)

आज डेल्फ्ट शहरमें नेदरलैण्ड केबुल कारखानेमें उत्सव है। भारतके डाकतार विभागने इस कारखानेको २-२॥ सौ मील लम्बाईके केबुलका आर्डर दिया था। उसकी आखिरी खेप आज जा रही है। भारतीय राजदूत श्री चक्रवर्तीकी अध्यक्षतामें आजका उत्सव हो रहा है। पत्रकारोंके हमारे दलमेंसे दो ही हम हेगमें थे। हम दोनों, मैं और डाक्टर मेनन, इस उत्सवमें गये थे। समारोह बड़ा सादा, पर बड़ा ही प्रभावोत्पादक था। दोनों राष्ट्रोंके झंडे फहरा रहे थे। (दोनोंके झंडे तिरंगे हैं)।

यह केबुल कम्पनी १९१४ में स्थापित हुई। बारीकसे बारीक तारसे लेकर डेढ़ लाख वोल्ट ताकतकी बिजली ढोनेवाले तार तक यहाँ बनते हैं। इतना बड़ा कारखाना है कि एक तरफ टनों ताँबा भट्ठीमें गलता है और मोमकी तरह या रूईसे जिस प्रकार सूत बनते हैं उस प्रकार बड़े बड़े विशाल यंत्रोंसे ताँबेके ढोकोंसे तार बनता जाता है। इस्पातके टेप और तार भी यहाँ बनते हैं। कई तार गूँथकर केबुल बनानेका सारा काम

यंत्रोंसे होता है। इन्सुलेशनके लिए पाट (जूट) भी लगता है जो संभवतः भारतसे जाता है। बिजलीके तार बहुत सावधानीसे टेस्ट करने पड़ते हैं। कारखाना नहरके किनारे ही है। माल तैयार होते ही पार्सल सीधे जहाजपर रवाना हो जाता है। भारत जानेवाले केबुलके आखिरी लपेट बक्समें राजदूत श्री चक्रवर्तीने कील लगायी। तुरत क्रेनसे वह उठाया गया और बाहर जहाज पर रखा गया। श्री चक्रवर्तीने छोटासा भाषण कर कारखानेकी सफाईकी विशेष प्रशंसा की।

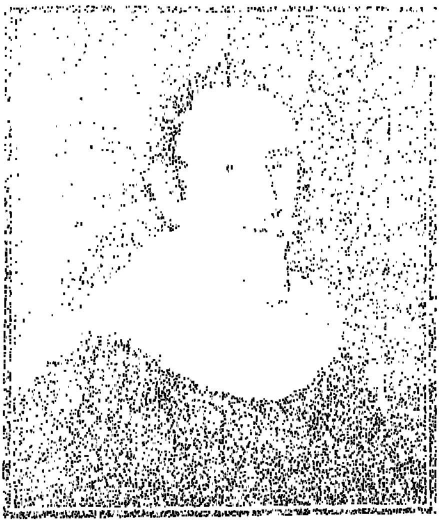
बादमें लंच हुआ जिसमें फर्स्ट सेक्रेटरी डाक्टर सिनहाने भी भाषण किया। भारत-हालैण्ड परस्पर व्यापार-सम्बन्ध किस आधारपर बढ़ सकता है, इसपर उन्होंने थोड़ेमें प्रकाश डाला और मेजमानोंको धन्यवाद दिया।

डेल्फट रंगीन चीनी मिट्टीके बर्तनोंके लिए प्रसिद्ध है। आरेंज राजघरानेका मूलस्थान डेल्फट ही है। पीसाकी झुकती मीनारकी तरह यहाँके चर्चकी मीनार भी झुकी हुई है।

अन्तर्राष्ट्रीय विधानका प्रणेता ग्रोशियस

सांस्कृतिक क्षेत्रमें हालैण्डकी दुनियाको सबसे बड़ी देन इसी डेल्फट शहरसे मिली है। अन्तर्राष्ट्रीय विधानके प्रणेता ग्रोशियस इसी शहरमें पैदा हुए थे। ग्रोशियस आधुनिक कालका एक अद्भुत मेधावी पुरुष और लोकविलक्षण विद्वान माना जाता है। इनका वास्तविक नाम ह्यूगो डी ग्रूट था। डेल्फटमें सन् १५८३ के ईस्टर सण्डेको इनका जन्म हुआ। ८ सालकी उम्रमें ही इस बालकने लैटिनमें कविता करना शुरू हुआ। ११ सालकी उम्रमें लायडन विश्वविद्यालयमें इसे प्रवेश मिल गया। इन्होंने वहाँ किसी एक विषयका अध्ययन नहीं किया—ग्रीक और रोमन इतिहास, दर्शनशास्त्र, ज्योतिष, गणित, धर्मशास्त्र

निधानशास्त्र जो भी विषय मिला सबमें पारंगत हो गये। २२ सालकी उम्रमे अन्तर्राष्ट्रीग विधानपर 'दि ला आफ स्पायल्स' नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ लिख डाला। फ्रांसके बादशाह तक इनकी ख्याति पहुँच गयी। १५९९ में ही इन्होने हालैण्डके न्यायालयोंमें वकालत शुरू की, पर इस पेशेमें इस विद्वानका जी नही लगा। कहते थे कि जिनके खिलाफ वकील बहस करता है उनकी घृणाका पात्र होता है, जिनकी पैरवी करता है उनसे बहुत कम पारितोषिक मिलता है और जनता भी सम्मान नहीं करती।



इन्होंने अनेक भाषाओमें काव्य रचना और विविध विषयोमें ग्रन्थ रचना शुरू की। २४ वर्षकी उम्रमें ही हालैण्डके 'एड-वोकेट फिस्कल' नियुक्त हुए। ह्यूगो दि ग्रट महान डच तो थे ही पर 'दि फ्री सी' मुक्त वाणिज्यका समर्थन कर वे महान विश्वनागरिक भी बन गये। इनका 'दि राइट्स आफ वार एण्ड पीस' ग्रन्थ आज भी विधान-विज्ञानका विश्वकोष माना जाता है और अन्तर्राष्ट्रीय पंचायतके सिद्धान्तके मौलिक स्रोत इसी ग्रन्थसे दुनियाको प्राप्त हुए हैं। सार्वभौमिकता, राज्य संस्था, सम्पत्ति,

काण्ट्राक्ट, नागरिक अधिकार-हनन, दण्ड-व्यवस्था आदि कानूनके हर एक पहलूपर इनके ग्रन्थोंमें विवेचन है। अन्तर्राष्ट्रीय सभ्यता, शान्ति, विधान व्यवस्था आदि सिद्धान्तोंका प्रणेता यह प्रतिभाशाली पुरुष यूरोपकी एक बहुत अशान्त कालावधिमें पैदा हुआ था। यह काल-प्रभाव इन्हें भी भुगतना पड़ा। अन्त समयमें इनको एक तरहसे समाज-बहिष्कृत जीवन बिताना पड़ा। ईसाइयोंके साम्प्रदायिक झगड़ोंके कारण लोवेस्टीनके किलेमें ये बन्दी बनाकर रखे गये। वहाँसे किताबोंके बड़े लकड़ीके बकसके अन्दर छिपकर इन्हें भागना पड़ा। अगस्त १६४५ में ग्रोशियसकी मृत्यु हुई। इनका अद्भुत असाधारण मस्तिष्क ताँबेके एक कलशमें बन्दकर मृत्युस्थान रोस्टोकके कैथेड्रलमें भूमिस्थ किया गया। बाकी शरीर जन्मस्थान डेल्फ्ट भेजा गया और वहाँ न्यूचर्चमें समाधिस्थ किया गया। हालैण्डके राष्ट्रपिता विलियम दि साइलेण्टकी समाधि भी डेल्फ्टमें ही पासमें है। इस प्रकार यह डेल्फ्ट शहर हालैण्डके दो सुपुत्रोंका समाधिस्थान बन गया है।

रातको हम भारतीय दूतावासके श्री मेननके घर खाना खाने गये। ये मेनन हमारे साथी डाक्टर नारायण मेननके रिश्तेदार लगते हैं। श्रीमती मेननने बहुत प्रेमसे खाना बनाया था और बहुत आग्रहपूर्वक खिलाया भी। हमारी यात्राके आखिरी ३-४ दिन मेनन दम्पती और महाजन हमारे साथ ही फ्लाशिंग, आइण्डहावन, मास्ट्रिच आदि जगहोंपर गये थे। श्रीमती मेननने पहले भी एक दिन और खाना खिलाया था। ये दोनों पति-पत्नी बहुत मिलनसार हैं।

३१—बच्चोंके नगर मदुरोडैममें

(२७ अप्रैल १९५४)

आजका दिन बिलकुल खाली था। ब्रुसेल्स गये हमारे साथी और श्री शास्त्री भी वापस आ गये। अगले दिन मुझे रेडियो नेदरलैण्डपर फिर एक भाषण रेकार्ड कराना था, इसलिए आज दिनमें मैंने बैठकर उसे तैयार किया।

डेनमार्कके राजा और रानी आज हेगमें आये थे। उनके स्वागतमें सेण्ट जेकब चर्चमें सामूहिक वाद्य संगीत (कन्सर्ट) का १ घंटेका कार्यक्रम था। हम लोग भी गये थे। राजा-रानीके लिए मुख्य मुख्य सड़कें कुछ देरके लिए यहाँ भी रोकी गयी थीं। स्त्रियों बच्चोंकी भीड़ राजदम्पतीको देखने छोटे-छोटे झंडे लेकर सड़कोंपर उसी प्रकार उत्साहसे दौड़ रही थी जिस प्रकार भारतमें ऐसे अवसरोंपर दौड़ती है।

हालैण्ड बाँधोंका देश है। अंग्रेजीमें बाँधको डैम कहते हैं इसलिए वहाँके बहुतसे शहरोंके नामोंके साथ डैम शब्द जुड़ा रहता है, जैसे—आम्सटर्डम, राटरडम (जल्दी उच्चारणमें डैमका डम हो जाता है)। पर वहाँ 'मदुरोडैम' नामक एक ऐसा अद्भुत शहर बनाया गया है जैसा दुनियामें शायद ही कहीं और होगा। आज दिनमें मैं उसे देखने गया था।

सारे हालैण्ड देशकी सभी प्रसिद्ध इमारतोंका छोटे पैमानेपर यहाँ निर्माण कर एक नकली नगर बनाया गया है। हेगसे समुद्रतटवर्ती उसके उपनगर शेवनिंगेन जानेके रास्तेमें होटल विटेब्रुग और के० एल० एम० के दफ्तरके ठीक सामने १८ हजार वर्गगज जमीनपर यह बनाया गया है। इसमें कोई बसता नहीं,

पर हर साल अप्रैलसे अक्तूबरतक लाखों व्यक्ति इसे देखने आते हैं। बच्चोंके लिए तो यह पंचपकवानसे भी अधिक प्रिय हो जाता है। इस एक छोटेसे शहरको घण्टे दो घण्टेमें देखनेपर सारे हालैण्डका सृष्टिसौंदर्य, वास्तुसौंदर्य और विज्ञान सौंदर्य देखनेको मिल जाता है।

इस नकली शहरमें बन्दरगाह हैं, जहाज हैं, पनचक्कियाँ हैं, रेल हैं, ट्राम हैं, बड़ी-बड़ी सड़कोंपर हर मेलकी और हर आकारकी दौड़ती मोटरगाड़ियाँ हैं, बाजार हैं, नहरें हैं, पुराने किले हैं, आधुनिकतम इमारतें हैं, अजायबघर हैं, शीशाबंद खेतोंकी खेती भी है। शिफोलके हवाई अड्डेका मय हवाई जहाजोंके पूरा नमूना यहाँ है। रातको जब सब 'इमारतों'में बत्तियाँ जलती हैं तब तो यह इन्द्रपुरी हो जाता है। इस छोटेसे नगरके दर्शक स्त्री-पुरुष बालक ऐसे लगते हैं जैसे लिलिपुटमें गुलिवर घूम रहे हों।

मदुरोडैमकी कल्पना बिलकुल नयी नहीं है (काशीका भारतमाता मन्दिर कुछ-कुछ ऐसी ही कल्पनाके आधारपर बना है।) पर बड़ी प्रभावोत्पादक है। हालैण्डके शहर लारेनमें क्षय रोगसे पीड़ित छात्रोंके लिए नीदरलैण्ड्स स्टूडेण्ट्स सैनेटोरियम नामक अस्पताल है। यहाँ न केवल रोगी छात्रोंकी चिकित्सा होती है वरन् रोगमुक्त, स्वास्थ्यलाभ करनेवाले छात्रोंकी पढ़ाईका प्रबन्ध भी है। इसलिए यह अस्पताल 'दुनियाका सबसे छोटा विश्वविद्यालय' भी कहलाता है। इस अस्पताली विश्वविद्यालयके लिए अखण्ड रूपसे धन प्राप्त होते रहनेकी व्यवस्था करनी थी।

द्वितीय महायुद्धकालमें हालैण्डके देशभक्त छात्रोंने स्वतन्त्रता-की भावनाकी जो ज्योति जर्मन अधिकृत कालमें भी जलाये रखी थी उसकी रक्षा करनी थी। सैनेटोरियमके प्रोफेसर जी० सी० हेरिंगाको सन् १९५० में सुझाया गया कि २५ साल पहले

इंगलेण्डमें बीकनफील्डमें भी अस्पतालोंकी सहायताके लिए एक नकली छोटा नगर बनाया गया था और उसके दर्शकोंके टिकटकी आयसे अस्पतालोंको खासी मदद मिल जाती थी इसलिए वैसा ही एक नगर हालैण्डमें भी बनाया जाय। यह कल्पना सबको जँच गयी। विलेमस्टाड (कुराकाओ) के श्री जे० एम० एल० मदुरोका पुत्र जार्ज लायडनमें पढ़ता था। महायुद्धकालमें डाचाऊके नजरबन्द शिविरमें इसकी मृत्यु हो गयी। इसकी स्मृतिमें छोटा नगर बनानेके लिए श्री मदुरोने धन देना स्वीकार किया और नये शहरका नाम जार्ज मदुरोकी स्मृतिमें मदुरोडैम रखनेका निश्चय हुआ। हालैण्डकी बड़ी-बड़ी व्यापारी कोठियों, कारखानों तथा संस्थाओंने इस शहरको बनानेमें सहायता दी। देश-विदेशके बहुतसे धनियोंने महायुद्धमें गत अपनी सन्तानोंकी स्मृतिमें इस नगरके निर्माणमें आर्थिक सहायता दी और नमूने देकर सहयोग दिया।

इस नगरकी सब वस्तुओंके नमूने १:२५ के अनुपातसे हूबहू मूलकी तरह बनाये गये हैं। नगरका वातावरण बिलकुल प्राकृतिक जैसा बनाया गया है और हालैण्डकी पिछले १ हजार साल-में जो भौतिक प्रगति हुई है उसका पूरा चित्र इस एक नगरके दर्शनसे प्राप्त हो जाता है।

मदुरोडैम केवल एक खिलौनेका मामूली नगर नहीं है। इसके लिए एक म्युनिसिपल कौंसिल, आल्डरमेन और बर्गोमास्टर (मेयर) भी चुने गये हैं। सौभाग्यसे बर्गोमास्टर इसे शाही मिल गया है। महारानी जूलियानाकी बड़ी लड़की राजकुमारी बीट्री इसकी बर्गोमास्टर चुनी गयी हैं और वे इसके रखरखावमें बड़ी दिलचस्पी लेती हैं। २ जुलाई १९५२ को राजकुमारी बीट्रीने नगरकी 'म्युनिसिपल कौंसिल' की उपस्थितिमें नगरका उद्घाटन किया। कौंसिलके लिए हेगके स्कूलोंसे हर साल

३६ छात्र-छात्राएँ चुनी जाती हैं। ५० छात्र-छात्राओंका इसका एक अपना आर्केस्ट्रा भी है। हेगमें जब फूलोंकी प्रदर्शनी होती है तो यह नगर भी अपनी अलग प्रदर्शनी करता है।

मदुरोडैममें बच्चोंके लिए सबसे प्रिय उसकी बिजलीकी रेल है। ये गाड़ियाँ पुलोंपर दौड़ती हैं, सुरंगके अन्दरसे जाती हैं. मदुरोडैम सेण्ट्रल स्टेशनपर आकर रुकती हैं, मिनटभर रुक-कर फिर चलती हैं, पहाड़ोंमें, घाटियोंमें, देहाती बस्तीके पाससे तैलक्षेत्रमें, तेलके पंपोंके पाससे निकलती हैं। कुल सवा दो मील लम्बी इसकी लाइन मदुरोडैम नगरभरमें फैली है।

सैण्ट्रल स्टेशनके पास एक चर्च है जिसकी दीवारकी घड़ीमें समय, वार, महीना और सूर्यकी राशि आप देख सकते हैं। हेगसे निकलनेवाले 'हागशे कोरण्ट' अखबारके दफ्तरका पूरा नमूना यहाँ है। डिपार्टमेंटल स्टोर 'बी हाइव' का भी नमूना यहाँ है। डाकखाना, बंक, बीमा कम्पनी, बड़ी बड़ी दूकानोंका चौक. सिनेमा, टेलीविजन हाल, थियेटर, हेगका विश्वविख्यात पीस पैलेस, चार मोटरें दौड़ने लायक चौड़ी सड़क, बीच-बीचमें पेट्रोल पंप, मोटर-दुर्घटनाका दृश्य, रेडियो स्टेशन, ट्यूलिप फूलों-का बाग आदि ८५ डच वस्तुओंके नमूने इस छोटे, मनोरंजक आश्चर्यकारक और शिक्षाप्रद नगरमें हैं।

काशी दुनियाकी सबसे प्राचीन जीवित नगरी समझी जाती है। इसके विकासका इतिहास बतानेवाली कोई 'मदुरोडैम' जैसी नगरी काशीमें बनायी जाय और उसके दर्शकोंके टिकटसे होने-वाली आय किसी अच्छे काममें लगायी जाय या घाटोंकी रक्षामें ही लगायी जाय तो एक नयी चीज इस देशमें भी हो जायगी।

× × ×

शामको हम सब लोग श्री महाजनके घर गये। हमारी

यात्रामें हमारे साथ डच सरकारी विभागोंके जितने अधिकारी रहते थे उन सबको श्री महाजनने आज काकटेल पार्टी दी थी।

३२—बिदाई समारोह

(२८ अप्रैल १९५४)

आज हमारे हालैण्ड प्रवासका अन्तिम दिन है। आज कार्यक्रम भी बहुत व्यस्त है। हमारा विमान रातको १० बजे खुलनेवाला है और शामका बिदाई समारोह ८ के पहले समाप्त नहीं होगा। इसलिए हम लोगोंने अपना सामान सवेरे ही पैक कर दिया। हमारे पास करीब १०-१५ सेर वजनकी तो किताबें और अन्य साहित्य हो गया था। उसमेंसे बहुत जरूरी मैंने अपने साथ बाँध लिया और बाकी सब परराष्ट्र विभागमें भेज दिया कि वे बादमें उसे भारत भेज दें।

दिनमें आज भारतीय राजदूत श्री चक्रवर्तीके वासस्थानपर हम लोगोंका भोज था। आज पूड़ियाँ बनायी गयी थीं। मेरे लिए श्रीमती चक्रवर्तीने खास तौरसे एक कटोरा श्रीखंड बनवाया था। हेगमें यूनेस्कोका युद्धकालमें कलावस्तुसंग्रहके सम्बन्धमें एक सप्ताहसे एक सम्मेलन चल रहा है। उसके लिए आये भारतीय प्रतिनिधि भी भोजमें सम्मिलित थे। खाना खाकर हमने सब लोगोंसे बिदा ली और वहाँसे रेडियो नेदरलैण्डके हेगवाले स्टूडियोमें आये। यहाँ मेरा हिन्दी भाषण और अन्य लोगोंका एक सम्मिलित अंग्रेजी इन्टरव्यू रेकार्ड किया गया। (मेरे भाषणके दोनों रेकार्ड बादमें २३ जुलाईको इलाहाबाद और लखनऊ रेडियोसे ब्राडकास्ट किये गये)।

रेकार्डिंगके बाद हम होटल वापस आये। इसी होटलमें हमारी विदाईका अन्तिम समारोह था। डेनमार्कके राजदम्पतिके आगमनके कारण परराष्ट्रमंत्री इस समारोहमें नहीं आ सके। सेक्रेटरी जनरलने भाषण कर हमारी वापसी यात्राके लिए शुभ-कामना प्रकट की। श्री मणिने भी बहुत समयानुकूल भाषण कर हालैण्डके लोगोंपर भारतीय पत्रकार दलकी स्मृतिके लिए अच्छी छाप छोड़ी। ६ से ८ बजे तक सब लोगोंसे मिलकर हम और हमारे साथी अन्तिम नमस्कार करते रहे और प्रत्येकको भारत आनेका निमन्त्रण देते रहे। ८ बजे हम तीन साथी मोटरोंपर सवार होकर ४० मील दूर शिफोल हवाई अड्डेके लिए रवाना हुए। हमारे तीन साथी मानकेकर, श्रीधरानी और मेनन कल सबेरे रवाना होंगे। मानकेकर जेनेवा सम्मेलनके समाचार भेजनेके लिए जेनेवा जा रहे हैं। श्रीधरानी जर्मनी घूमकर जेनेवा जानेवाले हैं। मेनन लन्दन जाकर फिर लौटेंगे। ये सब १ महीनेके अन्दर ही भारत आ जायँगे। मैं, मणि और शास्त्री आज रवाना हो रहे हैं। भारतके लिए सीधे दूसरा विमान ३ दिन बाद है और हम तो जल्दीसे जल्दी घर लौटना चाहते हैं।

हवाई अड्डेपर हमें पहुँचानेके लिए श्री महाजन, मेनन दम्पती और डच सरकारके सूचना विभागके श्री टकसीरा आये थे। सामान तौलाने आदिके बाद हम सबने जल्दी-जल्दी थोड़ासा खाना खाया। इतनेमें विमानपर जानेकी सूचना लाउडस्पीकरपर दी गयी और हम भारी दिलसे उठे।

घर जल्दी पहुँचनेकी उत्कंठा थी, फिर भी भारी दिलसे ही हम विमानमें जा बैठे। ठीक १० बजे विमान उड़ा।

भारतसे हालैण्ड जाते समय हमारा विमान कराची, बगदाद, काहिरा, रोम और म्यूनिख, इन पाँच अड्डोंपर ठहरा था, पर लौटते समय विमान केवल रोम, काहिरा और कराचीमें ही

ठहरा। लौटते समयका विमान भी कान्स्टेलेशन ही था, पर जाते समय जिस प्रसन्नतासे यात्रा हुई थी वह लौटते समय नहीं थी। विमानकी उड़ान बहुत लम्बी-लम्बी थी, इसलिए भी उतना आनन्द नहीं आया, थकावट रही।

रातको ही हम रोम पहुँचे, दूसरे दिन सबेरे काहिरा। काहिरा से उड़े तो रातको ९ बजे कराची पहुँचे। यहाँ ५ घंटे विमान रुका रहा। ये पाँच घंटे बहुत अखरे। घरके पास पहुँचने पर भी पाँच घंटे रुकना पड़ा। २ बजे यहाँसे विमान रवाना हुआ वह सबेरे ८॥ बजे कलकत्तेके दमदम अड्डेपर पहुँचा। कलकत्तेमें सबेरे पानी बरसा था और आसपास घने बादल थे। यात्राकी थकावट अधिक थी, इसलिए सबेरे विमानमें जी काफी मचलाया, एक घूँट भी चाय गलेके नीचे नहीं उतरी।

स्वदेश वापस

दमदम हवाई अड्डेपर कस्टमवालोंने के० एल० एम०के मेहमान जानकर हमको अधिक तकलीफ नहीं दी, हमारे पास था भी नहीं कुछ। वहाँसे बहुत जल्दी छुटकारा मिला। हम शहर जाने-के लिए बसमें बैठे ही थे कि हवाई अड्डेके पास ही एक विमान धड़ामसे गिरा और उसमें आग लग गयी। के० एल० एम० वालोंने तो पहले यही समझा कि हम जिस विमानसे उतरे वही उड़नेपर गिरा। वे घबरा गये, पर शीघ्र ही मालूम हुआ कि जो विमान गिरा वह डकोटा था और जाम एयरवेजका था। बादमें मालूम हुआ कि उसमें ७-८ आदमी मरे भी।

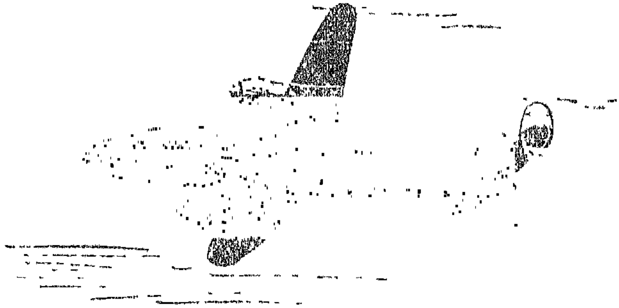
गिरे विमानकी आगका धुआँ पीछे छोड़ते हुए हमारी बस हवाई अड्डेसे शहरकी ओर रवाना हुई। के० एल० एम० के दफ्तरके पास ही 'आज' के कलकत्तेके प्रतिनिधि श्री ज्योति दास गुप्त मिल गये। मणि और शास्त्री अपने-अपने मित्रोंके यहाँ गये। मैंने टैक्सी की और श्री दासगुप्तके यहाँसे अपना बिस्तर

लिया। ज्योतिके पिता काशीके सुप्रसिद्ध डाक्टर दासगुप्त भी वहीं थे। उन्हें नमस्कार कर हावड़ा स्टेशन आया। गाड़ी तैयार थी और श्री दास गुप्तने रिजर्वेशन भी करा लिया था।

रातको १२ बजे मुगलसराय पहुँचा। घरके लोग स्टेशनपर आये थे। एक बजे दिल्ली एक्सप्रेससे बनारस आया।

इस प्रकार मेरी पहली यूरोप-यात्रा समाप्त हुई और मैं सकुशल वापस आ गया।

काशीके लोगोंने मेरी हालैण्ड-यात्राके सम्बन्धमें काफी दिलचस्पी ली। लौटनेके दो सप्ताहोंके अन्दर ही मुझे अपनी हालैण्ड-यात्राके सम्बन्धमें कई जगहोंपर भाषण करने पड़े। सबसे महत्त्वका भाषण रोटरी क्लबमें हुआ। इसके अतिरिक्त पत्रकार संघ, तुलसी पुस्तकालय, अभिमत, आदि संस्थाओंमें भी भाषण हुए। रोटरीकी सभामें मैंने हालैण्डके उद्योगीकरण और मालिक-मजदूरोंके मधुर सम्बन्धपर विशेष रूपसे प्रकाश डाला।



३३—उपसंहार

मैं समझता हूँ कि भारतीय पत्रकार-मण्डलकी २५ दिनकी यह हालैण्ड-यात्रा हर प्रकारसे सफल रही। ६ सदस्योंका छोटासा मण्डल इतने बड़े देशका सम्पूर्णतया प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता था, फिर भी मण्डलके छहों सदस्योंने अपनी विविधता और वैचित्र्य-विभिन्नताके साथ-साथ अपनी एकता और खुशदिलीसे अपने निमन्त्रकोंको असन्तोष नहीं होने दिया।

मण्डलके कार्यका मूल्यांकन नीचे दिये गये दो पत्रोंसे किया जा सकता है। हेग स्थित भारतीय राजदूत श्री वी० एल० चक्रवर्तीने श्री मणिको नागपुरके पतेसे जो पत्र अंग्रेजीमें भेजा उसमें उन्होंने लिखा था—

"मुझे आपका ४ मईका पत्र अभी मिला। आप सकुशल अपने लोगोंमें पहुँच गये यह जानकर खुशी हुई। मैं समझता हूँ कि आपकी कलकत्तेतककी यात्रा सुखद रही होगी और के० एल० एम० वालोंने आपकी अच्छी देखभाल की होगी।

हम लोगोंसे यहाँ जो कुछ बना उसके लिए आपने मुझे और मेरी पत्नीको धन्यवाद दिया है, यह आपकी कृपा है। आप सब लोगोंके यहाँ आनेसे हम लोगोंको बहुत आनन्द हुआ और आपका साथ सुखप्रद रहा। मैं समझता हूँ कि आपके पत्रकार मण्डलकी इस देशकी यात्रा हर प्रकारसे सन्तोषजनक थी और आप लोगोंने डच लोगोंपर अत्यधिक अच्छा असर डाला। जितनी सूचनाएँ मुझे मिलती रहीं, सबमें सब लोग आपकी तारीफ ही करते रहे। वे समझते हैं कि इस देशमें भारतसे एक बहुत ही अच्छा और प्रातिनिधिक पत्रकार-मण्डल भेजा गया था। हालैण्डकी आपकी सम्पूर्ण यात्रामें आप लोगोंने जो स्वच्छन्द (इनफार्मेल), खुशदिल और मैत्रीपूर्ण व्यवहार रखा

उसकी ये लोग तारीफ करते थे। आपका अन्तिम विदाईका भाषण भी बहुत अच्छा और प्रभावोत्पादक था। मुझे यह जान कर भी प्रसन्नता हुई कि आप लोग यहाँ जिन-जिनसे मिले सबके सामने भारतका वास्तविक चित्रण किया और आप लोगोंका व्यवहार भारतके सच्चे राजदूतों(ट्रू अम्बासेडर्स) काछा था। मैंने भी अपनी सरकारके पास रिपोर्ट भेज दी है कि आपके मंडलकी यहाँकी यात्रासे बहुत अनुकूल प्रभाव पड़ा है।"

डच सरकारके वैदेशिक विभागके सूचना-अधिकारी श्री जे० डब्लू० एस० फान डर फासेनने १४ मईके अपने पत्रमें मुझे लिखा—

"आप तथा आपके साथियोंके अतिथि रूपमें यहाँ आगमनसे हमें बहुत ही प्रसन्नता हुई। आप लोगोंके मुख्यात और खुशदिल (डिस्टिंग्विश्ड एण्ड चीयरफुल) पत्रकार-मण्डलको हम आसानीसे भूल नहीं सकते।"

श्री फान डर फासेनने ठीक ही लिखा। मैं भी अपनी २५ दिनकी हालैण्ड-यात्रा आसानीसे दस-पाँच वर्षमें क्या, आजीवन नहीं भूल सकता।

परिशिष्ट

(१) हालैण्ड-भारतका प्राचीन सम्बन्ध

हालैण्ड और भारतका सम्बन्ध नया नहीं, साढ़े तीन सौ साल पुराना है। मूलतः व्यापारके आधारपर ही यह स्थापित हुआ और व्यापारके आंतरिक उद्देश्यसे ही दोनों देशोंमें सांस्कृतिक सद्भाव-वृद्धि हुई। जिस देशके साथ व्यापार-सम्बन्ध बढ़ाने हों उस देशकी भाषा, रीतिरिवाज और कला-संस्कृतिकी जानकारी रखना आवश्यक और लाभप्रद होता है। हालैण्डकी राजधानी हेगसे कोई १२ मील उत्तर-पूर्व लायडन नामक नगर है जहाँकी युनिवर्सिटी पौने चार सौ साल पुरानी है। इस विश्वविद्यालयमें एशियाकी भाषाओं और कलासंस्कृतिके अध्ययनकी विशेष व्यवस्था प्रारम्भसे ही की गयी थी। यह विश्वविद्यालय सन् १५७५ की ८ फरवरीको स्थापित हुआ। सन् १६१३ में फरवरीमें अरबी भाषाके पीठकी यहाँ स्थापना हुई और प्रसिद्ध अन्तर्राष्ट्रीय विधिज्ञ ग्रोशियसके एक मित्र टामस एर्पेनियस इसके पहले पीठाध्यक्ष नियुक्त हुए।

हिन्देशियाके रास्तेमें होनेके कारण डच लोगोंने अरब देशों और भारतके साथ भी व्यापार शुरू किया था। डच ईस्ट इण्डिया कम्पनीकी स्थापना सन् १६०२ में और डच वेस्ट इण्डिया कम्पनीकी स्थापना सन् १६२१ में हुई। ईरानकी खाड़ीके मुहानेके पास बन्दर अब्बासमें और इस्पाहानमें तथा भारतमें गुजरात, बंगाल, कोरोमण्डल तट और मलाबार तटपर इनकी व्यापारी कोठियाँ खुली थीं। भारतमें इनकी मुख्य कोठी सूरतमें

ताप्ती तटपर थी क्योंकि उन दिनों पश्चिमी तटका सबसे बड़ा बन्दरगाह सूरत ही था। उन दिनों दिल्लीमें मुगलोंका राज्य था इसलिए डच व्यापारियोंके लिए फारसी सीखना आवश्यक था। सूरतकी कोठीमें डच ईस्ट इण्डिया कम्पनीने फारसी जाननेवाला एक कारकून रखा था जो कम्पनी तथा दरबार और दरबारियोंके बीच पत्रव्यवहारका काम देखता था। यह कारकून कोई ईरानी या भारतीय मुसलमान नहीं, पर हिन्दू था।

सन् १६६२ में सूरतकी कोठीके अध्यक्ष डर्क फान एड्रिचेम कम्पनीकी ओरसे दिल्लीके दरबारमें दूत नियुक्त हुए। औरंगजेबके गद्दीनशीन होनेपर उन्हें बधाई देनेके लिए एड्रिचेम सूरतसे दिल्ली गये थे। औरंगजेबके दरबारके फ्रेंच डाक्टर फ्रांकोई बर्नियरने एड्रिचेमकी योग्यताकी प्रशंसा की है। ३ महीने दिल्ली रहकर एड्रिचेम नवम्बरमें सूरत वापस लौट गये।

५० साल बाद औरंगजेबके उत्तराधिकारी बहादुरशाहके दरबारमें कम्पनीकी ओरसे जोन जोसुआ केटेलार नामक दूत नियुक्त हुए। सूरतसे लाहोर और वहाँसे वापसी यात्रामें इन्हें (१७११-१३) पूरे दो साल लगे थे।

कम्पनीके कर्मचारी होनेपर भी श्री केटेलार डच नहीं जर्मन थे। हिन्दी भाषियोंको इनका नाम याद रखना होगा क्योंकि इन्हीं जर्मन महाशयने हिन्दुस्तानीका सर्वप्रथम व्याकरण डच भाषामें लिखा था। सन् १६९८ में लखनऊमें लिखी इस व्याकरण की एक हस्तलिपि हेगके सरकारी रेकर्ड आफिसमें रखी हुई है। इण्डियन आर्काइव्जको इसकी माइक्रोफिल्म मँगानी चाहिये और इसका हिन्दी अनुवाद छपना चाहिये। सन् १७४३ में यूट्रेक्ट विश्वविद्यालयके प्रोफेसर डेविड मिलियसने इसका लैटिन भाषा-न्तर लायडनसे प्रकाशित कराया था। केटेलरके भाषाज्ञानके

कारण ही डच ईस्ट इण्डिया कम्पनीने उनके डच न होने, जर्मन होनेपर भी उनको अपना दूततक नियुक्त किया था।

हर्बर्ट डी जागेर नामक एक और कम्पनी-कर्मचारीका भारतसे बहुत सम्बन्ध आया। ये बहुभाषाविज्ञ थे। १६७० से १६८० ईसवी तक १० साल कारोमण्डल तटकी कोठीमें नौकरी करते हुए इन्होंने तामिल, तेलगू और संस्कृत भाषाएँ सीखीं। सम्भवतः इन्होंने ही सबसे पहले यह अनुभव किया कि जावाकी परिष्कृत भाषामें रुपयेमें १२ आना शब्द तामिल और संस्कृतके हैं। डी जागेर अपने भाषाज्ञानके कारण गोलकुण्डाके राजाके दरबारमें कम्पनीके वकील बनाकर भेजे गये थे। फ्रांसीसियोंके विरुद्ध लड़नेके लिए डी जागेर गोलकुण्डा नरेशको सैनिक मामलोंमें भी सलाह देते रहे। सन् १६७७ में डी जागेर शिवाजीके दरबारमें डच वकील बनाकर बीजापुर भेजे गये। यहाँ शिवाजीसे उनकी मुलाकात हुई थी। सन् १८१४ की ट्रीटी ऑफ लन्दनके अनुसार सीलोन और केप कालोनीके उपनिवेश हालैण्डके हाथसे छिन गये।

संस्कृतके अध्ययनमें इङ्गलैण्ड, फ्रांस और जर्मनी हालैण्डसे आगे बढ़ गये थे, फिर भी हालैण्डमें संस्कृतकी बिलकुल उपेक्षा नहीं हुई। सन् १८६५ में लायडन विश्वविद्यालयमें संस्कृतके पीठकी स्थापना हुई और पूर्वीय देशोंकी सम्भवतः सभी भाषाएँ जाननेवाले सुप्रसिद्ध विद्वान हेनड्रिक कर्न (१८३३-१९१७) इसके अध्यक्ष बनाये गये। इन्होंने बौद्ध धर्मका इतिहास लिखा और कई बौद्ध ग्रन्थोंका सम्पादन किया। १९०४ में कर्नके ही शिष्य जे० एस० स्पीयर लायडनमें कर्नकी जगहपर नियुक्त हुए। इन्होंने भी बौद्ध और संस्कृतके कई ग्रन्थोंका सम्पादन किया। यूट्रेक्ट विश्वविद्यालयके संस्कृतके प्रोफेसर डब्ल्यू कलाण्ड और आम्सटर्डम विद्यापीठके संस्कृतके प्रोफेसर

सी० सी० उहलेनबेक भी कर्नके ही शिष्य थे। हिंदेशियाके प्राचीन इतिहास, संस्कृति, पुरातत्वावशेष आदिका अध्ययन करनेमें डच विद्वानोंको भारतीय संस्कृतिकी विशेषताओंका अध्ययन करना पड़ता था, क्योंकि हिंदेशियाकी संस्कृतिपर भारतीय संस्कृतिका बहुत असर पड़ा है। डाक्टर क्रामने इस दिशामें बहुत काम किया। हालैण्डके लोग हिंदेशियाको इण्डिया ही कहते हैं। इसलिए हिंदेशिया और भारत दोनोंके पुरातत्वके अध्ययनको वे ग्रेटर इण्डियाका अध्ययन कहने लगे। इस सिलसिलेमें बहुतसे भारतीय छात्र लायडन जाने लगे क्योंकि भारतीय इतिहासकी बहुत महत्वपूर्ण और मूल्यवान सामग्री वहाँ संगृहीत है। भारतके डाक्टर छाबराको लायडन विश्वविद्यालयने इस विषयके अध्ययनके कारण डाक्टरेट दी है।

व्यापारके कारण और हिंदेशियापर शासनके कारण हालैण्ड का भारतके साथ काफी सम्बन्ध आया। इसी प्रकार डच मिशनरियोंका धर्म-प्रचारके कार्यके सिलसिलेमें भारतसे बहुत सम्बन्ध रहा। डच मिशनरियोंने न्यू टेस्टामेंटका जावाकी भाषामें अनुवाद किया, पर उसे उन्हें सन् १८२३ में कलकत्तेके पास सीरामपुरके छापाखानेमें ही छपवाना पड़ा था। जावाकी भाषामें छपी यही पहली पुस्तक थी।

डाक्टर स्टुटेरहाइमने हिन्देशियामें प्रचलित रामायणोंपर जर्मन भाषामें एक खोजपूर्ण ग्रन्थ लिखा जिसपर लायडन विश्वविद्यालयने उन्हें १९२४ में डाक्टरेट दी है। विश्वविद्यालयने इस पदवीका नाम 'आयेन लेटर्स' रखा है। द्वितीय महायुद्धकालमें बटेवियामें सितम्बर १९४२ में इनकी मृत्यु हो गयी।

डाक्टर जे० एच० क्रामर्सका नाम इधरके विद्वानोंमें उल्लेखनीय है। इनकी मृत्यु दिसम्बर १९५१ में हुई। इस्लामके ज्ञानकोशके सम्पादनमें उन्होंने लायडनमें बहुत काम किया। ये सात

साल तक तुर्कीमें हालैण्डके दूत थे। इनके पुत्र आजकल दिल्लीमें डच दूतावासमें सांस्कृतिक अटैची हैं।

हिंदेशियापर शासन समाप्त होनेके कारण अब हालैण्डमें पूर्वी देशोंकी भाषाओंका अध्ययन उतने जोरदार ढंगसे नहीं होता, पर अब भी वहाँ कई युनिवर्सिटियोंमें संस्कृतका अध्ययन होता है और २-४ छात्र हमेशा संस्कृतके वर्गमें रहते हैं। आम्सटर्डम-में संस्कृतके एक प्रोफेसर हमसे मिलने आये। वे अपने साथ अपने दो शिष्योंको और श्रीमद्भगवद्गीताकी एक प्रति भी ले आये थे। उनकी बहुत दिनोंसे यह इच्छा थी कि गीताके श्लोक सस्वर कैसे पढ़े जाते हैं, यह सुनें। मुझे उन्हें गीताका एक अध्याय पढ़कर सुनानेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। वे इससे बहुत ही प्रसन्न हुए क्योंकि उनकी बहुत दिनोंकी इच्छा उस दिन पूर्ण हुई।

आम्सटर्डममें एक रायल ट्रापिकल इन्स्टीट्यूट और म्यूजि-यम है जहाँ ट्रापिकल देशों यानी ईस्ट और वेस्ट इंडीजके देशोंके सम्बन्धमें खोजका काम होता है। इस म्यूजियममें १९५२ में एक भारतीय कक्ष भी खोला गया है जहाँ भारत सरकारने बहुतसी कलावस्तुएँ आदि रखनेको दी हैं।

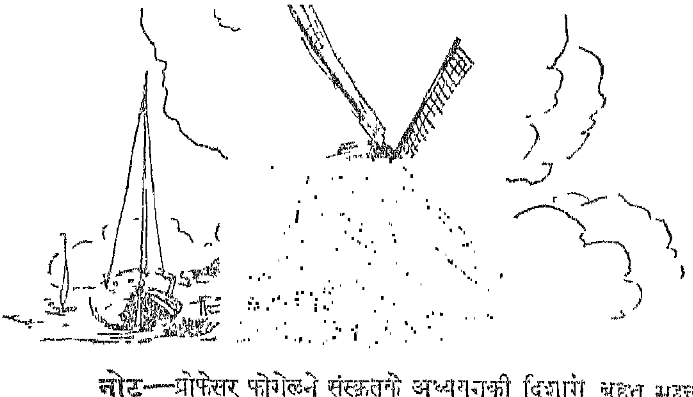
हेगमें एक इन्स्टीट्यूट आफ सोशल स्टडीज है जिसे हालैण्ड-के विश्वविद्यालयोंने अंतर्राष्ट्रीय सहयोगके लिए संघटित किया है। १९५२-५३ में विदेशोंके २५ छात्र अध्ययनके लिए आये थे। इनमें भारतीय छात्र भी थे। १९५४ में भी भारतके २४ और पाकिस्तानके ९ छात्र यहाँ शिक्षा ले रहे थे। इन्होंने नेदरलैण्ड्स-इण्डिया-पाकिस्तान-सीलोन सोसाइटी बनायी है।

प्राच्य विद्याध्ययनका केन्द्र लायडन होनेके कारण वहाँ सन् १५७५ में विश्वविद्यालयकी स्थापनाके साथ ही दुनियाभरकी भाषाओंमें पुस्तकें छापनेवाले छापाखानेकी स्थापनाकी आव-श्यकता हुई। छोटे-मोटे कई छापाखाने उस समय बने, पर आज

ई० जे० ब्रिल, प्रकाशक ही अकेले बचे हैं। प्राच्य भाषाओंके ये सम्भवतः यूरोपके सबसे बड़े प्रकाशक हैं। सन् १५९३ में छपी पुस्तक अब भी इनके संग्रहकी सबसे पुरानी पुस्तक है। इनका छापाखाना २७० साल पुराना है।

ब्रिलके छापाखानेमें हम गये तो वहाँ एक डच-नागरी प्राइमर कम्पोज हो रहा था। ब्रिलने प्रेमचंदके 'सप्तसरोज' का डच अनुवाद भी छापा है, जैसा कि हम पहले लिख आये हैं। अनुवादक हैं लायडन विश्वविद्यालयके भारतीय विषयोंके प्रोफेसर जे० पी० एच० फोगेल सी० आई० ई० पी० एच० डी०।

भारतसे ५ हजार मील दूर यूरोपमें अपने देशसे सम्बन्धित ये सब चीजें देखकर बहुत प्रसन्नता हुई।



नोट—प्रोफेसर फोगेलने संस्कृतके अध्ययनकी दिशामें बहुत महत्त्वपूर्ण काम किया है। वे कर्न इन्स्टीट्यूटके स्थापनकर्ता भी हैं। लायडनमें अरबी भाषाके सम्बन्धमें भी बहुत खोजका काम हुआ है। डाक्टर क्रामर्स लायडन विश्वविद्यालयमें अरबी भाषाके प्रोफेसर थे।

(२) सुरिनाम (डच गायना)

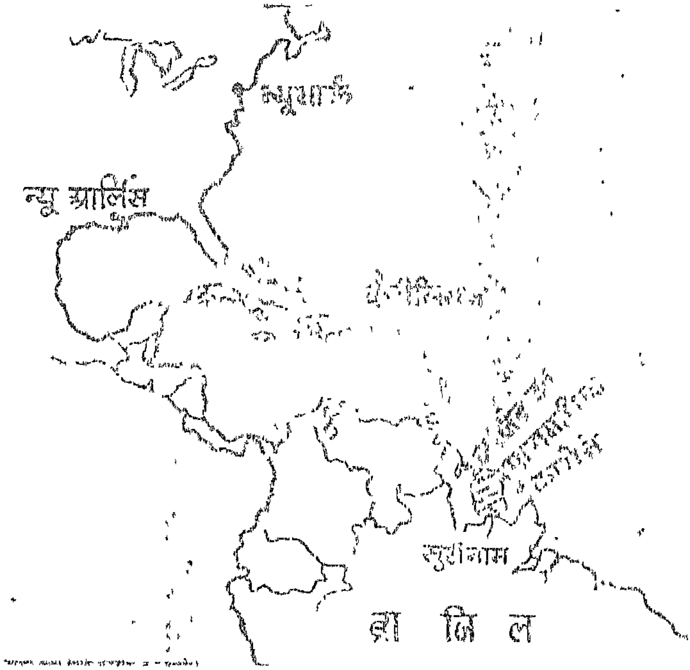
हालैण्डका भारतसे एक और निकट संबंध है। वेस्ट इंडीज वा दक्षिण अमेरिकाके उत्तरी तटपर डच गायना नामका हालैण्डका एक स्वायत्त उपनिवेश है। इसे सुरिनाम कहते हैं। ब्रिटिश और फ्रेंच गायनाके बीचमें यह अवस्थित है। इसका क्षेत्रफल हालैण्डसे चौगुनेसे भी अधिक ५५१४३ वर्ग मील है और जनसंख्या इस समय कोई २ लाख १५ हजार होगी। इनमें कोई ६५ हजार या ३० प्रतिशत नागरिकोंका मूल भारतीय है।

सत्रहवीं सदीमें इस प्रदेशके लिए ब्रिटेन और हालैण्डमें गहरी कशमकश होती रही और सन् १६६७ में ब्रेडाकी सन्धिके अनुसार यह हालैण्डको मिल गया। फिर यह इंगलैण्डके हाथमें आया और अन्तिम रूपसे सन्१८१६ की पेरिसकी सन्धिके अनुसार यह हालैंड के अधिकारमें गया। अब इसे सम्पूर्ण स्वायत्त शासन मिल गया है। [१९५४ के दिसम्बरके दूसरे सप्ताहमें महारानी जूलियानाने अपनी शाही घोषणामें इसे हालैण्डकी बराबरीका राजनीतिक पद दिया।]

आज जहाँ अमेरिकाका सबसे बड़ा शहर न्यूयार्क है वहाँ पहले हालैण्डका न्यूआम्स टर्डम नामक शहर था। अंग्रेजोंने इसे हालैण्डसे खरीद लिया और बदलेमें हालैण्डको सुरिनाम प्रदेश दे दिया। बाक्साइट अलुमुनियमका उत्पादन करनेवाले देशोंमें सुरिनामका नम्बर बहुत ऊपर होगा।

डच लोगोंको इस गरम देशमें खेतोंपर कपास, तंबाकू और ईख उगानेके लिए गरम देशोंमें रहनेवाले और शान्त मजदूरोंकी आवश्यकता थी। इसलिए सन् १८७३में डच लोगोंने अंग्रेजोंसे समझौता कर भारतसे मजदूर यहाँ मँगवाये। ५ सालके करारकी

अवधि बीत जानेपर अधिकांश भारतीय मजदूर उसी देशमें रह गये। १९१७ तक भारतीय मजदूर बराबर अधिकाधिक संख्यामें सुरिनाम आते रहे। इस प्रकार यहाँका कृषिवैभव भार-



तीय पसीनेसे बना है। १९१७ तक ४० हजार भारतीय उस देशमें जा चुके थे। इसके बाद जब भारतीयोंमें स्वाभिमान बढ़ने लगा तो डचोंने फिर भारतसे और मजदूर वहाँ ले आना बंद किया।

भारतीय मन्त्री

१९२२ के सुधारोंके अनुसार सुरिनामके लोगोंको गवर्नरके अधीन कुछ स्वायत्त शासनाधिकार मिले। सन् १९४९ में महा-

युद्धके बाद सुरिनामको औपनिवेशिक स्वराज्य मिला। बालिग मताधिकारसे निर्वाचित विधान मण्डल वहाँ राज करता है। सुरिनामकी पार्लमेंटके २१ सदस्य हैं जिनमें ६ भारतीय मूलके हैं। मन्त्रियोंमें भी एक भारतीय दम्पती हैं। इनके जिम्मे शिक्षा और पब्लिक इन्स्ट्रक्शन विभाग हैं। भारतीय मन्त्रीका नाम श्री डब्लू० ई० जगलाल है। उनकी पत्नीका नाम श्रीमती ई० एस० जगलाल पंजाब सिंह है। दोनों लुथेरन प्रोटेस्टेण्ट ईसाई हैं।



सुरिनाममें सब धर्मों और वंशोंके लोग एक साथ सहयोगसे रहते हैं। भारतीय लोगोंने अपने देशसे बहुत दूर होने और वहाँकी नागरिकतासे एकदम घुलमिल जानेपर भी अपने भारतीय रीतिरिवाज, भाषा, संस्कार आदि बनाये रखे हैं। जो लोग भारतसे सुरिनाम गये उनमें ८० प्रतिशत हिंदूधर्मके माननेवाले थे। अधिकतर लोग पूर्वी उत्तरप्रदेश और पश्चिमी बिहारसे गये। इनमेंसे बहुत कम ईसाई बने हैं। वैदिक गृह्यसूत्रोंके आधारपर दिनचर्या इन्होंने अब भी कायम रखी है। पूजा, होम-हवन,

नवरात्र, सत्यनारायण कथा आदिके साथ सोलहों संस्कार भी कायम हैं। मूलशान्ति, गुरुमुख, उपनयन, समावर्तन आदि संस्कारोंके अतिरिक्त विवाह-संस्कारमें कन्यादानको अब भी महत्त्व दिया जाता है। कृष्ण-जन्माष्टमी, रामलीला, दिवाली, गंगानहान, फगुआ-होली आदि त्योहार और उत्सव अब भी वहाँ मनाये जाते हैं। यही नहीं, अन्त्येष्टि संस्कार भी बिलकुल भारतीय पद्धतिसे ही किया जाता है। पिंडदान, दशगात्र, तेरही, एकोदिष्ट श्राद्ध आदि अब भी सुरिनामके हिंदुओंमें प्रचलित हैं।



सुरिनाममें पिण्डदानका कृत्य

हेगमें इंडिया-पाकिस्तान सोसाइटीमें मेरी मुलाकात श्री वर्वे एक डच नवयुवकसे हुई। यह धीरे-धीरे पर बहुत संस्कृतनिष्ठ शुद्ध हिन्दी बोलता था। यही नहीं, भोजपुरी भी बहुत ढंगसे बोलता

था। मैंने पूछा कि तुमने यह सब कहाँ सीखा तो पता लगा कि वह सुरिनाममें सरकारी नौकर था। हालैण्डमें वह लायडनके जातिशास्त्रके सरकारी म्यूजियममें काम करता था। उसने विजिटिंग कार्डपर अपने हाथमें हिन्दीमें अपना नाम 'अ. हे. नि. वर्ब जातिशास्त्रका कलाभवन लैडन, हालैण्ड' लिखकर मुझे दिया।

सुरिनामकी राजधानी पारामारिबो है। सुरिनाम नदी जहाँ कैरीबियन सागरमें मिलती है उसीके मुहानेपर समुद्रतटसे १४ मील दूर यह शहर बसा है। पूरे देशकी सवा दो लाख जनसंख्यामें ३७·८ प्रतिशत मूल निवासी क्रियोल, ३०·७ प्रतिशत भारतीय, १७·४ प्रतिशत हिंदेशियाई, ९·७ प्रतिशत नीग्रो, १·६ प्रतिशत मूल अमेरिकन इंडियन, १·२ प्रतिशत चीनी और उतने ही यूरोपीयन हैं। पर सब लोग सहयोगसे रहते हैं। बाहरसे गयी जातियों और वहाँके मूल निवासियोंके सहअस्तित्वमें जो जाति बनी उसे क्रियोल कहते हैं। २१ सदस्योंकी कौंसिलमें १२ सदस्य क्रियोल हैं। ९ मन्त्रियोंमें ६ क्रियोल हैं। सरकारी नौकरोंमें और भूमिधरोंमें अधिकतर भारतीय हैं। औद्योगिक-आर्थिक विकासके लिए १९५२ में एक दस साला योजना चालू की गयी है।

(३) जानसेन परिवारका जीवनक्रम

एक औसत डच परिवारका दैनिक जीवनक्रम कैसा होता है यह पढ़ना मनोरंजक होगा। जानसेन परिवारको ही लीजिये।

हालैण्डके २५ लाख परिवारोंमेंसे यह एक परिवार है। इसमें ४ सदस्य हैं। मिस्टर (माइनहेर) जानसेन, मिसेस (मेवराओ) जानसेन, १२ सालकी पुत्री लीली और ६ सालका पुत्र हेन।

श्री जानसेनकी औसत आय ३९०० गिल्डर प्रति वर्ष है। ३२५ गिल्डर या ४०० रुपया प्रति मास पड़ा। मकानमें एक बैठने-उठनेका कमरा (१२ × १६ फुट), एक बड़ा बड़ोंके सोनेका कमरा, दो छोटे बच्चोंके सोनेके कमरे, एक रसोईघर, एक स्नान-गृह जिसमें वाश स्टैण्ड और शावर है, एक नल और छोटा-सा बरामदा है। कुल ७०० वर्गगज जमीनपर यह परिवार रहता है।

सबेरे ७ बजे सब लोग उठे। बच्चोंने स्प्रिंगवाले अपने पलंग उलट कर दीवारसें भिड़ा दिये और कमरोंको बैठने लायक बनाया। ममीने चाय तैयार कर ब्रेकफास्ट टेबुलपर रखी। ब्रेकफास्टमें डबल रोटीके टुकड़े हैं जिनपर चीज, जैम या केक रखी है। सैण्डविचकी तरह नहीं, पर काँटे छुरीसे रोटी खायी जायगी। हफ्तेमें किसी दिन पारिज (दलिया) रहेगा और रवि-वारको एक दिन अण्डा। ब्रेकफास्टके बाद जानसेनने एक सिगरेट पी (सस्ती सिगरेट १५ आनेमें २० मिलेंगी।) जानसेनने घड़ी देखी। ८॥ बज गये। दोपहरके लंचका सैण्डविचका डब्बा लेकर उन्होंने हालमेंसे साइकिल निकाली और दफ्तर रवाना हुए। बच्चे भी स्कूल चले गये।

ममीने नाश्तेकी तश्तरियाँ धोयीं और सारे घरको साफ किया। दरवाजेकी घण्टी बजने लगी और फेरीवाले, गाड़ीवाले रोजका अपना निश्चित सामान घरमें देकर आगे बढ़ते रहे। पहले डाकिया आया, फिर दूधवाला आया। इसीने मक्खन, मार्गरिन और अण्डे भी दिये। १० बजे रोटीवालेने आकर डबल रोटियाँ दीं। मांसवाला, तरकारीवाला, फूलवाला, धोबी हर तरहके फेरीवाले आये।

११ बजे ममीने एक प्याला काफी पी जिसमें दूध अधिक था। थोड़ी देरमें बच्चे खाना खाने घर आये। लंचमें भी रोटी

और काफी थी। बच्चे फिर स्कूल चले गये और ममी कपड़े सीने-बुननेके लिए बैठी।

४ बजे बच्चे स्कूलसे आये। साइकिलें उन्होंने ठीकसे रखीं। फिर चाय पी और बाहर खेलने चले गये। ममी अब रसोईघरमें गयी। शामका भोजन गरम, ताजा होगा। आलू, ताजी तरकारी और मांसकी चीजें रह सकती हैं।

६ बजे जानसेन दफ्तरसे आये। अखबार भी आया क्योंकि हालैण्डमें सब अखबार (बनारसकी तरह) शामको ही निकलते हैं। खाना तैयार था, इसलिए शीर्षक देखकर अखबार बादमें पूरा पढ़नेके लिए रख दिया गया। डिनरमें इस समय डबल रोटी नहीं थी।

खाना खानेके बाद ममी और लड़की तश्तरियाँ साफ करनेके लिए रसोईघरमें गयीं। बालकको ५ मिनटका रेडियोपर बच्चोंका प्रोग्राम सुननेको छूट दे दी गयी। ममी लौट आयी और बालकको सुला दिया। लड़की अपने कमरेमें आकर स्कूलकी पढ़ाईकी दूसरे दिनकी तैयारी करने लगी। किसी दिन जानसेन और ममी सिनेमा या अच्छे कन्सर्टमें चले जाते हैं पर प्रायः शामको वे घरमें रहना ही पसन्द करते हैं।

जानसेनका बजट—बाजार भाव

आय—मासिक ३२५ गिल्डर

मकान किराया	४६ गिल्डर	दूध (फी लीटर)	·२१
गैस (फी वर्ग मीटर)	·१६	चीज (१०० ग्राम)	·२५
बिजली (फी किलोवैट)	·२०	मांस (,,)	·४०
रेडीमेड सूट	९५ गिल्डर	मछली (१ किलोग्राम)	·७५
,, ओवरकोट	१०० ,,	शकर (,,)	·९१
अखबार (प्रति सप्ताह)	·५०	चाय (१०० ग्राम)	·८५
रेडियो-कार्यक्रमकी पत्रिका	·२५	चाकलेट पावडर (१००ग्रा.)	·४५

सिगरेट (२० का पैकेट)	'७५	काफी (२५० ग्राम)	१'९२
ऊनी मोजे	३'०	मार्गरीन (,,)	'५०
अन्डरवेयर	६'०	मक्खन (,,)	१'१०
स्त्रियोंका कोट	८०	अण्डे (१ दर्जन)	२'४०
शर्ट	११'	साबुन (९० ग्राम)	'३९
डबल रोटी (८०० ग्राम)	'२९	कपड़ा धोनेका साबुन (२२५ ग्रामका डण्डा)	'३८
		साबुन पाउडर (२५० ग्रा)	'३७
		बीयर ('४५ लीटरकी बोतल)	'४०

१ गिल्डर=१। रुपया, ५ सेण्ट=१ आना

१ वर्गमीटर=१'२ वर्गगज

१ किलोग्राम=२'२ पौण्ड (१ सेरसे कुछ अधिक)

१०० ग्राम=पौने दो छटाँक

१ लीटर=१'७५ पिण्ट

डच मुद्राएँ

१०, २॥ और १ गिल्डरके कागजके नोट

२५, १० सेण्टके हमारी चवन्नी-दुवन्नी (पुरानी) की तरह निकलके गोल सिक्के

५, १ सेण्ट ताँबेके सिक्के

(४) डच भाषाके कुछ शब्द

याद रखने लायक कुछ डच शब्द, उनके अंग्रेजी और हिन्दी अर्थोंके साथ, यहाँ दिये जा रहे हैं—

डच शब्द	अंग्रेजी पर्याय	हिन्दीमें अर्थ
Algemeene	National	राष्ट्रीय
Bad	Bath	स्नान
Bad kamer	Bath room	स्नानगृह
Berg	Mountain	पहाड़
Bezet	Occupied	अन्दर कोई है
Biljet	Ticket	टिकट
Blad	Sheet of paper	कागज
Boven	Above	ऊपर
Brug	Bridge	पुल
Burcht	Castle	किला
Courant	Journal	पत्रिका
Dag	day	दिन
Dagblad	Newspaper	अखबार
Dagelijks	daily	दैनिक
Dank	Thanks	धन्यवाद
De	The	+
Dijk	dike	बाँध
En	and	और
Ene	One	एक
Goeden avonj	Good evening	नमस्ते (संध्या समय)
— dag	Good day	,, (दिनमें)
— nacht	Good night	,, (बिदा होते वक्त)

डच शब्द	अंग्रेजी पर्याय	हिन्दीमें अर्थ
Het	The	
Heren	men	पुरुष
Ja	Yes	हाँ हाँ (उच्चारण या या)
Kamer	room	कमरा
Kantoor	Office	दफ्तर
Kapper	Hairdresser	केशकर्तक
Kerk	Church	गिरजाघर
Koning (Konink lijke—शाही)	King	राजा
Koningin	Queen	रानी
Laan	Lane	गली
Links	to the left	बायीं ओर
Lign	Line	लाइन
Luchtvaart	Aviation	उड्डयन
Maatschappij	Company, Society	कम्पनी
Meer	Lake	झील
Met	With	साथ
Naam	Name	नाम
Neen (उच्चारण ने)	No	नहीं
Nieuw	New	नया
Noord	North	उत्तर
Ober	Waiter	बेयरा
Onder	Below	नीचे
Oost	East	पूर्व
Plein	Square	चौक
Retirade	Wash cabin	शुचिगृह
(heren	Gentlemen	मर्दाना)
(dames	Vrouwen—Ladies	जनाना)
Sigaar	Cigar	सिगार
Spoor (Spoor wegen—रेलवे)	Rail	रेल

डच शब्द	अंग्रेजी पर्याय	हिन्दीमें अर्थ
Straat	Street	सड़क
Thee	Tea	चाय
Toillette	Lavatory	शौचगृह
Van	of	का
Vereniging	Bureau	ब्यूरो
Vrij	Free	स्वतन्त्र
Voor	For	के लिए
Vrouw	Woman	स्त्री
Weg	Way	रास्ता
Wester	West	पश्चिम
Zon	Sun	सूर्य
Zuid	South	दक्षिण

Se शब्द सप्तमी प्रयोग का, की, के लगानेके लिए उपयुक्त होता है।

जैसे— Haag–हेग, Haagse हेगका

en बहुवचनके लिए,

je छोटा करनेके लिए, जैसे—

boek—book

boekje—booklet

(५) यात्राके दो रेडियो-संस्मरण

हिल्वरसमके रेडियो नेदरलैण्डने हालैण्ड यात्राके मेरे दो हिन्दी संस्मरण रेकार्ड किये। दोनों संस्मरणोंको मिलाकर हम यहाँ दे रहे हैं—

हम छः भारतीय पत्रकारोंकी २५ दिनकी हालैण्ड यात्रा २८ अप्रैलको समाप्त हो गयी। उस दिन शामको सरकारी विदाई समारोहके बाद हम लोग अपने देशके लिए रवाना हो रहे हैं। हालैण्ड-यात्राके अपने अनुभवोंका सिंहावलोकन करनेके पहले मैं हम लोगोंकी इस यात्राके आयोजकोंको अपनी ओरसे, अपने पत्रकार बन्धुओंकी ओरसे, अपने देशकी ओरसे हार्दिक धन्यवाद देना अपना कर्तव्य समझता हूँ। इनके प्रेमपूर्ण स्वागतके कारण हम लोगोंको किसी बातकी कमी महसूस नहीं हुई। पूर्वनिश्चित कार्यक्रमोंके अलावा भी जो चीजें हमने देखनी चाहीं उनके लिए इन लोगोंने हर प्रकारकी सुविधा प्रसन्नतापूर्वक दी। इस सम्बन्धमें यहाँकी एक संस्था एमेच्योर गाइड्स असोसिएशनका उल्लेख मैं करना चाहता हूँ। उच्च शिक्षा-संस्थाओंमें पढ़नेवाली छात्राएँ और छात्र इस संस्थामें शामिल होते हैं और हालैण्ड आनेवाले विदेशी यात्रियोंकी सहायता करते हैं। इससे उन छात्र-छात्राओंको भी विदेशियोंसे सम्पर्क बढ़ानेका और उनके रीतिरिवाज जाननेका अपने देशमें ही रहकर अवसर मिल जाता है। जो छात्र कई भाषाएँ जानते हैं या सीखना चाहते हैं तथा अपने देशके इतिहास और संस्कृतिके जानकार हैं उनको इस संस्थासे बहुत लाभ होता है और इन छात्रोंके कारण विदेशी यात्रियोंको बड़ी सुविधा होती है। उन्हें पेशेवर पैसाकमाऊ गाइडोंके शिकंजेमें नहीं पड़ना पड़ता। सरकारी यात्रा-दफ्तर तथा औद्योगिक कार-

स्वाने इस संस्थाकी आर्थिक सहायता करते हैं। भारत भी विदेशी यात्रियोंको अधिकाधिक आकर्षित करना चाहता है। अपने देशमें भी छात्रों-छात्राओंकी इसी प्रकारकी कोई गाइड संस्था बनायी जाय तो बड़ा लाभ होगा। इस संस्थाके सदस्योंने, डच पत्रकारोंने तथा भारतीय दूतावासके सदस्योंने और विशेषकर इनके सूचना-सचिवने हमारी बहुत सहायता की। इनको धन्यवाद देना भी आवश्यक है।

हमारी यात्राका जो कार्यक्रम डच सरकारने बनाया था उसमें यहाँके कल कारखानोंको देखनेको प्रधानता दी गयी थी। इससे स्पष्ट है कि डच सरकार सबसे अधिक महत्त्व इस बातको देती है कि भारत और हालैण्डमें परस्पर सद्भाव बढ़े ताकि दोनों देशोंमें व्यापार-सम्बन्ध उत्तरोत्तर बढ़ सके। हालैण्ड यद्यपि १ करोड़की आबादीका हमारे ५-६ जिलोंके बराबर क्षेत्रफलका छोटासा देश है, पर डेढ़ सौ साल पहलेकी पश्चिमी यूरोपके देशों-की औद्योगिक क्रांतिके कारण तथा ईस्ट इंडीज और वेस्ट इंडीजके अपने विशाल साम्राज्यविस्तारके कारण इसका औद्योगिक तथा आर्थिक स्तर भी ब्रिटेन, फ्रांस आदि पश्चिमी यूरोपके देशोंकी तरह बढ़ा हुआ है। द्वितीय महासमर तथा हिंदेशियाके स्वतन्त्र होनेके कारण इसके व्यापारको काफी धक्का लगा, पर डच लोगोंके अत्यन्त परिश्रमी और व्यवहारवादी होनेके कारण अब पूर्वके देशोंके साथ नये सिरेसे, नये तरीकेसे और परस्पर आदान-प्रदान-के आधारपर वे नये व्यापारसम्बन्ध बढ़ाना चाहते हैं। इसी उद्देश्यसे पिछले साल उन्होंने पाकिस्तानी पत्रकारोंके एक दलको अपने यहाँ बुलाया था और इस साल हम भारतीय पत्रकारोंको उन्होंने बुलाया।

आज भी हालैण्ड और भारतका व्यापार कम नहीं है। पिछले साल १९५३ में हालैण्डसे करीब ७॥, ८ करोड़

रुपयेका माल भारत गया और भारतसे लगभग ४॥ करोड़ रुपयेका माल हालैण्ड आया। एशियामें इंडोनेशियाके बाद हालैण्डका सबसे अधिक व्यापार भारतके साथ ही होता है। हालैण्डके एक दर्जनसे अधिक कारखानोंकी शाखाएँ और दफ्तर भारतमें हैं। भारत खनिजपदार्थ, रुई आदि कच्चा माल हालैण्ड भेजता है और यहाँसे मशीनरी, दूधसे बनी खाद्य चीजें आदि मँगाता है। मालगाड़ीके १ हजार डब्बे १९५२ में यहाँसे बनकर भारत गये। सम्भवतः हम रेल-यात्राके लिए भारतमें जो टिकट खरीदते हैं वह जिस बोर्ड कागज-पर छपता है वह कागज हम हालैण्डसे ही मँगाते हैं। भारतीय डाक-तार विभागने जमीनके अन्दर नीचे बिछानेके २६५ मील लम्बे टेलीफोनके तारोंका, केबलका, ८० लाख रुपयेका आर्डर यहाँके एक कारखानेको दिया था। उस मालकी अन्तिम खेप २६ अप्रैलको यहाँसे भेजी गयी। भारतीय राजदूत श्री चक्रवर्ती महोदयने एक छोटेसे, पर प्रभावशाली समारोहमें केबल लपेटे हुए अन्तिम बड़े लपेट बक्सको अपने हाथसे आखिरी कील ठोंक-कर बन्द किया और बगलमें ही नहरमें खड़े छोटे जहाजपर क्रेनसे तुरत माल चढ़कर भारत रवाना हो गया। यह छोटा-सा समारोह बड़ा सांकेतिक और हृदयको छूनेवाला था। भारत और हालैण्डके राष्ट्रध्वज सब तरफ फहरा रहे थे। हालैण्डका झंडा भी भारतीय झण्डेकी तरह तिरंगा है।

हम लोगोंकी हालैण्ड-यात्रा डच सरकार, उद्योग संघ, पत्रकार-संघ और के० एल० एम० के संयुक्त निमन्त्रणपर हुई। हम लोगोंने यहाँ कई कारखाने देखे जिनमेंसे फिलिप्स, कोआपरेटिव फैक्टरी आफ मिल्क प्राडक्टस आदिसे भारतीय जनता परिचित भी है। यहाँ आनेके पहले हम लोगोंकी धारणा थी कि यह देश भारतकी तरह कृषिप्रधान होगा। यह कृषिप्रधान अवश्य है पर कल-कार-

खानोंके बारेमें पीछे नहीं है। जिस प्रकार भारत विज्ञानकी सहायतासे उद्योगीकरणके क्षेत्रमें आगे बढ़ रहा है उसी प्रकार या यों कहिये कि उससे कई गुना अधिक तेजीसे यह देश उद्योगीकरणकी ओर बढ़ रहा है। यह देश भारतकी तुलनामें बहुत छोटा है। पर पिछले पचास वर्षोंमें यहाँकी जनसंख्या इतनी तेजीसे बढ़ी है कि यहाँकी सरकारको इससे चिन्ता होने लगी है। यहाँसे प्रतिवर्ष सैकड़ों हजारों हालैण्डवासी, आस्ट्रेलिया, कनाडा, ब्राजील आदि देशोंमें जा रहे हैं। यहाँके लोग धार्मिक प्रवृत्तिके अधिक हैं इसलिए सन्ततिनिरोधकी बात कोई अधिक नहीं करता। बढ़ती जनसंख्याकी समस्या हल करनेका एक ही उपाय उद्योगीकरणको तेजीसे बढ़ाना है और वही उपाय यहाँ किया जा रहा है। यहाँके उद्योगीकरणकी कई विशेषताएं हैं। सबसे महत्त्वकी बात यह है कि हमें यहाँके लोग बहुत मेहनती और परिश्रमी लगे। इसका एक कारण यहांका मौसम भी है। अपने यहाँके गरम मौसममें मनुष्य प्रकृत्या आलसी हो जाता है। यहाँ यह बात नहीं है। लोग खेतों-कारखानोंमें दिनभर काम करते हैं और शामको परिवारके सब लोग मिलकर समय बिताते हैं। कारखानोंमें काम करनेवाले लोग अपने काममें मनसे रस लेते हैं, बेगार निभाने या केवल पेट भरनेके एक साधनके रूपमें उसे नहीं मानते। इसका नतीजा यह हुआ है कि पिछले कई वर्षोंमें यहाँ हड़तालोंके कारण उत्पादनकी करीब-करीब बिलकुल हानि नहीं हुई है। कारखानोंके संचालक बदली हुई सामाजिक स्थितिको पूरी तरह समझते हैं और उद्योगों और मालिक-मजदूरके सम्बन्धोंके बारेमें अधिक सरकारी नियन्त्रण न होनेपर भी दोनोंके सम्बन्ध बहुत अच्छे हैं। दोनों एक दूसरेके हितोंकी रक्षा करते हैं। उद्योगोंका यह पहलू हमारे यहाँ भी सरकार, मालिक और मजदूर तीनोंके अध्ययन करने लायक है।

बहुतसे भारतीयोंको शायद मालूम नहीं होगा कि यूरोपीय लोगोंमें सबसे पहले डच लोग ही ३०० साल पहले दक्षिण भारतके मलाबार किनारेपर आये थे। उस समय उनका उद्देश्य मसालेका व्यापार था। आज भी डच लोग भारतके साथ अपना व्यापार बढ़ाना चाहते हैं, पर उस समय व्यापारका जो उद्देश्य था वह आज नहीं है, नहीं हो सकता, यह बात यहाँके लोग जानते हैं। भारत और हालैण्डमें व्यापार परस्पर हितकी दृष्टिसे हा बढ़ सकता है यह बात यहाँके लोग समझते हैं। अब व्यापार एक तरफा नहीं हो सकता। यहाँके उद्योगोंके सम्बन्धमें एक और महत्त्वकी बात बतायी जा सकती है। उद्योगीकरण इतनी तेजीसे बढ़ रहा है कि उसके लिए किन्हीं प्रकारकी योजनाएं बनानेकी आवश्यकता हालैण्डवासियोंको नहीं महसूस होती, पर सारा काम जैसे योजनानुसार होता है। यहाँ नये-नये उद्योग तेजीसे बढ़ते जा रहे हैं और उनकी एक विशेषता हमें यह दिखाई दी कि नये कारखाने खोलनेके स्थानका जब निश्चय होता है तब सबसे पहले कच्चे मालकी उपलब्धिकी सरलता नहीं देखी जाती, पर यह देखा जाता है कि किस क्षेत्रमें बेकारी अधिक है और जहाँ बेकारी अधिक हो वहीं कारखाने खोले जाते हैं। थोड़ेमें कहा जा सकता है कि यहाँके उद्योग मनुष्योंके लिए प्रारम्भ किये जाते हैं, मनुष्योंको यन्त्रवत बनानेके लिए नहीं।

साढ़े तीन सौ साल पुराना सम्बन्ध

हालैण्ड और भारतका सम्बन्ध नया नहीं, साढ़े तीन सौ साल पुराना है। मूलतः व्यापारके आधारपर ही यह स्थापित हुआ और व्यापारके आन्तरिक उद्देश्यसे ही दोनों देशोंमें सांस्कृतिक सद्भावबृद्धि भी हुई। जिस देशके साथ व्यापार-सम्बन्ध बढ़ाने हों उस देशकी भाषा, रीति-रिवाज और कलासंस्कृतिकी जानकारी रखना आवश्यक और लाभप्रद होता है। यहाँ हेगसे कोई १२मील

उत्तर-पूर्व लायडन नामक नगर है, जहाँकी युनिवर्सिटी पौने चार सौ साल पुरानी है। इस विश्वविद्यालयमें एशियाकी भाषाओं और कला-संस्कृतिके अध्ययनकी विशेष व्यवस्था प्रारम्भसे ही की गयी थी। सन् १६१३में अरबी भाषाके पीठकी यहाँ स्थापना हुई। हिन्दएशियाके रास्तेमें होनेके कारण डच लोगोंने अरब देशों और भारतके साथ भी व्यापार शुरू किया था। ईरानकी खाड़ीके मुहानेके पास बन्दर अब्बासमें, इस्पाहानमें, गुजरात, बंगाल, कोरोमण्डल तट और मलाबार तटपर इनके व्यापारी गोदाम खुले थे। भारतमें इनका मुख्य कारखाना सूरतमें ताप्ती-तटपर था। उन दिनों दिल्लीमें मुगलोंका शासन था इसलिए डच व्यापारियोंके लिए फारसी सीखना आवश्यक था। औरंगजेबके दरबारमें डच दूत या वकील सूरतसे गया था। बहादुरशाहके दरबारमें भी डच ईस्ट इंडिया कम्पनीका दूत सन् १७११-१३ में गया था। यह जर्मन था और इसका नाम श्री जान जोसुआ केटेलारथा। हिन्दी-भाषियोंको इसका नाम याद रखना चाहिये क्योंकि इस जर्मन विद्वान्ने हिन्दुस्तानीका पहला व्याकरण डच भाषामें लिखा था। सन् १६९८ में लखनऊमें लिखी इस व्याकरणकी एक हस्तलिपि यहाँ हेगके सरकारी रेकर्ड दफ्तरमें रखी हुई है। श्री हर्बर्ट डी जागेरका नाम भी याद रखने लायक है। डच ईस्ट इण्डिया कम्पनीका यह बहुभाषी कर्मचारी सन् १६७० से ८० तक १० वर्ष कारोमण्डल तटपर रहा और तामिल, तेलगू तथा संस्कृतका अध्ययन इसने किया। सम्भवतः सबसे पहले इसी व्यक्तिने यह अनुभव किया कि जावाकी भाषामें ७५ प्रतिशत शब्द मलाबारी और संस्कृत भाषाके हैं। यही श्री जागेर सन् १६७७ में शिवाजी-के दरबारमें बीजापुरमें डच कम्पनीके वकील या दूत या प्रति-निधि बनकर गये थे। उन दिनोंके इतिहासकी अमूल्य सामग्री यहाँके प्राचीन संग्रहालयोंमें भरी पड़ी है। लायडन विश्वविद्या-

लयका पुस्तकालय तो इसका सबसे बड़ा संग्रह है। लायडनमें सन् १८६५ में संस्कृतके अध्ययनके लिए भी एक पीठकी स्थापना की गयी। इस्लाम और बौद्ध धर्मों और धर्मग्रन्थोंका अध्ययन यहाँ बहुत हुआ है। इस्लामका ज्ञानकोश, इनसाइक्लोपीडिया आफ इस्लामका यहाँसे प्रकाशन हुआ है। इस विश्वविद्यालयके जितना पुराना ही लायडनमें ब्रिलका छापाखाना है जहाँ पूर्वी देशोंकी सभी भाषाओंके ग्रन्थोंके छापनेकी व्यवस्था है। हालमें ब्रिल कम्पनीने स्वर्गीय प्रेमचन्दजीके 'सप्त-सरोज' कथा संग्रहका डच अनुवाद छापा है। मैं उस प्रेसमें गया तो वहाँ नागरी-डच भाषा शिक्षाकी एक पुस्तक कम्पोज हो रही थी। लायडनके ही श्री वर्वे नामक एक डच युवकसे मेरी मुलाकात हुई। यह युवक बहुत धीमे-धीमे, पर बहुत शुद्ध हिंदी बोल लेता है। यह सुरिनाम, वेस्टइण्डीजमें था और न केवल हिंदी, वरन् भोजपुरी बोलनेका भी प्रयत्न करता है। यहाँके दो-तीन विश्वविद्यालयोंमें अब भी संस्कृतका अध्ययन होता है और दर्जन-आधा-दर्जन छात्र हमेशा संस्कृतके वर्गमें रहते हैं। आम्सटर्डममें संस्कृतके एक प्रोफेसर हम लोगोंसे मिलने आये। वे अपने साथ श्रीमद्भगवद्गीताकी एक प्रति भी ले आये थे। उनकी बहुत इच्छा संस्कृत गीता किस प्रकार सस्वर पढ़ी जाती है यह सुननेकी थी और मुझे उनको ओरसे गीताका एक अध्याय पढ़कर सुनानेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। वे इससे बहुत ही प्रसन्न हुए। भारतीय इतिहास और संस्कृतिके सम्बन्धमें यहाँ बहुमूल्य ग्रन्थ और कागज हैं। भारतीय दूतावास इनकी माइक्रो फिल्में बनाकर भेज रहा है, पर किसी विश्वविद्यालयको यहाँ कई छात्र भेजकर यह काम और तेजीसे कराना चाहिये।

कुछ अन्य विशेषताएँ

एक कहावत हालैण्डमें प्रचलित है कि सारी दुनिया ईश्वरने

बनायी, पर हालैण्डको मनुष्योंने बनाया। आजके हालैण्डका एक पचमांश स्थल समुद्रको पीछे हटाकर बनाया गया है। पुराने जमानेमें पवन चक्कियोंकी सहायतासे और छोटे बाँध बनाकर तथा आजकल विज्ञानकी पूरी सहायतासे बड़े-बड़े बाँध बनाकर समुद्रको पीछे हटाया जा रहा है।

यहाँके लोग साइकिलपर चढ़नेके बड़े प्रेमी हैं। जहाँ देखिये वहाँ स्त्री पुरुष सैकड़ोंकी संख्यामें बाइसिकिलोंपर तेजीसे जाते हुए मिलेंगे। वृद्ध स्त्री-पुरुष भी बाइसिकिलोंका उपयोग करते हैं। हालैण्डको डाइक्स यानी बाँध और बाइक्स यानी साइ-किलोंका देश कहा जाता है। वहाँके लोग फूलोंके बड़े शौकीन हैं। दैनिक खर्चके बजटका काफी अच्छा हिस्सा हर परिवार फूलोंपर खर्च करता है। यहाँके ट्यूलिप फूल अपने यहाँके कमलकी तरह होते हैं। फूलोंकी इस लोकप्रियताके कारण डाइक्स और बाइक्सकी तरह इस देशको फिलिप्स और ट्यूलिप्स का देश भी कहा जाता है।

एक बात यहाँकी और हमारे अध्ययन करने लायक है। यहाँकी राजनीतिक पार्टियाँ धार्मिक सम्प्रदायोंके आधारपर बनी हैं। पार्टियोंमें बहुत स्पर्धा है, पर अपने यहाँकी तरह धार्मिक उन्माद नहीं है और न ये कभी हिंसा और दंगोंपर उतारू होती हैं। सहिष्णुता यहाँका विशेष गुण मालूम होता है। राजतन्त्र या बिलकुल ठीक कहना हो तो राज्ञीतन्त्र यहाँ होनेपर भी महारानी जूलियाना बहुत सादगीसे रहती हैं। हम लोग महा-रानीसे मिलने गये और करीब एक घण्टेतक बातचीत की। उन्होंने जब हिन्दी और उर्दू भाषाके सम्बन्धमें दिलचस्पी दिखानी शुरू की तो मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। महारानी स्वयं साइकिलपर देहातमें घूमने जाती हैं और उनकी लड़कियाँ भी साधारण स्कूलोंमें पढ़ने जाती हैं।

भारतके राजदूत श्री चक्रवर्ती यहाँ काफी लोकप्रिय हैं।

हालैण्डवाले सफाईके भी बड़े शौकीन हैं। मकान बनाने या कारखानोंकी इमारत बनानेके पहले सबसे पहले भरपूर पानी और संडासकी व्यवस्था ये करेंगे। अपने यहाँ अन्तर्बाह्य सफाईके इस अंगको सबसे बादमें सोचा जाता है। मकान छोटेसे ही रहेंगे पर वे कलापूर्ण फर्निचर और फूलोंसे सजे रहेंगे। मास्ट्रिचके पास हम एक खान मजदूरके घरमें गये। गये क्या, बिना सूचनाके घुस गये, कहिये। रातपालीके कारण मजदूर स्वयं ऊपर सोया हुआ था, पर उसकी पत्नी और बेटीने हमारा ऐसा स्वागत किया कि क्या कहूँ। मकान छोटा-सा था, पर अपने यहाँ हजार रुपया महीना कमानेवाला अफसर भी इस प्रकार गलीचे, फर्निचर आदिसे अपना मकान नहीं सजाता। सामाजिक सुरक्षा अधिक होनेके कारण यहाँका आदमी कल कैसे बीतेगी, इसकी चिन्ता नहीं करता और इसीलिए वह इस प्रकार शौकीनीसे और आरामसे रह सकता है। जनसाधारणमें एशियावासियोंके या अश्वेतोंके प्रति यहाँ तिरस्कार या हीनताकी भावना बिलकुल नहींके बराबर है। हालैण्डवाले सम्भवतः पश्चिमी यूरोपके अन्य सब देशोंसे अधिक मानवताप्रेमी हैं। मनुष्य-मनुष्यके बीच भेदभाव यहाँ बहुत कम किया जाता है। अधिकसे अधिक और कमसे कम वेतनमें यहाँ बहुत कम अन्तर है। स्त्री-पुरुषोंकी सामाजिक समानता यहाँ बहुत अधिक देखी जा सकती है। कई पुश्तोंसे यहाँ कोई राजा हुआ ही नहीं, रानियाँ ही शासन करती आयी हैं। स्त्रियोंकी गौरववृद्धिका यह भी एक कारण है।

मुल्क ठण्डा होनेके कारण अच्छे बन्द मकान और कपड़ोंपर यहाँवालोंका खर्च बहुत अधिक होता है। जीवनस्तर ऊँचा है, पर तुलनात्मक दृष्टिसे आमदनी और खर्चका अनुपात अपने यहाँके अनुपातसे अधिक ही है, इसीलिए खाने पीनेमें सुखी

रहनेपर भी यहाँका आदमी असन्तुष्ट ही रहता है। फिर भी लोगोंमें ईमानदारी बहुत अधिक है। हालैण्डके साथ व्यापार सम्बन्ध तो हम बढ़ा ही सकते हैं, पर यहाँकी जीवनप्रणालीके अच्छे पहलू हम अवश्य ले सकते हैं। यहाँकी जीवनप्रणाली और इस देशके इतिहासका बारीकीसे अध्ययन ३-४ सप्ताहकी दौड़ती यात्रासे नहीं हो सकता। दो दर्जन भारतीय छात्र यहाँ आजकल सरकारी वजीफोंपर आये हैं, पर सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टिसे इनमेंसे सम्भवतः कोई भी इस देशका अध्ययन करनेके लिए नहीं आया है। इस कामके लिए अधिकसे अधिक छात्र यहाँ आने चाहिये। हालैण्डसे हमारा व्यापार-सम्बन्ध तो बढ़ेगा ही, पर कला-संस्कृतिका सम्बन्ध भी व्यापार-सम्बन्धके साथ बढ़ना आवश्यक है।

जय हालैण्ड, जय हिन्द !